मनुष्य के लिये परमेश्वर का संदेश

भाग दो

लेखक
जॉन स्टेसी

अनुवादक
सनी डेविड

प्रकाशक:
मसीह की कलीसिया
पोस्ट बॉक्स 3815
नई दिल्ली –110049

God's Message for Man Today
Vol. 2

By John Stacy

Translation in Hindi
By Sunny David

मुद्रक
प्रिन्ट इन्डिया
मायापुरी
नई दिल्ली–64

परिचय

न केवल परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है, परन्तु उसने अपनी इच्छा को भी मनुष्य के लिये प्रकट किया है। परमेश्वर जानता है, कि मनुष्य अपने पापों के कारण जगत में खोया हुआ है, उसके पास भविष्य के लिये कोई आशा नहीं है। वह स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने की इच्छा तो रखता है, पर यह नहीं जानता कि परमेश्वर के पास वह कैसे पहुंच सकता है। सो परमेश्वर ने मनुष्य को अपने पास आने का मार्ग बताया है। बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है, उसमें परमेश्वर ने मनुष्य को एक संदेश दिया है। उसी संदेश पर भाई जॉन स्टेसी ने प्रस्तुत पुस्तक के द्वारा प्रकाश डाला है।

"मनुष्य के लिये परमेश्वर का संदेश"

एक ऐसी पुस्तक है, जिसमें अनेक छोटे–छोटे पाठों के द्वारा भाई स्टेसी ने यह बताने का प्रयत्न किया है, कि आज परमेश्वर मनुष्य से क्या चाहता है। कुछ समय पूर्व इस उपयोगी पुस्तक के पहले भाग का अनुवाद करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था, और अब इसी पुस्तक का यह दूसरा भाग भी तैयार देखकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हो रही है। मेरा विश्वास है, कि जिस प्रकार इस पुस्तक का पहला भाग पाठकों को बड़ा ही ज्ञानवर्द्धक तथा रोचक लगा था, उसी प्रकार यह दूसरा भाग भी उन्हें अवश्य ही पसंद आएगा।

सनी डेविड

सूचना !!

क्या आप जानते हैं, कि हरएक मंगलवार और बृहस्पतिवार और शुक्रवार को रात में 9 बजे तथा रविवार को दिन में 12.45 पर रेडियो श्रीलंका से आप प्रभु यीशु का सुसमाचार सुन सकते हैं? सुनना न भूलें।

कार्यक्रम : सत्य सुसमाचार
प्रस्तुतकर्त्ताः मसीह की कलीसिया
वक्ता : सनी डेविड

अधिक जानकारी तथा बाइबल अध्ययन के लिये इस पते पर लिखिए :

मसीह की कलीसिया
बॉक्स 3815
नई दिल्ली – 110049

विषय सूची

	पृष्ठ
क्या आप मरना जानते हैं ?	1
मसीहीयत के विरोधाभास	3
कभी न बदलनेवाला मसीह	5
नरक में कौन, कौन होगा?	8
लोभ का पाप	10
भटकनेवालों का विश्लेषण	12
एक आत्मा का महत्व	14
यीशु के साथ आप क्या करेंगे?	17
"हे प्रभु यीशु, आ"	19
ईश्वरवादी विकासवाद	21
क्या मसीह आपका प्रभु है?	23
शिष्यता का दाम	25
रवीवार की सुबह के मसीही	27
प्रार्थना में रुकावटें	29
मसीह का अनुसरण करना	31
विश्राम दिन	33
"बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार"(१)	35
"बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार"(२)	37
परमेश्वर के बारे में गलत धारणाएं	39
"लगभग मसीही"	41
प्रभु–भोज (१)	44
प्रभु–भोज (२)	46

"मसीह का बपतिस्मा" (१)	48
"मसीह का बपतिस्मा" (२)	50
"बपतिस्मा और यीशु का लोहू"	52
"खोजे का मन–परिवर्तन"	54
पौलुस का मसीही बनना	57
"आपने सुना होगा" (1)	59
"आपने सुना होगा" (2)	60
"आपने सुना होगा" (3)	62
"आपने सुना होगा" (4)	63
"आपने सुना होगा" (5)	65
"आपने सुना होगा" (6)	66
"आपने सुना होगा" (7)	68
"आपने सुना होगा" (8)	70
"आपने सुना होगा" (9)	71
"आपने सुना होगा" (10)	73
"आपने सुना होगा" (11)	74
"आपने सुना होगा" (12)	75
"आपने सुना होगा" (13)	77
"आपने सुना होगा" (14)	78
"आपने सुना होगा" (15)	79
"आपने सुना होगा" (16)	81
"आपने सुना होगा" (17)	82
"आपने सुना होगा" (18)	83
"आपने सुना होगा" (19)	85
"आपने सुना होगा" (20)	86
"आपने सुना होगा" (21)	88
"आपने सुना होगा" (22)	89
"आपने सुना होगा" (23)	90

"आपने सुना होगा" (24)	92
"आपने सुना होगा" (२५)	93
घमण्ड का पाप	95
झूठ का पाप	96
व्यभिचार का पाप	98
चरित्रनाशक पहनावा	99
विनाशकारी स्वार्थ	100
शराब और विनाश	102
विनाशकारी आलस	103
गन्दा साहित्य	105
मदिरापान	106
जुआ और विनाश	107
ईर्ष्या का पाप	109

क्या आप मरना जानते हैं?

यीशु मसीह की मृत्यु अन्य सभी लोगों की मृत्यु से कई प्रकार से भिन्न थी। तौभी उसकी मृत्यु हमारी अपनी मृत्यु के लिये एक दृष्टान्त बन सकती है।

१ पतरस २:२१ के अनुसार,"मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।" इसलिये जो बातें हमारे प्रभु की मृत्यु के साथ जुड़ी हुई हैं उनका हमें अवश्य ही अनुसरण करना चाहिए। सबसे पहली बात इस विषय में हम यह देखते हैं कि यीशु जानता था कि मृत्यु सभी मनुष्यों के लिये है और वह स्वयं भी एक दिन उसका सामना करेगा। यूहन्ना १०:११ से हम देखते हैं कि यीशु अपनी आनेवाली मृत्यु से परिचित था, उसने कहा था,"अच्छा चरवाहा मैं हूं, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।" यीशु ने अपनी मृत्यु के विचार को अपने से कभी अलग नहीं किया था। उसने अपनी मौत की तैयारी की थी। ऐसे ही हमें भी, इस जीवन के रहते, उस अनन्तकाल में प्रवेश करने के लिये अपने आप को तैयार करना चाहिए।

दूसरी बात हम यह देखते हैं, कि यीशु ने अपने स्वर्गीय पिता की संगति में रहकर अपने आप को मृत्यु के लिये तैयार किया था। यीशु अकसर प्रार्थना करके अपने पिता के साथ समय व्यतीत किया करता था। लूका ६:१२ में उसके बारे में हम यूं पढ़ते हैं: "और उन दिनों में वह पहाड़ पर प्रार्थना करने को निकला, और परमेश्वर से प्रार्थना करने में सारी रात बिताई।" जब वह क्रूस के ऊपर था तो वह अपने पिता के पास वापस जाने की प्रतीक्षा में था। लूका २३:४६ के अनुसार, उसने कहा था, "हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।" ऐसे ही हम भी आज प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की संगति में रहकर अपने आप को मृत्यु के लिये तैयार कर सकते हैं।

तीसरे, परमेश्वर की इच्छा को सीखकर और उस पर चलकर यीशु ने अपने आप को मृत्यु के लिये तैयार किया था। यूहन्ना ४:३४ के अनुसार, यीशु ने कहा था, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेवाले की इच्छा के अनुसार चलूं और उसका काम पूरा करुं।" यूहन्ना ६:३८ में, उसने कहा था, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।" आनेवाले संसार में प्रवेश करने के लिये परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपने आप को तैयार करना बड़ा ही आवश्यक है। मत्ती ७:२१ के अनुसार, यीशु ने कहा था, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है उनमें से हर एक स्वर्ग के रज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

क्या हम अपने, स्वर्गीय पिता की इच्छा को सीखकर और उस पर चलकर अपनी मृत्यु के दिन के लिये अपने आप को तैयार कर रहे हैं?

चौथे स्थान पर, यीशु ने परमेश्वर के वचन को इस्तेमाल में लाकर अपने आप को मरने के लिये तैयार किया था। यीशु पवित्रशास्त्र से परिचित था और उसे इस्तेमाल में लाता था। जब उसकी परीक्षा हुई थी तो शैतान के वारों को विफल करने के लिये उसने तीन बार परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल किया था। जब शैतान ने यीशु से कहा था कि वह अपनी शक्ति से पत्थरों को रोटी में परिवर्तित कर सकता है, तो मत्ती ४:४ के अनुसार यीशु ने शैतान से कहा था,"कि लिखा है, (व्यवस्था–विवरण ८:३), कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" जब हमारा प्रभु क्रूस के ऊपर लटका हुआ था, तो यूहन्ना १९:२८में इस प्रकार लिखा हुआ है ,"इसके बाद यीशु ने यह जानकर कि अब सब कुछ हो चुका है, इसलिये कि पवित्रशास्त्र की बात पूरी हो कहा, मैं पियासा हूं।" पवित्रशास्त्र में लिखी बातें मरते समय भी मसीह के मन में थी। इस प्रकार हम देखते हैं, कि हमारे प्रभु ने अपने जीवन में और अपनी मृत्यु के समय भी पवित्रशास्त्र में लिखी बातों का इस्तेमाल किया था।

अब इब्रानियों ६:२७ में लिखी इस बात से हम अपने इस पाठ को अंत करेंगे, ". . . मनुष्यों के लिये एक बार मरना . . . नियुक्त है।" क्या आप उस नियुक्ति के लिये तैयार हैं? यदि आप यीशु के द्वारा मरना सीख लेंगे तो आप सचमुच में तैयार हो जाएंगे।

मसीहीयत के विरोधाभास

विरोधाभास का तात्पर्य ऐसी बात से है जो परस्पर–विरोधी प्रतीत होती है। अर्थात एक ऐसी बात जो सुनने में सही नहीं लगती है। वह सच तो होती है, पर विचित्र सी लगती है। जैसे कि मसीहीयत और मसीही जीवन कुछ लोगों को विचित्र से लगते हैं। जो लोग मसीही नहीं हैं उन्हें इनमें कोई सही बात नज़र नहीं आती। १ कुरिन्थियों १:१८ में पौलुस लिखकर कहता है कि,"क्रूस की कथा नाश होनेवालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पानेवालों के निकट परमेश्वर की सामर्थ है।" अब हम मसीहीयत में पाई जानेवाली कुछ ऐसी विरोधाभासी बातों पर विचार करेंगे जो उन लोगों को, जो मसीह में नहीं हैं, मूर्खता की बातें प्रतीत होती हैं।

सबसे पहले, बाइबल में लिखा है, कि जीने के लिये पहले मरना आवश्यक है। जबकि संसार का दृष्टिकोण यह है, कि वर्तमान जीवन ही सब कुछ है और मरने के बाद जीवन का अन्त हो जाएगा। यूहन्ना १२:२४ में यीशु ने कहा था, "कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परन्तु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।" केवल मसीह के सुसमाचार को मानने के द्वारा ही मनुष्य पाप के लिये मरता है। रोमियों ६:११ में पौलुस कहता है कि ,"ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में जीवित समझो।" किन्तु, सबसे विचित्र बात वह है जो यूहन्ना १२:२५ में यीशु ने कही थी, उसने कहा था कि ,"जो अपने प्राण को प्रिय जानता है, वह उसे खो देता है. . . "

एक दूसरी विरोधाभासी बात हमें बाइबल में यह मिलती है कि परमेश्वर से प्रेम रखने के लिये हमें औरों को अप्रिय जानना है। यीशु ने लूका १४:२६ में कहा था, कि "यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़के– बालों और भाईयों और बहनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।" यहां अप्रिय जानने का तात्पर्य प्रेम कम करने से है। अर्थात्, हमारे जीवनों में परमेश्वर का स्थान सबसे पहला होना चाहिए। तभी हम वास्त्व में उस से प्रेम रखेंगे। यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखना चाहते हैं तो हमें पाप से बैर रखना होगा। पौलुस, रोमियों १२:६ में कहता है,"बुराई से घृणा करो. . . "

तीसरे स्थान पर हम यह देखते हैं कि सच्ची प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये हमें मसीह के लिये दुख उठाना आवश्यक है। याकूब १:२,३ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं,"हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परिक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।" समस्याएं मसीही लोगों के जीवनों को और भी खुशनुमा बना देती हैं, क्योंकि उनके द्वारा हम परमेश्वर के और भी अधिक समीप आ जाते हैं। उनके द्वारा हमारे जीवनों में पाई जानेवाली अशुद्धता तथा गन्दगी दूर हो सकती है और हमें उस प्रकार के मसीही बनने का अवसर मिलता है जैसा कि हमें वास्तव में होना चाहिए।

ऐसे ही, लड़ने से ही मसीही जीवन में सच्ची शांति आ सकती है। हम मसीह के साथ मिलकर शैतान से लड़ रहे हैं। तीमुथियुस से पौलुस ने, १ तीमुथियुस १:१८ में, कहा था कि "मैं यह आज्ञा सौंपता हूं, कि तू उन के अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रह।" ऐसे ही १ तीमुथियुस ६:१२ में उसने कहा था कि ,"विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ और उस अनन्त जीवन को धर ले. . . " याकूब ४:७में लिखा है, ". . .. शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे सामने से भाग निकलेगा।" सो यदि हम सच्ची शांति चाहते हैं तो हमें परमेश्वर के लोगों की सेना में भर्ती होकर अपने उद्धार के कप्तान की आज्ञा मानकर उसके पीछे चलना चाहिए। शांति

के लिये हमें लड़ने की आवश्यकता है ।

क्या आप पाप के लिये मर चुके हैं? या आप पाप में मर रहे हैं? क्या आप मसीह के सामने अपने परिवार के जनों को अप्रिय समझते हैं? क्या आप पाप से घृणा करते हैं? क्या आप मसीह के लिये दुख उठाते हैं? क्या आप लड़ रहे हैं?

जब प्रेरितों के ऊपर पवित्रात्मा आया था तो उस से सामर्थ पाकर उन्होंने उन लोगों की भाषाओं में उन से बातें की थीं जो उस समय यरुशलेम में मौजूद थे । उनका उपदेश साधारण था । उन्होंने उन लोगों से कहा था कि जिस मसीह को उन्होंने क्रूस पर चढ़ाया था वह, उनके भविष्यद्वक्ताओं के कथनानुसार, अभी भी जीवित है । यह सुनकर उन्होंने अपने आपको दोषी अनुभव किया था, और उन्होंने प्रेरितों से पूछा था कि "हे भाइयो, हम क्या करें?"

जो वे कर चुके थे उसे तो वे नहीं मिटा सकते थे, लेकिन पतरस ने उनसे कहा कि वे अपना-अपना मन फिराएं और अपने अविश्वास को छोड़कर मसीह का विरोध करने के विपरीत उसमें विश्वास लाएं और बपतिस्मा लें । और उसी दिन लगभग तीन हज़ार लोग बपतिस्मा लेकर उन में अर्थात प्रेरितों के साथ मिल गए ।

कभी न बदलनेवाला मसीह

नए नियम में पाई जानेवाली इब्रानियों नाम की पुस्तक को लगभग ई.स. ६५-६८ में लिखा गया था । यह वह समय था जबकि रोमी साम्राज्य राजनीति तथा धर्म के दृष्टिकोण से बड़े ही संकट से होकर गुज़र रहा था । यहूदी और रोमी लोग आपस में एक दूसरे के शत्रु थे । दूसरी और यहूदी रोमियों को मसीही लोगों के विरोध में भड़का रहे थे । इन्हीं परिस्थितियों में इब्रानियों १३:८ में पाई जानेवाली इस बात को लिखा गया था कि, 'यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है ।" मसीह कभी

बदलता नहीं। जो लोग उस में विश्वास करते हैं। उनके लिए ये कितने सान्तवनापूर्ण शब्द हैं। इसी सम्बन्ध में, कि मसीह कभी बदलता नहीं, अब हम कुछ बातों पर विचार करेंगे।

सबसे पहले, हम इस सम्बन्ध में यह देखते हैं, कि धार्मिक गलतियों के प्रति मसीह अपने व्यवहार में नहीं बदलता। मत्ती १५:३ में हम पढ़ते हैं कि फरीसियों और शास्त्रियों से मसीह ने कहा था "कि तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?" मरकुस ७:८ में यीशु ने कहा था,"क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।" फरीसियों से ही मरकुस ७:१३ में यीशु ने कहा था, कि तुम अपनी रीतियों से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो।" फिर, मरकुस ७:७ में उसने कहा था कि "ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" इसी प्रकार न्याय के दिन भी मसीह का व्यवहार गलत बातों के प्रति नहीं बदलेगा। मत्ती ७:२१ में उसने कहा था,"जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।"

फिर हम यह बात भी देखते हैं कि मनुष्य को पाप से बचाने में भी मसीह नहीं बदलता। यीशु ने अपनी ओर से मनुष्य को बचाने के लिये कोई कमी नहीं रखी है। मनुष्य स्वयं अपनी ही गलती से पाप में नाश होता है।

यूहन्ना ५:४० में यीशु ने कहा था,"फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास नहीं आना चाहते।" पहली शताब्दि में यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति को बचाया था जो एक बहुत बड़ा पापी था। पौलुस १ तीमुथियुस १:१५ में कहता है कि "यह बात सच है और हर प्रकार से मानने के योग्य है, कि मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने को जगत में आया है, जिन में सबसे बड़ा मैं हूं।" जैसे कि उस समय मसीह पौलुस जैसे व्यक्ति का उद्धार कर सकता था ऐसे ही आज भी वह सब लोगों का उद्धार कर सकता है।

तीसरी बात इस विषय में हम यह देखते हैं, कि मसीह पाप

में खोए हुए लोगों को बचाने के लिये कभी नहीं बदलता। पतरस अपनी पत्री, २ पतरस ३:८ में कहता है कि,"प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कितने लोग समझते हैं, पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नाश हो, बरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।"

चौथे स्थान पर, मसीह विश्वास योग्य होने में नहीं बदलता। माताएं कभी–कभी अपने बच्चों को भूल जाती हैं। पति और पत्नी भी अलग हो जाते हैं पर जो लोग मसीह के प्रेम में बने रहते हैं मसीह उनके प्रति सदा विश्वासयोग्य बना रहता है। पौलुस, २तीमुथियुस २:१३ में इस प्रकार कहता है, "यदि हम अविश्वासी भी हों तौभी वह विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इन्कार नहीं कर सकता।" मसीह अपनी प्रतिज्ञाओं को हमेशा पूरा करेगा।

पांचवें, मसीह अपनी उद्धार की योजना के बारे में नहीं बदलता। यीशु ने आरम्भ में अपने चेलों से, मत्ती २८:१९, २० में, कहा था, "इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें, जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" ये सब बातें जगत के अन्त तक के लिये हैं। ये उसी प्रकार नहीं बदल सकतीं जैसे कि मसीह नहीं बदल सकता।

अंत में इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं कि जो लोग परमेश्वर के वचन को मानने में लापरवाही करते हैं मसीह उनके प्रति अपने व्यवहार में भी नहीं बदलता। मत्ती २३:२३ में यीशु ने यूं कहा था, "हे कपटी शास्त्रियो और फ़रीसियो, तुम पर हाय, तुम पोदीने और सौंफ और ज़ीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है, चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते।" न्याय के दिन वह बहुतेरे लोगों से यूं कहेगा,जैसा कि मत्ती २५:४५ में लिखा है,". . . कि तुमने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।"

नरक में कौन, कौन होगा?

प्रत्येक वर्ष एक पुस्तक का प्रकाशन होता है, जिसमें यह लिखा होता है कि उस वर्ष में कौन, कौन है, अर्थात कौन किस ओहदे पर है या किसने कोई विशेष कार्य किया है। इस "वर्ष की पुस्तक" में ऐसे–ऐसे विशेष लोगों के नाम लिखे होते हैं जिन्होंने किसी क्षेत्र में विशेष नाम कमाया होता है। किन्तु क्या आप जानते हैं, कि शैतान के पास भी एक ऐसी सूची है जिसमें लिखा है कि नरक में कौन, कौन होगा। प्रकाशितवाक्य २१:८ में इस सूची का वर्णन करके बाइबल कहती है,"पर डरपोकों, और अविश्वासियों और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारियों और टोन्हों और मूर्ति पूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।" अब यह पढ़कर शायद हमें ऐसा अनुभव हो कि निश्चय ही शैतान की इस सूची में हमारा नाम नहीं होगा। परन्तु ज़रा ध्यान से देखें!

सबसे पहले यहां वर्णन हुआ है "डरपोकों" का। इस शब्द का यहां तात्पर्य "कायरों" से है। पहली शताब्दि के अन्तिम दिनों में मसीही लोगों के ऊपर बड़े ही ज़बरदस्त अत्याचार हो रहे थे। उन पर यह ज़ोर डाला जा रहा था कि वे कैसर अर्थात् रोम के सम्राट को प्रभु और परमेश्वर मानें और इस प्रकार मसीह का इन्कार करें। पौलुस ने, उस समय १ तीमुथियुस २:१२ में लिखकर कहा था,"यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे: यदि हम उसका इन्कार करेंगे तो वह भी हमारा इन्कार करेगा।" उस समय बहुत से ऐसे मसीही थे जो कायर थे और मसीह के प्रति वफ़ादार नहीं थे। मसीही जीवन को बाइबल में एक संघर्षपूर्ण जीवन बताया गया है, और मसीही लोगों को सिपाही कहकर सम्बोधित किया गया है। पौलुस २ तीमुथियुस २:३ और ४ पदों में यूं कहता है: "मसीह यीशु के अच्छे योद्धा की नाईं मेरे

साथ दुख उठा। जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये जाता है कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, और अपने आपको संसार के कामों में नहीं फंसाता।" सो यदि आप यीशु का अनुरण करना चाहते हैं, तो वह चाहता है, कि आप उसके साथ लड़ाई के मैदान में उतरें। वह ऐसे लोगों को चाहता है जो केवल तमाशा देखनेवाले न हों पर मैदान में आकर उसके साथ मिलकर लड़ें। आप कहां हैं?

दूसरा नाम इस सूची में है "अन्धविश्वासियों" का। ये वे लोग थे जो मसीह पर विश्वास नहीं करते थे। पर उनमें वे मसीही लोग भी शामिल थे जिनका विश्वास मसीह में कमज़ोर था। ऐसे लोगों का वर्णन करके पौलुस २ तीमुथियुस ३:५ में कहता है कि "वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे।" जबकि यीशु उन से कहता है कि वे मैदान में आकर युद्ध करें, वे कहते हैं, कि हम नहीं कर सकते। उन्हें मसीह पर भरोसा नहीं है। क्या यह चित्र आपका है?

तीसरे स्थान पर नाम है "घिनौनों" का। इस शब्द का तात्पर्य "अपवित्र" से है। प्रकाशितवाक्य २१:२६ में यूहन्ना कहता है, "और उसमें (स्वर्ग में) कोई अपवित्र वस्तु. . . प्रवेश न करेगी।" याकूब १:२७ में लिखा है, "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है, कि . . . अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।" क्या आपके वस्त्र साफ़ हैं?

चौथा शब्द इस सूची में "हत्यारों" का है। पर शायद आप कहें कि आप कोई हत्या कभी नहीं कर सकते। किन्तु १ यूहन्ना ३:१५ में यूं लिखा है, " जो कोई अपने भाई से बैर रखता है, वह हत्यारा है, और तुम जानते हो, कि किसी हत्यारे में अनन्त जीवन नहीं रहता।" क्या आप किसी से बैर रखते हैं?

फिर पांचवां शब्द है "व्यभिचारियों" इसका तात्पर्य ऐसे लोगों से है जो वैवाहिक जीवन के अतिरिक्त किसी स्त्री या पुरुष से सम्बन्ध रखते हैं। पर शायद आप कहें कि आप में ऐसा कोई दोष नहीं है। किन्तु, मत्ती ५:२८ में यीशु ने कहा था, "कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।"

छठा शब्द सूची में है "टोन्हों", ये वे लोग हैं जो जादू–मन्त्र आदि करके लोगों को धोखा देते हैं।

सातवें स्थान पर नाम है "मूर्तिपूजकों" का। बहुतेरे मसीही कहलानेवाले लोग भी आज विभिन्न प्रकार की मूर्तों के सामने झुकते हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों ३:५ में कहा था कि "लोभ मूर्तिपूजा के बराबर है।" क्या आप भी इस प्रकार की मूर्ति पूजा के लिए दोषी हैं?

सूची में अंतिम शब्द है,"झूठों।" सुलैमान ने नीतिवचन १२:२२ में लिखकर कहा था कि "झूठ बोलनेवाले होठों से परमेश्वर घृणा करता है।" न केवल अपने होठों से ही परन्तु अपने जीवनों से भी हम झूठ बोल सकते हैं। तीतुस १:१६ में लिखा है, "वे कहते हैं, कि हम परमेश्वर को जानते हैं: पर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं. . . " क्या आप झूठ बोलते हैं?

जितने भी लोगों के बारे में हमने यहां देखा है, ये सब शैतान की सूची में हैं, और यदि वे अपना मन नहीं फिराएंगे,तो हमेशा के लिये नरक में प्रवेश करेंगे।

लोभ का पाप

लोभ का अर्थ है "किसी चीज़ को प्राप्त करने की इच्छा करना, अभिलाषा या लालच करना।" बुरी लालसा और अभिलाषा के कारण किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिये लोग बड़े–बड़े अपराध करते हैं। और यहां तक कि रुपए के लोभ में पड़कर कुछ लोग अपने शरीरों को भी बेच देते हैं। यीशु ने लूका १२:१५ में कहा था कि "चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो, क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पति की बहुतायत से नहीं होता।" लोभ से बचने की हमें आवश्यकता क्यों है?

सबसे पहले इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि लोभ मनुष्य के मन को परमेश्वर से दूर कर देता है। भजन १०:३ में हम यूं

पढ़ते हैं कि "लोभी परमेश्वर को त्याग देता है और उसका तिरस्कार करता है।" कुलुस्सियों ३:५ में पौलुस कहता है,"इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो, जो पृथ्वी पर हैं. . . और लोभ को जो मूर्ति पूजा के बराबर है।" आज अनेकों लोग इस प्रकार की मूर्ति पूजा में लौलीन हैं।

दूसरे, लोभ मनुष्य के मन को ऐसा बना देता है कि वह सही और गलत में अन्तर नहीं देख पाता। लूका १२:१६ तथा बीस पदों में हम उस धनवान के बारे में पढ़ते हैं जो लोभ में इतना लीन हो गया था कि वह यह भी नहीं देख पाया कि वास्तव में किस वस्तु का मूल्य अधिक है। और हम देखते हैं कि उसका अन्त कैसा भयानक हुआ था। वहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं, उसने कहा कि मैं "अपना सब अन्न सम्पति रखूंगा और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षो के लिये बहुत सम्पति रखी है चैन कर, खा-पी सुख से रह। परन्तु, परमेश्वर ने उससे कहा हे मूर्ख इसी रात को तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा, तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?"

लोभ, तीसरे स्थान पर, मनुष्य के भीतर सेवा भावना को समाप्त कर देता है। लूका के सोलह अध्याय में हम उस धनवान के बारे में पढ़ते हैं जिस के द्वार के पास कुछ लोग एक कंगाल को, जो घावों से भरा था, लाकर बैठा देते थे। वह कंगाल केवल उन टुकड़ों को पाने की लालसा में बैठा रहता था जो उस धनवान की मेज़ पर से गिरते या बचते थे। परन्तु धनवान को उस कंगाल की कभी कोई चिन्ता नहीं थी। पर जब वे दोनों मर गए तो धनवान के विषय में लूका १६:२४ में यूं लिखा है, "और उसने पुकारकर कहा, हे पिता इब्राहीम, मुझ पर दया करके लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडी करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूं।" ऐसे मसीही हैं, जिनके पास बहुत कुछ बहुतायत से है – समय, योग्यताएं, धन, इत्यादि। पर लोभ के कारण वे उनका सदुपयोग नहीं कर पाते। इस पाप पूर्ण संसार में अपनी सेवा को न देकर वे स्वयं अपने आप को और परमेश्वर को लूट रहे हैं। जहां तक धन का प्रश्न है, अनेकों लोग जो अपने आप को मसीही कहते

हैं वास्तव में परमेश्वर पर पूरा भरोसा नहीं रखते। दाऊद ने भजन ३७:२५ में कहा था कि "मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूं, परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ और न उसके वंश को टुकड़े मांगते देखा है।" क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं? तो फिर जो आप के पास है उसका इस्तेमाल प्रभू की सेवा के लिये क्यों नहीं करते?

और अन्त में, हम यह देखते हैं, कि लोभ के कारण मनुष्य मसीह के पीछे नहीं चल सकता। मत्ती १९ अध्याय में हम एक ऐसे ही व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं जो एक बार यीशु के पास यह जानने के लिये आया था कि अनन्त जीवन पाने के लिये उसे क्या करना चाहिए ? यीशु ने मत्ती १९:२१–२२ में उससे यूं कहा था,"यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा अपना माल बेचकर कंगालों को दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और आकर मेरे पीछे होले। परन्तु वह जवान यह बात सुनकर उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।" क्या जगत की कोई ऐसी नाशमान वस्तु है जिसके कारण आप यीशु के पीछे पूर्ण रुप से नहीं चल रहे हैं?

भटकनेवालों का विश्लेषण

बाइबल के पुराने नियम में "भटक जाना" शब्द लगभग सोलह बार इस्तेमाल हुआ है। इसका अर्थ है "सही मार्ग को छोड़कर ग़लत मार्ग पर चले जाना।" जिस प्रकार इसराएली लोग परमेश्वर की वाचा के आधीन थे, पर उसकी वाचा का उल्लंघन करके वे परमेश्वर से अलग हो गए थे। ऐसे ही आज बहुतेरे मसीही लोग कई बार उस वाचा का उल्लंघन करते हैं जिसे उन्होंने मसीह के साथ उस समय बांधा था जब उन्होंने उसके सुसमाचार को माना था। आज अनेक ऐसे कारण हैं जिनके फ़लस्वरुप परमेश्वर के लोग उससे दूर जा रहे हैं। कुछ लोग धार्मिक गलतियों के शिकार हो जाते हैं, कुछ अविश्वास में फंस जाते हैं, तो कुछ पाप और बुराई के कारण परमेश्वर से दूर हो जाते हैं। वे एक आत्मिक

रोग के शिकार हो जाते हैं। इसी सम्बन्ध में इस समय हम देखेंगे।

आत्मिक भटकाव से पूर्व कुछ लक्ष्ण दिखाई देते है। सर्वप्रथम, मसीही जीवन का आनन्द समाप्त हो जाता है। फिलिप्पयों ४:४ में बाइबल कहती है:"प्रभु में सदा आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो।"

दूसरे, आराधना सभाओं में आना कम हो जाता है। दाऊद ने भजन १२२:१ में कहा था, कि "जब लोगों ने मुझ से कहा, कि हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं आनन्दित हुआ।"

तीसरे स्थान पर, ईश्वर–भक्ति इकहरे मन से नहीं हो पाती। यीशु ने मत्ती ६:२४ में कहा था कि "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता।" बहुतेरे लोग परमेश्वर और शैतान की एक साथ सेवा करना चाहते हैं। परमेश्वर के मार्ग से दूर होने का एक चौथा लक्षण यह होता है कि मनुष्य उन बुराईयों की तरफ फिर से अकृषित होने लगता है जिन्हें उस ने उस समय त्याग दिया था जब उस ने मसीह के सुसमाचार को माना था।

जिन कारणों से मनुष्य परमेश्वर के मार्ग से दूर होने लगता है, उनमें पहला है, गलत तरह के लोगों की संगति करना। पौलुस ने १ कुरिन्थियों १५:३३ में कहा था कि "बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।" कुछ लोग अपने विश्वास में भी कमज़ोर होते हैं। कई बार लोग अपने अन्य मसीही भाइयों के साथ रहते हुए तो मज़बूत होते है, पर उन से अलग होकर कमज़ोर हो जाते हैं। ऐसे लोगों को चाहिए कि वे यीशु के चेलों की तरह यह कहें, कि हे प्रभु तू "हमारा विश्वास बढ़ा।"लूका १७:५। फिर, कई बार सुस्ती के कारण भी लोग परमेश्वर से दूर होने लगते हैं। लोग एक ही दिन में परमेश्वर से दूर नहीं हो जाते, पर धीरे–धीरे ऐसा होता है। इसका आरम्भ प्रतिदिन की प्रार्थना तथा बाइबल अध्ययन में ढील देने से हो सकता है। फिर, उपासना सभाओं में जाने का मन नहीं करता। और धीरे–धीरे यह बात एक भयंकर आग का सा रुप धारण कर लेती है, जिसे बुझाया नहीं जा सकता। याकूब ४:१७ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं,"इसलिये जो कोई भलाई करना जानता है, और नहीं करता, उसके लिये यह पाप है।"

अब हम देखेंगे, कि परमेश्वर से दूर हो जाने में क्या ख़तरा है। सबसे पहले, इसके कारण इन्सान अयोग्य बन जाता है। यीशु ने, लूका ८:६२ में कहा था कि,"जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं।" दूसरे, जीवन की पुस्तक में से उस मनुष्य का नाम कट जाता है। और तीसरे, मसीह की देह (कलीसिया) का एक अंग बेकार हो जाता है, प्रभु का एक सेवक उस से अलग हो जाता है, और परमेश्वर के परिवार का एक सदस्य उससे दूर हो जाता है। ऐसे ही अनेक अन्य बुरे परिणामों के साथ–साथ सबसे बुरा परिणाम यह होता है, कि मनुष्य अपनी आत्मा को खो देता है।

सो इस प्रकार हमने यह देखा है, कि परमेश्वर से फिर जाने के क्या लक्षण हैं, उसके क्या कारण हैं और खतरे हैं। किन्तु अब हम इस प्रश्न पर विचार करें, क इसका ईलाज क्या है? इसका ईलाज हम उस पत्री में पढ़ते हैं जिसे यीशु ने इफिसुस की कलीसिया के नाम लिखवाया था। प्रकाशितवाक्य २:५ में उसने उस से यूं कहा था,"सो चेत कर, कि तू कहा से गिरा है, और मन फिरा और पहले के से काम कर, और यदि तू मन न फिराएगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरी दीवट को उस स्थान से हटा दूंगा।" केवल मन फिराकर वापस लौटने से ही इसका ईलाज हो सकता है।

एक आत्मा का महत्व

आज हम एक ऐसे समय में रहते हैं जिसमें शरीर को आत्मा से भी अधिक महत्व दिया जाता है। यह एक ऐसा युग है जिसमें शारीरिक सुविधाओं पर अत्याधिक ध्यान दिया जाता है। शरीर की ओर बहुत अधिक ध्यान देने के कारण मनुष्य अपनी आत्मा के महत्व को भूल चुका है। शैतान ने इन्सान की आंखों पर ऐसा परदा डाल रखा है, कि वह अपनी आत्मा के महत्व को देख ही नहीं पाता। पौलुस ने २ कुरिन्थियों ४:४ में कहा था ,"और न

अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरुप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके ।" शैतान अर्थात इस संसार का ईश्वर इस बात का पूरा प्रयत्न कर रहा है कि पृथ्वी पर लोग अपनी आत्माओं के विशाल महत्व को न पहचान पाएं ।

एक आत्मा के विशाल महत्व को सबसे पहले इस बात में देखा जा सकता है कि उसे परमेश्वर ने बनाया है । उत्पत्ति १:२७ में लिखा है,"तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरुप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरुप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की ।" क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने स्वयं अपनी ही समानता पर बनाया था इसलिये मनुष्य पृथ्वी पर सभी अन्य प्राणियों से भिन्न और उत्तम है । कई बार लोग किसी प्रसिद्ध कारीगर की बनाई किसी वस्तु को प्राप्त करके अपने पास रखना चाहते हैं । दो-तीन सौ वर्ष पुरानी किसी कलाकृति को प्राप्त करने के लिये वे ढेर सारा रुपया खर्च कर देते हैं । तौभी बहुत ही थोड़े लोग इस बात को समझ पाते हैं, कि उनकी आत्मा को सबसे महान कारीगर ने परमेश्वर के स्वरुप पर अनन्तकाल के लिये बनाया था ।

दूसरी बात यह है, कि बाइबल में शरीर से भी अधिक बल आत्मा पर दिया गया है । यीशु ने मत्ती १०:२८ में इस प्रकार कहा था,"जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना, पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है । पौलुस ने १ तीमुथियुस ४:८ में कहा था, कि "देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है ।"

एक अन्य स्थान पर, यीशु ने कहा था कि एक आत्मा का महत्व सारे जगत के महत्व से भी बढ़कर है । मत्ती १६:२६ में यीशु ने कहा था:"यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? यदि मनुष्य को सारा जगत भी मिल जाए तौभी उसे संतोष नहीं मिलेगा । सुलैमान, जिसके पास जगत

का सब कुछ बहुतायत से था, अपने जीवन के अन्त में, सभोपदेशक १२:१३ में कहता है कि,"परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्त्तव्य यही है ।"

तीसरे, क्योंकि यीशु ने आपकी आत्मा को बचाने के लिये अपनी जान दी थी, इसलिये आपकी आत्मा बड़ी ही मूल्यवान है । परमेश्वर ने इस बात की प्रतीक्षा नहीं की, कि मनुष्य एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता को अनुभव करके उसे स्वंय पुकारे । पर उसने पहल करके मनुष्य को एक ऐसा मार्ग प्रदान किया जिसके द्वारा वह पाप के भयानक परिणाम से बचकर उद्धार पाए ।

क्या आपने इस बात पर कभी विचार करके देखा है, कि जब यीशु पहली बार अपने स्वर्गीय पिता को छोड़कर इस पृथ्वी पर आया था तो उसे कैसा अनुभव हुआ होगा? लूका १९:१० में यीशु ने कहा था, कि,"मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है ।" मसीह की मृत्यु यह दिखाती है कि एक भी आत्मा महत्वरहित नहीं है । फिर, बाइबल हमें यह सिखाती है कि हम अपनी आत्माओं को परमेश्वर को सौंप दें । पतरस ने यीशु के बारे में कहा था कि वह "अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था ।" (१ पतरस २:२३) । यीशु जब क्रूस पर था तो उसने, लूका २३:४६ में, कहा था कि,"हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं ।" फिर १ पतरस ४:१९ में पतरस ने कहा था, कि जो "परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए, अपने–अपने प्राण को विश्वास योग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें ।"

अंत में, सुलैमान के उस कथन को हम याद रखें, जो उसने सभोपदेशक १२:७ में कहा था, अर्थात् "तब मिट्टी ज्यों कि त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास, जिसे उसने दिया है, लौट जाएगी ।" आपकी आत्मा क्योंकि वापस परमेश्वर के पास चली जाएगी इसलिये यह इस बात का प्रमाण है कि आपकी आत्मा मूल्यवान है । मनुष्य की आत्मा के विशाल महत्व को इस बात से भी देखा जा सकता है कि यीशु ने कहा था, कि वह उसके रहने के लिये एक जगह तैयार करने जा रहा है । किन्तु, जो आत्माएं अपने पापों के साथ ही लौट जाएंगी उन्हें

परमेश्वर से दूर होकर अनन्तकाल के विनाश के दन्ड का सामना करना पड़ेगा ।

यीशु के साथ आप क्या करेंगे?

मत्ती २७:२२ में पीलातुस ने एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछा था । उसने कहा था "फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है क्या करुं?" उसके जीवन में एक ऐसा अवसर आया था जबकि उसे यीशु के बारे में कुछ निश्चय करना था । यह एक ऐसा प्रश्न है जिससे कोई भी ज़िम्मेदार व्यक्ति इसका जवाब दिये बिना नहीं बच सकता । यदि आप यीशु के बारे में गलत निश्चय करेंगे तो इस जीवन में और आनेवाले अनन्त जीवन में आप उन सब वस्तुओं की हानि उठाएंगे जो अमूल्य हैं । पर यदि आप यीशु के बारे में एक सही निश्चय करेंगे, तो आप उन अनेक आशीषों के, इस जीवन में और आनेवाले जीवन में, वारिस बनेंगे जो मनुष्य की समझ से परे हैं ।

हम शायद इस प्रश्न का उत्तर जानना चाहें, कि मनुष्य को यीशु के विषय में निश्चय करने की आवश्यकता क्यों है? इस जीवन में जैसा निश्चय आप यीशु के साथ करेंगे, उसी के आधार पर परमेश्वर आप को स्वीकार और अस्वीकार करेगा । यूहन्ना ३:१६ में हम यूं पढ़ते हैं:"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए ।" जो लोग मसीह को अस्वीकार करेंगे उन्हें परमेश्वर पिता भी अस्वीकार करेगा । एक और बात जो यीशु के विषय में निश्चय करने पर निर्भर करती है, यह है, जैसा कि यीशु ने यूहन्ना १४:६ में कहा था,"मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता ।" मसीह जीवन और सच्चाई का वह मार्ग है जिस के द्वारा हम परमेश्वर के पास जा सकते हैं । सो परमेश्वर हमें स्वीकार या अस्वीकार करेगा, और

क्या हम उसके राज्य में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाएंगे, यह सब इस बात पर निर्भर करता है क इस जीवन में हम यीशु के साथ क्या करते हैं।

कुछ बातें ऐसी हैं जो प्रत्येक व्यक्ति यीशु के साथ अवश्य करेगा चाहे वह उनके बारे में जानता है या नहीं और चाहे वह उसे माने या न माने। प्रत्येक व्यक्ति या तो मसीह को मानेगा या फिर उसे अस्वीकार करेगा। यीशु ने, यूहन्ना १२:४८ में कहा था, कि,"जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहरानेवाला तो एक है : अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा।" फिर, या तो हम उसे अपने दिल में आने देंगे या हम उसे बाहर रखेंगे। प्रकाशितवाक्य ३:२० में यीशु ने कहा था "देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं, यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करुंगा, और वह मेरे साथ।" हमें या तो उसे स्वीकार करना है या फिर हम उसका इन्कार करेंगे। क्योंकि मत्ती १०:३२–३३ में उसने कहा था, "जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूंगा। पर जो मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इंकार करुंगा।"

यदि हम यह देखें कि बाइबल में कुछ लोगों ने यीशु के साथ क्या किया था, तो इससे हमें यीशु के बारे में सही निश्चय करने में सहायता मिलेगी। यहूदा ने यीशु को पकड़वाया था। आज बहुतेरे लोग यहूदा की ही तरह यीशु को, शैतान के बहकावे में आकर, बेच रहे हैं। मरकुस १४ अध्याय में हम पतरस के बारे में पढ़ते हैं कि उसने तीन बार यीशु का खुलेआम इन्कार किया था। ऐंसे ही, आज कुछ लोग मसीही सिद्धान्तों पर समझौता करके और मसीह की आज्ञाओं की अवेहलना करके उसका इन्कार कर रहे हैं। पीलातुस, मत्ती २६ अध्याय में हम पढ़ते हैं, यीशु के बारे में कोई निश्चय नहीं करना चाहता था। पर हकीकत यह है कि हर एक व्यक्ति को उसके बारे में कोई न कोई निश्चय अवश्य ही करना पड़ेगा। अनिश्चित रहना उसका इन्कार करना

जैसा है । पीलातुस ने अपनी पूरी कोशिश की थी कि वह यीशु के बारे में कोई निश्चय करे, और अपने निश्चय को दूसरों के ऊपर छोड़कर उसने जानना चाहा था, कि "यीशु को जो मसीह कहलाता है, मैं क्या करुं?" क्या आप यहूदा की तरह हैं या पतरस की तरह, या फिर पीलातुस की तरह? किन्तु आप पौलुस की तरह बन सकते हैं । प्रेरितों २२:१–१६ ।

पौलुस कुरिन्थियों के नाम अपनी दूसरी पत्री में लिखकर कहता है कि एक दिन हम सबको मसीह के न्यायासन के सामने खड़ा होना पड़ेगा । क्या आपने यीशु के बारे में उचित निश्चय करके अपने आपको उसके सामने खड़े होने के लिये तैयार कर लिया है?

"हे प्रभु यीशु, आ"

शैतान ने पाप के द्वारा लोगों में ऐसा विश्वास पैदा कर दिया है कि जीवन ऐसे ही हमेशा चलता रहेगा । लोग इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं देना चाहते कि बाइबल कहती है, कि मसीह फिर वापस आएगा । यीशु ने मत्ती २४:३६ में स्वयं कहा था, कि "उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता ।" और फिर उसने कहा था, "इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा ।" (मत्ती २४:४४) । ऐसे ही मत्ती २५:१३ में यीशु ने यूं कहा था कि, "इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो और न उस घड़ी को ।" आरम्भ में मसीह की कलीसिया के लोग यीशु के दोबारा आने की प्रतीक्षा करते थे । बाइबल में उनके बारे में पढ़कर हम इस बात को स्पष्ट रुप में देखते हैं, कि मसीह के दोबारा आने के प्रति उनका व्यवहार बड़ा ही आशावादी था । ऐसा ही व्यवहार आज हमारा भी होना चाहिए । इस विषय में हमें हमेशा बड़ा ही सचेत रहना चाहिए कि यीशु कभी भी वापस आ

सकता है । आरम्भ में मसीही लोगों के बारे में हम इस प्रकार देखते हैं:

सबसे पहले, वे लोग मसीह के वापस आने की बाट जोह रहे थे ।

पौलुस ने १ थिस्सलुनीकियों ५:२ में कहा था,"कि जैसे रात को चोर आता है, वैसे ही प्रभु का दिन भी आनेवाला है ।" इसी अध्याय के छठे पद में उस ने कहा था कि,"इसलिये हम औरों की तरह सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें ।" पौलुस ने ही तीतुस को लिखकर इस प्रकार कहा था "और उस धन्य आशा की अर्थात अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की बाट जोहते रहें ।" (तीतुस २:१३) । क्या आप मसीह के आने की बाट जोह रहे हैं?

दूसरी बात उन आरम्भ के मसीही लोगों में हम यह पाते हैं, कि उनकी बड़ी ही इच्छा थी कि मसीह वापस आ जाए । १ कुरिन्थियों १६:२२ में हम पढ़ते हैं कि पौलुस ने कहा था कि "हमारा प्रभु आनेवाला है ।" प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य २२:२० में कहा था कि "हे प्रभु यीशु आ ।" क्या हम भी यह इच्छा रखते हैं कि प्रभु यीशु जल्दी वापस आ जाए । क्या हम उसके दोबारा आने के लिये प्रार्थना करते हैं? यदि आप को पता चल जाए कि मसीह आज ही वापस आनेवाला है, तो क्या आप अपने जीवन में कुछ परिवर्तन करना चाहेंगे ? उसके दोबारा आने के सम्बन्ध में लोगों के बीच दो प्रकार के व्यवहार होंगे । प्रकाशितवाक्य १:७ में हम यूं पढ़ते हैं: "देखो, वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी, बरन जिन्होंने उसे बेधा था, वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे । हां । आमीन । " किन्तु, यीशु के दोबारा आने के विषय में पौलुस ने थिस्सलुनिकीयों के नाम अपनी पत्री में लिखकर कहा था "सो इन बातों से एक—दूसरे को शान्ति दिया करो ।" (१ थिस्सलुनीकियों ४:१८) । मसीह के दोबारा आने पर आप की क्या प्रतिक्रिया होगी?

ईश्वरवादी विकासवाद

मसीही विश्वास को आज एक बहुत बड़ा ख़तरा बाइबल में विश्वास करनेवाले ऐसे लोगों से है जो ईश्वरवादी विकासवाद को मानते हैं।

ईश्वरवादी विकासवाद क्या है? इस धारणा के अनुसार,"मनुष्य की देह का विकास पशु से हुआ है, और उस देह में परमेश्वर ने कुछ समय बाद आत्मा को डाल दिया था, और इस प्रकार मनुष्य का आरम्भ हुआ था।"

बहुत से लोग कहते हैं, कि "क्या परमेश्वर मनुष्य को विकास के द्वारा नहीं ला सकता था?" फिर, इस बात पर बहस क्यों की जाए? किन्तु बाइबल इस विषय में क्या कहती है? क्या मनुष्य के विकास के बारे में बाइबल में कहीं कुछ मिलता है? क्या कुछ ऐसी ठोस बातें हैं जिनके द्वारा ईश्वरवादी विकासवाद को गलत सिद्ध किया जा सके?

इस सम्बध में हम बाइबल के कुछ ऐसे हवालों को देखना चाहेंगे जो ईश्वरवादी विकासवाद को गलत ठहराते हैं। उत्पत्ति १:१ में हम यूं पढ़ते हैं: "आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।" यह शब्द "सृष्टि की" इब्रानी के "बारा" शब्द का अनुवाद है, जिसका मूल अर्थ है "शून्य में से उत्पन्न करना।" तौभी, विकासवादी लोगों का कहना है कि तत्व तो सदा से ही विद्यमान है। जो लोग ईश्वरवादी विकासवाद का मत रखते हैं, उनका कहना है कि उत्पत्ति का प्रत्येक दिन भूवैज्ञानिक युग के समान है। और उनका ऐसा सोचना आवश्यक भी है, क्योंकि उनके मत को विज्ञान का सहारा मिलता है, जिसके अनुसार सारा जगत लाखों और करोड़ों वर्षों के विकास के बाद अस्तित्व में आया है। तौभी बाइबल में उत्पत्ति की पुस्तक के एक से तीन अध्यायों तक जब कभी भी "दिन" शब्द का उल्लेख हुआ है उसे इब्रानी भाषा के "यौम" शब्द से लिया गया है। इब्रानी भाषा में

लिखे गए पुराने नियम में सैंकड़ों बार इस शब्द का वर्णन हुआ है, और हर बार इसका तात्पर्य चौबीस घंटों के एक दिन से है।

निर्गमन २०:११ में हमें इस प्रकार मिलता है : "क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उन में हैं, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया. .. " और अब ध्यान दें निर्गमन ३१:१६ पर जहां मूसा ने इस प्रकार कहा था "सो इसराईली विश्राम दिन को माना करें, वरन पीढ़ी–पीढ़ी में उसको सदा की वाचा का विषय जानकर माना करें।" जिस बात को हम देखने का प्रयत्न कर रहे हैं वह यह है, कि विश्राम के दिन का तात्पर्य सृष्टि के अन्य दिनों की तरह चौबीस घंटों के एक दिन से था, न कि एक भूवैज्ञानिक काल से। यहां लेखक, मूसा चौबीस घन्टों के सामान्य दिन के बारे में कह रहा है। इसके अतिरिक्त, विश्राम–दिन को छः दिन में जगत कीं उत्पत्ति होने की स्मृति में विशेष ठहराया गया था। मूसा ने, उत्पत्ति २:१ में कहा था: "यों आकाश और पृथ्वी और उनकी सारी सेना का बनाना समाप्त हो गया।"

जबकि विकासवादी मत यह है कि संसार की सृष्टि अभी समाप्त नहीं हुई है, पर प्रत्येक वस्तु का विकास हो रहा है, और होता रहेगा।

उत्पत्ति ३:६:१३ में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार मनुष्य का पतन हुआ था । तब से लेकर मनुष्य और सम्पूर्ण सृष्टि का पतन होता ही जा रहा है। सारी वस्तुएं घटती ही जा रही हैं। पाप का परिणाम ऐसा विनाशकारी सिद्ध हुआ कि सारी सृष्टि उस से प्रभावित हो गई। यह बाइबल सिखाती है। तौभी विकासवादी लोगों का यह मत है कि सब वस्तुओं का सुधार और विकास हो रहा है, और पाप के द्वारा मनुष्य गिर–गिर कर सम्भल रहा है और उसका स्तर ऊंचा होता जा रहा है। विकासवाद को माननेवाले लोग पाप के कारण मनुष्य के पतन का इन्कार करते हैं और इस प्रकार वे मसीह और पापियों के लिये उसकी मृत्यु का भी इन्कार करते हैं। इसलिये, सच्चाई में, ईश्वरवादी विकासवादी मत गलत और बाइबल की शिक्षा के विरुद्ध और मसीही–विरोधी है।

इस झूठी शिक्षा के विरोध में ये कुछ ठोस तर्क हैं जिनका इन्कार नहीं किया जा सकता। अभी कुछ ही समय पूर्व एक बड़ा ही भयानक तथ्य जो सामने आया है वह यह है कि बहुत से नौजवान जो भविष्य में बाइबल के प्रचारक बनने की ट्रेनिंग ले रहे हैं ईश्वरवादी विकासवाद में विश्वास करते हैं। जो लोग बाइबल में विश्वास करते हैं और उसे परमेश्वर का वचन मानते हैं उन्हें सतर्क होने की आवश्यकता है और इस बात पर ध्यान देने की ज़रुरत है कि बाइबल में वर्णित सृष्टि के वर्णन को ही हर जगह सिखाया जाए, अन्यथा मसीही विश्वास अर्थहीन बन जाएगा।

यदि हम में से कोई यह कहे कि उत्पत्ति का वर्णन एक मनगढ़न्त किस्सा है, तो फिर बाइबल में लिखी सभी अन्य बातों के बारे में हम क्या कहेंगे? ईश्वरवादी विकासवाद कलीसिया के लिये हानिकारक है, और आत्मा के लिये विनाशक है। इसलिये शैतान की इस नाश करनेवाली शिक्षा के चंगुल में फंसने से बचें!

क्या मसीह आपका प्रभु है?

यीशु ने मत्ती १५:८ में कहा था "कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उन का मन मुझ से दूर रहता है।" यीशु उस समय लोगों के बीच में कपट को देख सकता था, और ऐसे ही आज भी वह जानता है कि लोगों के मनों में उसके बारे में क्या विचार हैं। इस में कोई संदेह नहीं कि आज लाखों लोग यीशु को परमेश्वर का पुत्र और मसीह मानते हैं। पर क्या वे उसे अपने जीवनों का प्रभु और स्वामी मानते हैं? क्या आप ऐसा मानते हैं ? ईमानदारी के साथ इस प्रश्न का उत्तर दें। पतरस ने १ पतरस ३:१५ में लिखकर कहा था कि "मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो।" क्या आपने ऐसा किया है? आईए, इस सम्बन्ध में देखें। बाइबल का नया नियम सर्वप्रथम यूनानी भाषा में लिखा गया था और उसमें प्रभु के लिये "कुरियोस"

शब्द का चार तरह से इस्तेमाल किया गया है । "कुरियोस" शब्द को जिन चार प्रकार से नए नियम में उपयोग में लाया गया है, उनका अर्थ समझ लेने से हमारे लिये यह स्पष्ट हो जाएगा, कि क्या यीशु वास्तव में हमारा प्रभु है ।

सबसे पहले, बाइबल में प्रभु का इस्तेमाल स्वामी के लिये किया गया है । यदि यीशु वास्तव में आप का प्रभु है, तो आप अपने जीवन में उसके स्वामित्व को अनुभव करेंगे । १ कुरिन्थियों ६:१६,२० में पौलुस ने कहा था कि,"क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है, और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो ।" सच्चाई यह है कि यदि हम वास्तव में मसीही हैं तो हमारा अपने ऊपर कोई अधिक़ार नहीं है, हम तो केवल अपने प्रभु के भंडारी हैं । सो आप अपनी देह को किस प्रकार इस्तेमाल करते हैं? क्या आप अपने ऊपर मसीह के स्वामित्व को ग्रहण करते हैं? यदि नहीं, तो मसीह आप का प्रभु नहीं है ।

दूसरे, बाइबल में प्रभु शब्द का इस्तेमाल दास और मालिक के सम्बंध के लिये किया गया है । यदि मसीह हमारा मालिक है तो वह हमारा प्रभु भी है । आपका मालिक कौन है? यीशु ने मत्ती ६:२४ में इस प्रकार कहा था, "कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता; क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते ।" आज आप किस की सेवा कर रहे हैं? क्या हम अपने आप को मसीह के दास और उसके सेवक के रुप में देखते हैं? २ कुरिन्थियों ४:५ में पौलुस कहता है, "कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं ।" यदि आप यीशु को अपना मालिक और अपने आपको उसका दास नहीं मानते, तो वह आपका प्रभु नहीं हो सकता ।

प्रभु शब्द का उपयोग बाइबल में कई जगह राजाओं के लिये भी किया गया है । क्या मसीह एक राजा के समान आपके मन में राज्य करता है? यूहना प्रकाशितवाक्य १:६ में इस प्रकार कहता है,"और हमें एक राज्य. बना दिया ।" वे सब जो मसीही हैं,

मिलकर मसीह का राज्य अर्थात उसकी कलीसिया हैं। यीशु ने मत्ती ६:३३ में कहा था कि,"पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो. . . " इस आज्ञा में इस बात को देखा जा सकता है कि हमें परमेश्वर और उसकी बातों को अपने जीवनों में सबसे पहला स्थान देना चाहिए। मसीह का स्थान हमारे जीवनों में एक राजा के समान होना चाहिए। यदि वह आप के लिये राजा नहीं है, तो वह आपका प्रभु भी नहीं हो सकता।

और अंत में हम यह देखते हैं, कि प्रभु शब्द को सम्मान देने के लिये इस्तेमाल किया गया है। क्या आप प्रभु यीशु का वास्तव में आदर करते हैं? १ कुरिन्थियों १०:३१ में पौलुस ने कहा था कि "सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।" यदि आप प्रभु का आदर करते हैं तो आप ऐसा ही करेंगे। फिर, कुलुस्सियों ३:१७ में पौलुस कहता है कि "सब प्रभु यीशु के नाम से करो।" यदि आप यीशु का आदर करते हैं तो आप सब कुछ उसी के अधिकार से करेंगे। प्रभु यीशु ने कहा था कि ,"यदि तुम मुझे से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना १४:१५)। सो, यदि आप उसका आदर नहीं करते तो वह आपका प्रभु नहीं हो सकता।

शिष्यता का दाम

आज हम एक उन्नतिशील समय में रह रहे हैं। चाहे हम अपने घर में हों, या स्कूल में हों या काम पर हों, हर जगह हम से कुछ करने की आशा की जाती है। ऐसे ही मसीही लोगों को भी यह अनुभव होना चाहिए कि उन्हें अपनी शिष्यता के लिये भी कुछ दाम चुकाना है। इससे भी पहले कि हम मसीह की शिष्यता में आते, परमेश्वर को हमारे छुटकारे के लिये एक दाम चुकाना पड़ा था। उस बड़े दाम के बारे में १ पतरस १:१६ में यूं लिखा है, कि तुम्हारा छुटकारा "निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहु के द्वारा हुआ है"। "शिष्य" शब्द का अर्थ है

"एक सीखनेवाला या अनुयायी ।" यदि हम वास्तव में मसीह के चेले बनना चाहते हैं तो कुछ दाम हमें अवश्य देना है । इस विषय में बाइबल क्या सिखाती है, हम देखेंगे ।

पहली बात यह है, कि हमें मनुष्यों का पकड़नेवाला बनना चाहिए । जिस समय यीशु ने पतरस और अन्द्रियास को अपना शिष्य होने के लिये बुलाया था, उस ने उन से कहा था कि,"मेरे पीछे हो लो, और मैं तुम्हें मनुष्यों का पकड़नेवाला बनाऊंगा ।" यदि आप मनुष्यों को पकड़ने में लगे हुए हैं, तो आप बेरोज़गार हैं ।

दूसरी बात शिष्यता के सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि हमें मसीह के समान बनने की आवश्यकता है । यीशु ने मत्ती १०:२५ में कहा था कि "चेले का गुरु के समान होना ही बहुत है" क्या आप मसीह के समान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं ?

तीसरे स्थान पर, शिष्यता के कारण विरोध का भी सामना करना पड़ सकता है । लूका १४:२६ में यीशु ने कहा था,"यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केबालों और भाइयों और बहनों बरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता ।" हमें अपने सम्बन्धियों से कम और मसीह से अधिक प्रेम करना चाहिए । और इसके कारण विरोध भी हो सकता है ।

चौथे, एक शिष्य को अपना क्रूस उठाने की आवश्यकता है । यीशु ने मत्ती १०:३८ में कहा था कि "जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले, वह मेरे योग्य नहीं ।" पहली शताब्दि में यदि किसी को क्रूस उठाकर जाते देखा जाता था तो यह इस बात को दर्शाता था कि वह क्रूस पर चढ़ाया जानेवाला है । यदि आप अपना क्रूस उठाकर चल रहे हैं तो आप वही करेंगे जो पौलुस ने गलतियों ५:२४ में कहा था कि, "जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है ।"

पांचवें स्थान पर, एक शिष्य वह है जिसे सीखने की आवश्यकता है । लूका ११:१ में हम पढ़ते हैं, कि यीशु के चेलों में से एक ने उस से कहा कि, हे प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखा । वे सीखना चाहते थे । किन्तु, आज बहुतेरे ऐसे नहीं हैं ।

फिर, यूहन्ना ८:३१ में यीशु ने कहा था कि "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।"

छठी बात यह है, कि एक शिष्य को फलदायक होना चाहिए। यूहन्ना १५:८ में यीशु ने का था कि "मेरे पिता की महिमा इसी से होती है, कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।"

सातवें स्थान पर, एक शिष्य वह है जो अपने भाईयों के साथ प्रेम रखता है। यीशु ने यूहन्ना १३:३५ में इस प्रकार कहा था कि "यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।"

सो इस प्रकार हम देखते हैं, कि शिष्यता दामरहित नहीं है। ये दाम अवश्य ही चुकाने हैं। परन्तु यदि हम ऐसा नहीं करते, तो नरक का मुंह हमारे लिये हमेशा खुला हुआ है!

रविवार की सुबह के मसीही

मसीह के नाम से कहलानेवाले बहुतेरे लोग ऐसे हैं जो हफ़्ते में केवल एक ही बार कलीसिया की सभा में उपस्थित होते हैं, यानि रविवार की सुबह को। और ऐसा करके वे अपने आप में बड़ा ही संतोष अनुभव करते हैं। यह दिखाता है, कि शैतान कितनी चालाकी से लोगों को नाकाम बना देता है। मसीही भाईयों को लिखकर पौलुस ने २ कुरिन्थियों २:११ में कहा था, कि "हम उसकी (शैतान की) युक्तियों से अनजान नहीं।" किन्तु, तौभी बहुतेरे लोग शैतान की युक्तियों के शिकार हैं। जो लोग अपने आप को केवल रविवार की सुबह ही मसीही मानते हैं, वे अपने मसीही जीवन में हर प्रकार से असफल रहते हैं, और अपने आप को बहुत सी ऐसी बातों से वंचित कर देते हैं जिनकी सहायता से वे अच्छे मसीही बन सकते हैं।

रवीवार की सुबह के मसीही किन-किन वस्तुओं से वंचित रहते हैं? इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं कि सबसे पहले, वे

अज्ञानता में रहते हैं। अन्य मसीही भाईयों के साथ मिलकर बाइबल का अध्ययन करने से हम परमेश्वर के वचन के ज्ञान में बढ़ सकते हैं। हमें अपने उद्धारकर्त्ता मसीह यीशु के ज्ञान में बढ़ने की आवश्यकता है।

दूसरे, हमें आपसी सहभागिता की आवश्यकता है। यीशु ने मत्ती १८:२० में कहा था कि "जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं।" उसके लोगों के बीच में न होकर हम मसीह की सहभागिता से वंचित रह जाते हैं। जिस प्रकार बच्चे और माता–पिता एक–दूसरे के साथ रहना चाहते हैं, ऐसे ही परमेश्वर के बालकों को भी आपस में एक दूसरे के साथ अपने स्वर्गीय पिता की सहभागिता में इकट्ठे रहना चाहिए'।

तीसरे स्थान पर, रवीवार की सुबह के मसीही प्रेरणा से वंचित रहते हैं। हमें आत्मिक खुराक की आवश्यकता है। मत्ती ४:४ में यीशु ने कहा था,"कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" एकत्रित होकर परमेश्वर की आराधना तथा बाइबल अध्ययन करने से हमें आत्मिक बल मिलता है, जिसके द्वारा हम संसार में एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

चौथे, ऐसे लोग मसीही आत्मिक उन्माद से वंचित रह जाते हैं। कई बार हम ऐसे–ऐसे काम करते हैं जिनके विषय में हम जानते हैं कि वे हमें नहीं करने चाहिए। सो आवश्यकता है कि हमें इस बात के लिये प्रेरणा मिले कि हम सही मार्ग पर चलते रहें। इब्रानियों १०:२४ में लिखा है:"और प्रेम, ओर भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करो।"

पांचवें स्थान पर, रवीवार की सुबह के मसीही आत्मिक उन्नति नहीं कर पाते। पौलुस ने १कुरिन्थियों १४:२२ में कहा था,"कि तुम्हारे बरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।" हमारी यह ज़िम्मेदारी है कि हम अपने अन्य मसीही भाई–बहिनों के लिये उनकी आत्मिक उन्नति का कारण बनें।

छठी बात इस सम्बन्ध में यह है, कि हमें बचाव की आवश्यकता है। १ यूहन्ना ५:१६ में यूहन्ना कहता है कि "सारा संसार उस

दुष्ट के वश में पड़ा है ।" सारा संसार पाप की गिरिफ़्त में है और कई बार मसीही जीवन निर्वाह करना बड़ा ही कठिन हो जाता है । सो जितना अधिक हम यीशु और उसके लोगों की संगति में रहेंगे उतना ही अधिक हमें पाप से बचने की शक्ति मिलेगी और हम पाप के कैंसर से लड़ सकेंगे ।

और, फिर हमें मसीही आनन्द की आवश्यकता है जो मसीह के लोगों की संगति से हमें प्राप्त हो सकता है । केवल रवीवार की सुबह जो लोग एकत्रित होते हैं उन्हें ऐसा आनन्द भरपूर प्राप्त नहीं हो सकता । दाऊद भजन १२२:१ में कहता है कि जब लोगों ने मुझ से कहा कि हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं आनन्दित हुआ ।" यह बड़े ही दुख की बात है, कि बहुत से "मसीही" कहलानेवाले लोग ऐसा सोचते हैं कि सप्ताह में एक बार उपासना में आना उनका कर्त्तव्य है, और इसके आगे कुछ करने की आवश्यकता नहीं । इब्रानियों की पत्री का लेखक इब्रानियों १०:२५ में इस प्रकार कहता है,"और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना ना छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है. . . ।"

प्रार्थना में रुकावटें

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि पौलुस प्रेरितों १७:२५ में कहता है कि,"वह तो आप ही सब को जीवन और स्वास और सब कुछ देता है", प्रत्यक्ष ही है कि मनुष्य परमेश्वर के साथ अपना सम्बन्ध रखना चाहता है । किसी कवी ने कहा है कि "प्रार्थना के द्वारा ऐसे–ऐसे काम हो जाते हैं जिनकी संसार कल्पना भी नहीं कर सकता ।" यदि यह सच है, कुछ लोग कहते हैं, तो फिर परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को क्यों नहीं सुनता? इसका कारण यह है कि हमारी प्रार्थनाओं में कुछ रुकावटें होती हैं । लेकिन मैं यह भी यहां कहना चाहूंगा कि इस प्रकार के सभी कारणों के लिये मनुष्य स्वयं ज़िम्मेदार है । ऐसे ही कुछ कारणों के ऊपर इस समय हम विचार करेंगे ।

सबसे पहला कारण है परमेश्वर से न माँगना । याकूब ४:२ में लिखा है कि "तुम्हें इसलिये नहीं मिलता क्योंकि तुम मांगते नहीं ।" परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं ऐसे चेक की तरह हैं जिन्हें इस्तेमाल में न लाया गया हो । यदि चेक लेकर उन्हें बैंक में न दिया जाए, तो ऐसे चेक निरे कागज़ के टुकड़े सिद्ध होंगे । कितने अफ़सोस की बात है , कि बहुतेरे लोगों ने अपने आप को अनेकों महत्वपूर्ण आशीषों से केवल इसीलिये परे रखा हुआ है क्योंकि वे परमेश्वर के पास जाकर उस से मांगते नहीं हैं । इस बात को समझने की बड़ी ही आवश्यकता है कि ऐसी समस्याएं हैं जिनका समाधान केवल प्रार्थना में ही मिल सकता है ।

दूसरे, प्रार्थना में रुकावट का कारण होता है, संदेह करना । याकूब की पुस्तक के पहले अध्याय के आरम्भ मे बुद्धि के विषय में लिखा गया है । वहां ५ तथा ६ पदों में हम इस प्रकार पढ़ते हैं,"पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे. . . पर विश्वास से मांगे, और संदेह न करे. . . " मत्ती २१:२२ में यीशु ने कहा था, "और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा ।" सो हम बाइबल के इन पदों से यह शिक्षा पाते हैं कि संदेह के साथ की गई प्रार्थना परमेश्वर स्वीकार नहीं करता, पर हमें विश्वास के साथ प्रार्थना करनी चाहिए । बहुतेरे लोग उस स्त्री की तरह हैं जिसने एक रात प्रभु से प्रार्थना करके कहा था, कि वह उसके आंगन में लगा पेड़ वहाँ से हटा दें । किन्तु, जब दूसरे दिन सुबह वह उठी तो उसने कहा, "देखो वह पेड़ तो वहीं का वहीं है, कहा नहीं था मैंने कि ऐसा तो हो ही नहीं सकता !"

तीसरे पति-पत्नी के सम्बन्ध यदि ठीक न हों तो उससे भी प्रार्थना में बाधा पड़ सकती है । १. पतरस ३:७ में लिखा है,"वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करो, और स्त्री को निर्बल पात्र जानकर उसका आदर करो, यह समझकर कि हम दोनों ही जीवन के वरदान के वारिस हैं, जिस से तुम्हारी प्रार्थनाएं रुक न जाएं ।" हम एक दूसरे के प्रति परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध व्यवहार करके यह आशा नहीं रख सकते कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुन लेगा ।

चौथे, यदि हमारे जीवनों में पाप है तौभी हमारी प्रार्थनाएं नहीं सुनी जाएंगी। नीतिवचन २८:६ में लिखा है कि,"जो अपना कान व्यवस्था सुनने से फेर लेता है, उसकी प्रार्थना घृणित ठहरती है।" और १ पतरस ३:१२ के अनुसार "प्रभु की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी बिनती की ओर लगे रहते हैं, परन्तु प्रभु बुराई करनेवालों के विमुख रहता है।"

पांचवीं और अन्तिम बात इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं कि कुछ ऐसी वस्तुएं हैं जो कवेल प्रार्थना करने से ही पूरी नहीं हो सकतीं। यदि हम स्वयं बाइबल का अध्ययन नहीं करते हैं तो परमेश्वर के वचन का ज्ञान पाने के लिये प्रार्थना करना व्यर्थ ठहरेगा। यदि हम स्वयं परमेश्वर की इच्छा को पूरा नहीं कर रहे हैं, तो यह प्रार्थना करना अनुचित होगा कि उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो। फिर, यह प्रार्थना करना कि परमेश्वर आवश्यकता से पीड़ित लोगों की सहायता करे सही नहीं होगा, यदि हम स्वयं किसी की भी सहायता नहीं कर रहें हैं और ऐसे ही अपने उद्धार के लिये भी प्रार्थना करना बिल्कुल व्यर्थ होगा, यदि हम फिलिप्पियों २:१२ में लिखी इस बात पर अमल नहीं कर रहे हैं कि "डरते और कांपते हुए अपने-अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ।"

मसीह का अनुसरण करना

बाइबल में इस बात पर बड़ा ही बल दिया गया है कि मसीही लोगों को चाहिए कि वे मसीह यीशु का अनुसरण करें। यीशु ने यूहन्ना १३:१५ में कहा था कि , "मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है वैसा ही तुम भी किया करो।"

यदि हम मसीह के समान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं, तो सबसे पहले हमें उसके समान नम्र और दीन बनना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हमें घमन्डी और अभिमानी नहीं होना

चाहिये, बल्कि मन में दीनता और नम्रता को रखना चाहिए । यीशु ने मत्ती ११:२९ में कहा था कि "मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे ।" याकूब ४:६ में लेखक बड़े ही स्पष्ट शब्दों में यूं कहता है,"कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है ।" सो हमें चाहिए कि हम सदा नम्रता का व्यवहार रखें ।

दूसरी बात हम यह सीखते हैं, कि यीशु पवित्र था । पवित्र का अर्थ है, कि वह पाप और बुराई से परे था और परमेश्वर को समर्पित था । आत्मिक दृष्टिकोण से वह स्वच्छ और शुद्ध था । प्रेरितों ४:२७ में लेखक यीशु को परमेश्वर का सेवक कहकर सम्बोधित करता है ।

१ पतरस १:१५ में लेखक मसीही लोगों को शिक्षा देकर कहता है, "पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल–चलन में पवित्र बनो ।"

किसी ने एक बार कहा था, कि किसी कमरे में यदि शेक्सपियर आ जाए तो लोग उसे देखकर खड़े हो जाएंगे, पर अगर यीशु उस जगह आ जाए तो लोग उसके सामने घुटने टेक लेंगे । यह बात यीशु की पवित्रता को वास्तव में दर्शाती है ।

और अन्तिम बात इस सम्बन्ध में हमें यह मिलती है कि यदि हम यीशु के समान बनना चाहते हैं, तो हमें उसी की तरह क्षमा करना भी सीखना चाहिए । यीशु ने अपने चेलों को, मत्ती ६:१२ में सिखाया था कि वे प्रार्थना करके यह कहें, कि "जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर ।" लूका २३:३४ में हम पढ़ते हैं कि क्रूस के ऊपर से यीशु ने अपने अपराधियों के लिये प्रार्थना करके कहा था कि "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं ।"

पौलुस इफिसियों ४:३२ में शिक्षा देकर कहता है कि,"एक दूसरे पर कृपाल, और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो ।" क्षमा करने के लिये हमें सदा तैयार रहना चाहिए ।

क्या आप वास्तव में मसीह का अनुसरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं?

विश्राम का दिन

विश्रामदिन (सबत का दिन) को मानने की आज्ञा निर्गमन २०:१० में यहूदियों को दी गइ थी, और इस से पहले इस दिन को कोई नहीं मानता था। वहां मूसा ने लोगों से इस प्रकार कहा था, "परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम–काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेसी जो तेरे फाटकों के भीतर हो।" यह आज्ञा यहूदियों को छोड़ अन्य लोगों के लिये नहीं थी। जिन लोगों को परमेश्वर बन्धुवाई से छुड़ाकर लाया था केवल उन्हीं लोगों के लिये इस आज्ञा को दिया गया था। व्यवस्थाविवरण ५:१५ में यूं कहा गया था, "और इस बात को स्मरण रखना के मिसर देश में तू आप दास था। और वहां से तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा के द्वारा निकाल लाया, इस कारण तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे विश्रामदिन मानने की आज्ञा देता है।" इस से पहले, उत्पत्ति से लेकर लगभग २५०० वर्षों के मनुष्य के इतिहास में, विश्राम दिन का कोई उल्लेख नहीं है इस वाचा को यहूदियों के पूर्वजों से नहीं परन्तु इसराएलियों के वंशजों से बांधा गया था। व्यवस्थाविवरण ५:३ में लिखा है कि "इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं, हम ही से बांधा, जो यहां आज के दिन जीवित हैं।"

विश्रामदिन (सबत का दिन) सप्ताह का सातवां दिन था। व्यवस्थाविवरण ५:१४ के अनुसार:"परन्तु सातवां दिन तेरे यहोवा के लिये विश्रामदिन है।" इसी पद में आगे यूं लिखा है, कि इस दिन में यहूदियों को कोई काम न करके केवल विश्राम ही करना था। और जिस प्रकार हमने व्यवस्थाविवरण ५:१५ से देखा है,

कि यह दिन उनके लिये एक यादगार का दिन था, जिस में उन्हें स्मरण करना था कि परमेश्वर उन्हें मिसर से निकालकर लाया था। किन्तु हम जानते हैं कि इसराएलियों ने परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन किया था, और इस कारण परमेश्वर ने लोगों को उस पुरानी वाचा के स्थान पर एक नई वाचा को, जिसमें विश्रामदिन को मानने की आज्ञा नहीं होगी, देने की प्रतिज्ञा की थी। यिर्मयाह ३१:३१ के अनुसार परमेश्वर ने यूं कहा था,"ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं इसराएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बांधूंगा।" तब, परमेश्वर ने, होशे २:११ में कहा था,"मैं उसके पर्व, नए चांद और विश्रामदिन आदि सब नियत समयों के उत्सवों का अन्त कर दूंगा।" कुलुस्सियों २:१४ के अनुसार जब मसीह क्रूस पर मरा था तो उसने मूसा की व्यवस्था (पुराने नियम) का अन्त कर दिया था। वहां लिखा है,"और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।" इसी अध्याय में १६ पद में पौलुस ने कहा था कि, इसलिये खाने-पीने या पर्व या नए चांद या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करें।"

आज प्रभु का दिन हमारे लिये एक यादगार का दिन है। प्रकाशितवाक्य १:१० में यूहन्ना ने कहा था "कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया. . . " यह प्रभु के पुनरुत्थान का दिन है। यह सप्ताह का पहला दिन है – रवीवार का दिन। हमें इस दिन को प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के लिए न कि मिसर में से निकलकर आने के लिये मानना है। इसी दिन हर एक सप्ताह के पहले दिन को मसीह की कलीसिया प्रभु-भोज में भाग लेती है। (प्रेरितों २०:७)। इसी दिन के विषय में मसीही लोगों को आज्ञा देकर कहा गया है, कि वे अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार (दशमास या दहकी नहीं) चंदा इकट्ठा किया करें। रवीवार का दिन मसीही सबत का दिन नहीं है और सबत के दिन को सप्ताह के आखरी दिन से बदलकर सप्ताह का पहला दिन नहीं किया गया है। किन्तु सबत के दिन को हटा लिया गया है। सबत का दिन न तो ग़ैर-यहूदियों के लिये था और न ही आज वह मसीह यीशु के अनुयायीयों के लिये है।

"बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार" (१)

इससे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न और कोई दूसरा नहीं हो सकता, ꣳ उद्धार पाने के लिये मैं क्या करुं? इस प्रश्न का सही उत्तर ानने के लिये हम केवल परमेश्वर के वचन की पुस्तक में से । देख सकते हैं । कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि मनुष्य का उद्धार सीह में केवल विश्वास कर लेने से ही हो जाता है, परन्तु बाइबल में ऐसा कतई नहीं सिखाती । केवल विश्वास लाने से उद्धार ाना क्यों असम्भव है? इसलिये क्योंकि बाइबल स्पष्टता से यह कहती है कि जो विश्वास परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानता वह वेश्वास उद्धार नहीं कर सकता । याकूब २:२४ में लिखा है के,"मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, बरन कर्मो से भी धर्मी उहरता है ।" याकूब २:२६ के अनुसार,"निदान जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है ।" जो लोग यीशु की आज्ञा नहीं मानते हैं उन्हें उसे अपना प्रभु कहने का कोई अधिकार नहीं है । यीशु ने लूका ६:४६ में कहा था कि,"जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?" केवल वे ही जो परमेश्वर की मर्ज़ी को मानते हैं उद्धार पाएंगे । क्योंकि मत्ती ७:२१ में यीशु ने कहा था कि, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है ।" फिर, बाइबल यह भी सिखाती है, कि केवल विश्वास से मनुष्य का उद्धार इसलिये भी नहीं होगा क्योंकि बहुतेरे लोग केवल विश्वास तक ही सीमित रहते हैं । यूहन्ना १२:४२, ४३ में हम कुछ ऐसे ही लोगों के बारे में यूं पढ़ते हैं: "तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रकट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर की

प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी ।" यूहन्ना ८:३० में लेखक कहता है, कि यीशु "ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया ।" किन्तु उन्हीं विश्वासियों को सम्बोधित करके, यूहन्ना ८:४४ में, यीशु ने कहा था, कि "तुम अपने पिता शैतान से हो..." क्योंकि याकूब २:१६ में लिखा है : "कि तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है: दुष्टात्मा भी विश्वास करते और थरथराते हैं । " सो दुष्टात्मा भी विश्वास करते हैं । पर क्या उनका भी उद्धार होगा? आप इसका जवाब अच्छी तरह से जानते हैं । फिर, यदि केवल विश्वास से ही उद्धार हो सकता था, तो फिर बाइबल में कुछ और ऐसी बातों का वर्णन क्यों हुआ है कि उन्हें मानना उद्धार पाने के लिये ज़रुरी है? जैसे कि लिखा है, कि सुसमाचार को सुनना आवश्यक है । रोमियों १०:१४ में लिखा है."और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?" प्रेरितों १८:८ में लिखा है, "और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया ।" सो, विश्वास लाने के लिये सुनना ज़रुरी है । ऐसे ही उद्धार पाने के लिये पाप से मन फिराना भी आवश्यक है । प्रेरितों १७:३० में लिखा है कि परमेश्वर "अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है । यीशु को प्रभु कहकर अंगीकार करना भी आवश्यक है । रोमियों १०:६–१० में हम पढ़ते हैं :"क्योंकि धर्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है ।" और "यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे. . . तो तू निश्चय उद्धार पाएगा ।" और ऐसे ही बपतिस्मा लेना (पानी के भीतर गाड़े जाना) भी आवश्यक है । पतरस ने प्रेरितों २:३८ में लोगों से कहा था कि "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे ।"

हनन्याह ने शाऊल के पास आकर उस से कहा था कि,"अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल ।" (प्रेरितो २२:१६) । बपतिस्मे के विषय में पतरस ने १ पतरस ३:१२ में कहा था कि "उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा. . . अब तुम्हें बचाता है ।" इन बातों पर सारी गम्भीरता के साथ विचार कीजिए । इसी विषय में

हम अगले पाठ में फिर से देखेंगे ।

"बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार" (२)

अब तक हमने इस बात को देखा है कि बाइबल यह सिखाती है कि केवल विश्वास आज्ञा माने बिना किसी का उद्धार नहीं कर सकता और विश्वास लाने के साथ, उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेना भी ज़रुरी है । (याकूब २:२४–२६, लूका ६:४६ तथा मत्ती ७:२१–२३) । हमने यह भी देखा था बाइबल से, कि यदि मनुष्य यीशु में विश्वास कर भी ले, लेकिन उस की आज्ञाओं को न माने तो वह उद्धार नहीं पाएगा । (यूहन्ना १२:४२,४३; याकूब २:१६) । इस बात को भी स्पष्ट रुप से देखा गया था कि विश्वास लाना जितना आवश्यक है उतना ही आवश्यक यह भी है कि पाप से मुक्ति पाने के लिये प्रभु की आज्ञाओं का भी पालन किया जाए ।(रोमियों १०:१३–१४, प्रेरितों १७: ३०–३१, रोमियों १०:६–२०, प्रेरितों २:३८ तथा २:१६ और १ पतरस ३:२१) ।

इस समय अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि जो लोग ऐसा मानते हैं कि मनुष्य का उद्धार मसीह पर केवल विश्वास कर लेने से ही हो सकता है, वे मुख्य रुप से क्या गलती कर रहे हैं । सबसे पहली बात इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि वे उन आयतों को पूरी तरह से नहीं पढ़ते हैं जहां बाइबल सिखाती है कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये क्या करना चाहिए । बाइबल के उन पदों पर वे विचार ही नहीं करते जहां विश्वास के अतिरिक्त कुछ अन्य बातों को भी उद्धार पाने के लिये आवश्यक बताया गया है, जेसे प्रेरितों ११:१८ जहां लिखा है, "तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है ।" सो हम देखते हैं कि उद्धार पाने के लिये मन फिराना भी उतना ही ज़रुरी है जितना कि विश्वास लाना । फिर रोमियों १०:६–१० में हम इस प्रकार पढ़ते हैं,"कि यदि तू अपने मुंह से

यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा । क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगिकार किया जाता है ।" सो अपने विश्वास का मुंह से अंगीकार करना भी उद्धार पाने के लिये ज़रुरी है । ऐसे ही प्रेरितो २:३८ जैसे बाइबल के पदों पर भी अकसर ध्यान नहीं दिया जाता । पतरस ने वहां इस प्रकार कहा था: "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले. . . " यहां इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता है कि बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये या पाने के लिये लेने को कहा गया है, न कि इसलिये कि पाप क्षमा हो चुके हैं सो बपतिस्मा लो । प्रेरितों २२:१६ में बपतिस्मा लेने के महत्व को यह कहकर प्रकट किया गया है, कि "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल ।" किन्तु, वे कहते हैं कि रोमियों ५:१ में तो लिखा है "सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें ।" यहां तो बपतिस्मा लेने की बात को कहा ही नहीं गया है । लेकिन क्या बाइबल में ऐसे पद नहीं हैं जहां उद्धार पाने के लिये मन फिराने को कहा गया है तौभी उन पदों में विश्वास का वर्णन तक नहीं है? किन्तु क्या इस से हमें यह समझ लेना चाहिए कि उद्धार पाने के लिये विश्वास लाने की आवश्यकता ही नहीं है? १ पतरस ३:२१ में हम पढ़ते हैं कि "उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है. . . " यहां केवल बपतिस्मा लेने की बात को ही कहा गया है । अब क्या इस से हमें यह समझ लेना चाहिए कि बपतिस्मा लेना ही उद्धार पाने के लिये पर्याप्त है? बिल्कुल नहीं । जो लोग केवल विश्वास से ही उद्धार पाने की बात को उचित ठहराना चाहते हैं, वे बाइबल के उन पदों को भी ठीक से नहीं समझ सकते जिनका वर्णन अपनी बात को सही ठहराने के लिये वे करते हैं ।

यह सही है कि यूहन्ना ३:१६ और इफिसियों २:८,९ तथा रोमियों ५:१ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य को उद्धार पाने के लिये विश्वास लाना (मसीह में) आवश्यक है । परन्तु इन पदों से

हम यह नहीं सीखते हैं कि एक मरा हुआ विश्वास मनुष्य का उद्धार कर सकता है। पढ़िए याकूब २:२६ ,यदि हम बाइबल को अच्छी तरह से पढ़ेंगे यह जानने के लिये कि उद्धार पाने के सम्बन्ध में बाइबल क्या शिक्षा देती है, तो हम निश्चय ही यह जान लेंगे कि केवल विश्वास से किसी का उद्धार नहीं हो सकता।

परमेश्वर के बारे में गलत धारणाएं

बाइबल में, १ राजा २०:२८ में, हम इस प्रकार पढ़ते हैं: "तब परमेश्वर के उसी जन ने इस्राएल के राजा के पास जाकर कहा, यहोवा यों कहता है, अरामियों ने यह कहा है, कि यहोवा पहाड़ी देवता है, परन्तु नीची भूमि का नहीं हैं, इस कारण मैं उस बड़ी भीड़ को तेरे हाथ में कर दूंगा, तब तुम्हें बोध हो जाएगा कि मैं यहोवा हूं।"

अरामियों के विचार में यहोवा केवल एक मूर्ती था। अरामियों के पास भांति–भांति के ईश्वर थे। उनके पास वर्षा का ईश्वर था और सूर्य देवता जैसे अनेकों अन्य ईश्वर भी थे। उनका विचार था कि यहोवा अपने लोगों की केवल पहाड़ियों पर ही सुनता है, परन्तु घाटियों में वह नहीं सुन सकता । इसलिये अरामियों ने कहा, कि यदि इस्राएली घाटी में आकर उनका मुकाबल करेंगे तो वे उन्हें अवश्य ही पराजित कर देंगे। क्योंकि उनका विचार था कि यहोवा इस्राएलियों की सहायता केवल पहाड़ियों पर ही कर सकता है।

हम भी अकसर अरामियों की तरह ही परमेश्वर के विषय में सोचते हैं, और उसके बारे में गलत धारणाएं अपने मनों में रखते हैं। अपने जीवनों में कई बार परमेश्वर को हम कुछ विशेष समयों या स्थानों तक ही सीमित कर देते हैं। इस सम्बन्ध में, सबसे पहले, हम यह देखते हैं कि लोग अकसर ऐसा सोचते हैं कि परमेश्वर केवल बीमारी का ही परमेश्वर है, अच्छे स्वास्थ का नहीं। हम केवल जब बीमार पड़ते हैं तभी हमारा ध्यान परमेश्वर

की ओर जाता है पर जब हम भले–चंगे होते हैं तो परमेश्वर के बारे में सोचते तक भी नहीं हैं । क्या हम ऐसा नहीं मानते कि परमेश्वर की हमें उस समय भी आवश्यकता होती है जब हम तन्दरुस्त होते हैं? वास्तव में हमें परमेश्वर की आवश्यकता उस समय और भी अधिक होती है जब हम तन्दरुस्त होते हैं, क्योंकि यीशु ने, यूहन्ना १५:५ में कहा था कि,"मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते ।"

दूसरे, बहुतेरे लोगों के लिये परमेश्वर अच्छे समयों का नहीं परन्तु केवल बुरे वक्तों का ही परमेश्वर है । जब दिन बुरे आते हैं, तो लोग परमेश्वर को याद करते हैं । परन्तु जब उन के पास सब कुछ था, तो उस समय उन्हें परमेश्वर की कोई परवाह नहीं थी । वास्तव मे जिस समय सब कुछ ठीक होता है उस समय हमें परमेश्वर की और भी अधिक ज़रुरत होती है । पर मनुष्य की ऐसी प्रवृर्ति रही है कि अच्छे समय में वह परमेश्वर को भूल जाता है । परमेश्वर ने लोगों से व्यवस्थाविवरण ८:१७–१८ में यूं कहा था, "और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे कि यह सम्पति मेरी ही सामर्थ और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई । परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पति प्राप्त करने की सामर्थ देता है. . . " हम सबको यह याद रखना चाहिए ।

तीसरे, बहुतेरे मसीही लोगों के लिये परमेश्वर केवल इतवार का ही परमेश्वर है, हफ्ते के बाकी दिनों का नहीं; रविवार का दिन उन लोगगें के लिए एक पवित्र दिन होता है पर सप्ताह के अन्य दिन उनके लिये कोई विशेष महत्व नहीं रखते । उन बाकी के दिनों में वे कुछ भी कर सकते हैं । क्या हमारा स्वभाव, और हमारी बोलचाल केवल रविवार के दिन ही मसीह की शिक्षानुसार होने चाहिए? सप्ताह के अन्य दिनों में हमारा जीवन कैसा होता है? क्या परमेश्वर का भय और आदर हमें प्रत्येक दिन नहीं मानना चाहिए? पौलुस मसीह के अनुयायीयों के विषय में कहता है कि तुम मसीह की पत्री हो जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से हृदय की मांस रुपी पट्टियों पर लिखी है । (२ कुरिन्थियों ३:२) हमें सब लोगों के लिये हमेशा एक ऐसा जीवन

व्यतीत करना चाहिए जो लोगों के लिये एक उदाहरण सिद्ध हो सके ।

और अंत में हम यह देखते हैं कि अकसर लोग मरने के वक्त परमेश्वर को ज़रूर याद करते हैं चाहे जीवन में वे उसका नाम लें या न लें । दुख और मृत्यु के समय हम सहायता के लिये परमेश्वर की ओर देखते हैं । परन्तु ज़िन्दगी में उसकी आवश्यकता का अनुभव हमें नहीं होता । जबकि जीवन के रहते हमें और भी अधिक उसे अपने जीवनों में स्थान देना चाहिए । २ पतरस १:३ में लिखा है: "क्योंकि उस के ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है । हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है. . . "

सो हम देखते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य को प्रत्येक वह वस्तु दी है जो उसे आवश्यक है । परमेश्वर महान है । हमें उसे किसी भी तरह से सीमित करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए ।

"लगभग मसीही"

प्रेरितों के काम की पुस्तक के २६वें अध्याय के २७ तथा २८ पदों में हम यूं पढ़ते हैं, "हे राजा अग्रिप्पा, क्या तू भविष्य वक्ताओं की प्रतीति करता है? हां, मैं जानता हूं कि तू प्रतीति करता है । तब अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?" राजा अग्रिप्पा यह जानता था कि वह एक मसीही बन सकता था । पर मसीह के सुसमाचार को न मानकर उसने एक बहुत बड़ी ग़लती की थी । वह समझता था, कि पौलुस के समझाने से यदि पूरा नहीं तो वह लगभग एक मसीही तो बन ही जाएगा । किन्तु सम्पूर्ण मसीह ओर लगभग मसीही में एक बहुत बड़ा अन्तर है । इसी सम्बन्ध में इस समय हम विचार करेंगे ।

एक लगभग मसीही कौन है? कुछ लोग ऐसा सोचते हैं, यदि उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ है जहां मां–बाप अपने

आप को मसीही कहते हैं, तो वे जन्म से ही मसीही हैं। किन्तु यह धारणा बाइबल की शिक्षा से कतई मेल नहीं खाती। यूहन्ना ३:३ में यीशु ने कहा था,"यदि कोई नए सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" नए सिरे से जन्म लेने का तात्पर्य यहां आत्मिक जन्म से है। ऐसे ही, कुछ अन्य लोगों का मत है कि वे एक मसीही इसलिये हैं क्योंकि मसीही धर्म उन्हें संसार के अन्य धर्मों से सही लगता है। किन्तु केवल एक ऐसे परिवार में जन्म ले लेने से जहां लोग अपने आप को मसीही मानते हैं, या मसीही धर्म को इसलिये अपना लेने से कि वह हमें ठीक लगता है, कोई भी मनुष्य वास्तव में एक मसीही नहीं हो सकता। कुछ अन्य लोग अपने आप को इसलिये भी मसीही समझते हैं क्योंकि वे मसीहीयत के नैतिक सिद्धांतों को मानते हैं। परन्तु केवल नैतिक दृष्टिकोण से अच्छा जीवन व्यतीत करने से ही किसी का उद्धार नहीं हो सकता। पौलुस ने तीतुस २:११ में कहा था कि "परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।" हम अपने प्रयत्नों से उद्धार नहीं प्राप्त कर सकते। उद्धार केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही मिलता है।

प्रेरितों की पुस्तक के दस अध्याय में हम कुरनेलियुस के बारे में पढ़ते हैं, कि वह बड़ा ही धर्मी और अच्छे चाल–चलन का इन्सान था, परन्तु तौभी परमेश्वर ने उसके पास पतरस को भेजकर कहा था, कि "वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।" (प्रेरितों ११:१४)।

कुछ अन्य लोग मसीह पर विश्वास करने से ही अपने आप को मसीही मानने लगते हैं। किन्तु, मत्ती ७:२१ में यीशु ने कहा था कि "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु, कहता है उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" लूका ६:४६ में यीशु ने यूं कहा था कि,"जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु कहते हो?" बहुतेरे लोग प्रभु की कुछ आज्ञाओं को तो मानते हैं, पर उसकी कुछ अन्य आज्ञाओं को वे नहीं मानते। फिर, एक लगभग मसीही वह इंसान है जो सोचता है कि फिर कभी प्रभु की आज्ञा को मान लूंगा। पौलुस ने २ कुरिंथियों ६:२ में कहा था

". . .देखो, अभी वह उद्धार का दिन है।" केवल इच्छा करके कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता। क्या आप एक लगभग मसीही हैं?

क्यों बहुत से लोग केवल "लगभग मसीही" ही रह जाते हैं? सबसे पहली बात इस सम्बन्ध में यह है कि कुछ लोगों को यह आभास ही नहीं होता कि वे पाप में खोए हुए हैं। इन में ऐसे लोग भी शामिल हैं जो अपने आपको धार्मिक समझते हैं और बाइबल के नाम पर मनुष्यों के धर्मोपदेशों का अनुसरण करते हैं। पौलुस ने कहा था "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।"(रोमियों ३:२३)। फिर कुछ लोग लगभग मसीही इसलिये भी रह जाते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि यदि वे कुछ करेंगे तो लोग उनकी हंसी उड़ाएंगे। बहुतेर ऐसे हैं जो मसीह की आज्ञा को केवल इसलिये नहीं मानते क्योंकि उन्हें डर लगता है कि उनके सम्बन्धी और मित्र क्या कहेंगे? यीशु ने लूका ६:२३ में कहा था "यदि कोई मेरे पीछै आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।" मसीही जीवन खुद–इन्कारी का जीवन है। इसका अर्थ यह है कि हमें मसीह के लिये सब कुछ सहन करने के लिये हमेशा तैयार रहना चाहिए।

तीसरे स्थान पर, बहुत से लोग संसार से इतना अधिक प्रेम रखते हैं कि वे सब कुछ त्याग कर मसीह के पास नहीं आ पाते। १ यूहन्ना २: १५ में लिखा है कि "तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो।" फिर कुछ लोग ऐसे हैं जो अपनी ईमानदारी पर ही भरोसा करते हैं। वे कहते हैं कि यदि हम सब कुछ ईमानदारी से करते हैं तो इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता कि हमारा क्या विश्वास है। तौभी १ पतरस १:२२ में लिखा है, "सो जबकि तुमने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है . . . " केवल सच्चाई ही हमारी आत्मा को पाप के परिणाम से बचा सकती है। (यूहन्ना ८:३२)। पांचवे स्थान पर, कुछ लोग ऐसे हैं जो अपना "चर्च" नहीं बदलना चाहते। यद्यपि बाइबल हमे सिखाती है कि केवल एक ही कलीसिया है। इफिसियों ४:४ में लिखा है कि "एक ही

देह है ।" इफिसियों १:२२,२३ में हम पढ़ते हैं कि देह किसे कहा गया है । वहां पौलुस कहता है, "और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है. . " फिर इफिसियों ४:५ में लेखक कहता है कि "एक ही विश्वास है ।" सो हम देखते हैं कि सच्ची मसीहीयत साम्प्रदायिक नहीं है ।

सच्ची कलीसिया केवल एक ही है और उद्धार पाने के लिये हम सब को उसी एक कलीसिया में होना चाहिए । पर सच्ची कलीसिया कौन सी है? सच्ची कलीसिया वह है जिसका वर्णन हमें बाइबल में मिलता है । जिस कलीसिया में आप हैं, क्या उसका नाम बाइबल में है, और क्या उस में पाई जानेवाली शिक्षाएं बाइबल में मिलती हैं? यदि नहीं, तो आप मसीह की कलीसिया में नहीं हैं । पर यदि आप उद्धार पाना चाहते हैं तो आपको अवश्य ही उस कलीसिया में होना चाहिए जो मसीह की है और जिसके बारे में हमें बाइबल में मिलता है । क्योंकि इफिसियों ५:२५ में पौलुस ने कहा था कि "हे पतियो, अपनी–अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया ।" मसीह ने कलीसिया का उद्धार करने को अपने आप को बलिदान कर दिया । इफिसियों ५:२३ में लिखा है कि मसीह "देह का उद्धारकार्त्ता है ।" पर मसीह की देह मसीह की कलीसिया है ।

प्रभु–भोज
(१)

पौलुस ने, १ कुरिन्थियों ११:२० में, यूं कहा था, "सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो, तो यह प्रभु–भोज खाने के लिये नहीं ।" प्रभु–भोज की स्थापना प्रभु यीशु ने उस रात को की थी जिसमें उसे उसके एक चेले यहूदा ने पकड़वाया था । (१ कुरिन्थियों ११:२३) । प्रभु–भोज के बारे में लोगों के मनों में अनेकों भ्रान्तियां

रही हैं, और कई प्रश्न इस सम्बन्ध मे अकसर पूछे जाते हैं। इस समय हम ऐसे ही कुछ प्रश्नों के ऊपर विचार करेंगे जिन्हें प्रभु भोज के सम्बन्ध में अकसर पूछा जाता है।

सबसे पहले, हम यह देखें, कि प्रभु भोज है क्या? प्रभु–भोज एक यादगार है। लूका २२:२६ में यीशु ने प्रभु–भोज के बारे में कहा था कि "मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" जिस प्रकार प्रन्द्रह अगस्त का दिन स्वतंत्रता दिवस के रुप में माना जाता है और जिस प्रकार कब्रिस्तानों में अनेक कब्रों पर पत्थर लगे होते हैं जिन पर लिखे हुए अक्षरों को पढ़कर हमे उनकी याद आती है जो कभी हमारी ही तरह जीवित थे। ऐसे ही प्रभु–भोज में भाग लेकर हम मसीह को याद करते हैं। जब लोग प्रभु–भोज में भाग लेते हैं तो उन्हें वे बातें याद आती है जो उस रात को गतसमनी में घटी थीं, उन्हें वह भीड़ याद आती है जो यीशु की मौत मांग रही थी। उन्हें याद आता है कि किस प्रकार यीशु उस रात को हन्ना और हेरोदेस तथा पीलातुस के सामने लाया गया था। वे कीलें जिन्हें उसके हाथों और पैरों में ठोंका गया था और वह भाला जो उसकी पसली में भेदा गया था जिससे पानी और लोहु निकलकर बहने लगे थे, उस समय हमें याद आ जाते हैं। प्रभु–भोज लेते समय हमें यीशु की सारी तकलीफें और यात्नाएं स्मरण हो आती हैं।

फिर, प्रभु भोज लेकर हम बार–बार प्रभु यीशु की मौत का प्रचार करते हैं। १ कुरिन्थियों ११:२६ में लिखा है कि "जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को, जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।" सब लोग प्रचारक बनकर प्रचार नहीं कर सकते, परन्तु जितनी बार हम सब प्रभु–भोज में भाग लेते हैं तो ऐसा करके हम बार–बार यह व्यक्त करते हैं कि हम यह विश्वास करते हैं कि यीशु मारा गया था और गाड़ा गया था और जी उठा था और एक दिन वह फिर वापस आएगा।

और फिर, इस सम्बन्ध में हम यह देखते हैं, कि प्रभु–भोज से हमें आत्मिक शक्ति मिलती है। हम पढ़ते हैं, यूहन्ना ६:५३–५५ में कि यीशु ने एक भीड़ को सम्बोधित करके कहा था कि,"मैं

तुम से सच–सच कहता हूं, जब तक मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ, और उसका लोहु न पीओ, तुम में जीवन नहीं। जो मेरा मांस खाता और मेरा लोहु पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अन्तिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहु वास्त्व में पीने की वस्तु है।" शारीरिक तथा आत्मिक जीवन परमेश्वर का एक विशेष दान है। शारीरिक रुप से जीवित रहने के लिये हमें हवा, भोजन, पानी और प्रकाश की आवश्कयता पड़ती है। यदि किसी मनुष्य को ये वस्तुएं न मिल पाएं तो वह जीवित नहीं रह सकता ऐसे ही आत्मिक प्राणी होने के कारण जो परमेश्वर का स्वरुप है, हमें उसके पुत्र का मांस खाने की और उसका लोहू पीने की आवश्यकता है, और अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो हमारी आत्माएं सदा के लिये परमेश्वर से दूर हो जाएंगी।

प्रभु–भोज
(२)

इससे पूर्व, प्रभु–भोज के सम्बन्ध में, हमने यह देखा था कि प्रभु–भोज का उद्देश्य क्या है और हमने सीखा था कि प्रभु–भोज हमें मसीह के बलिदान की याद दिलाता है, और उसे लेकर हम प्रभु की मृत्यु को प्रचार करते हैं, और उसके द्वारा हमें आत्मबल मिलता है।

अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि प्रभु–भोज में किन वस्तुओं को इस्तेमाल में लाना चाहिए। जिन दो चीज़ों का प्रभु–भोज में उपयोग किया जाता है उन्हें यहूदियों के फसह के पर्व से लिया गया है। जिनका उपयोग यहूदी प्रत्येक वर्ष अपने फसह के भोज में करते थे। उसमें एक वस्तु थी रोटी। मत्ती २६:२६ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि "जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी, और चेलों को देकर कहा, लो खाओ, यह मेरी देह है।" यीशु की देह को स्मरण करने

के लिये निर्जीव और मटमैली अख़मीरी रोटी से अच्छी और कोई दूसरी वस्तु नहीं हो सकती थी। मरे हुए दानों को पीसकर, गूंधकर, और पकाकर रोटी बनती है। प्रभु–भोज की दूसरी वस्तु है, दाख का रस। मत्ती २६:२७, २८ में हम यूं पढ़ते हैं : "फिर उसने कटोरा लेकर, धन्यवाद दिया और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" यीशु ने एक जगह अपने आप को दाखलता और अपने अनुयायीयों को दाखलता की डालियां कहकर सम्बोधित किया था, इसलिये यीशु के लोहू को स्मरण करने के लिये दाख (अंगूर) के रस से अच्छी और क्या वस्तु हो सकती थी? (यूहन्ना १५:१,५)।

ऐसे ही, इस प्रश्न पर भी विचार किया जा सकता है, कि प्रभु–भोज में कौन भाग ले सकता है? सबसे पहली बात इस सम्बन्ध में हमें यह याद रखनी चाहिए कि प्रभु–भोज की मेज़ उसके राज्य के भीतर होती है। जैसे कि लूका २२:२९–३० में हम पढ़ते हैं, यीशु ने कहा था, "और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया है वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूं, ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज़ पर खाओ पीओ।" मरकुस १४:२५ में यीशु ने यूं कहा था, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि दाख का रस उस दिन तक फिर कभी न पीऊंगा जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊं।" बाइबल में लिखा है कि प्रभु के राज्य में होने के लिये हमें एक नया जन्म लेने की आवश्यकता है। यूहन्ना ३:३ में यीशु ने कहा था, "कि मैं तुझ से सच–सच कहता हूं कि यदि कोई नए सिरे से न जन्में तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।" फिर यूहन्ना ३:५ में प्रभु ने इस प्रकार कहा था, कि "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" सो इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि केवल वही लोग जिन्होंने यीशु की आज्ञा मानकर नया जन्म पाया है, और इस प्रकार उसके राज्य में हैं, वास्तव में प्रभु–भोज में भाग ले सकते हैं। जिस प्रकार आप मेरे घर में आए बिना मेरी मेज़ पर भोजन नहीं कर सकते, ठीक वैसे ही आप प्रभु की मेज़ पर भी उसके राज्य के भीतर आए बिना उसके भोजन में शामिल नहीं हो सकते। जो

लोग मसीह की सच्ची कलीसिया में हैं, प्रभु–भोज में भाग लेते समय वे प्रत्येक उपस्थित जन से आग्रह करके कहते हैं कि प्रभु–भोज में भाग लेने से पहले हर एक इंसान अपने आप को जांच ले। "क्योंकि जो खाते–पीते समय प्रभु की देह को न पहचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।" (१कुरिन्थियों ११:२९)।

"मसीह का बपतिस्मा"
(१)

इससे पहले कि यीशु परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ करता, यीशु ने बपतिस्मा लिया था। सुसमाचार की चारों किताबों में भी यीशु के बपतिस्मा लेने का वर्णन मिलता है। इसलिये इस विषय में देखना कुछ अनुचित न होगा। इस सम्बन्ध में यहां हम मत्ती ३:१३–१७ पदों पर ध्यान देंगे।

इस विषय में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि यीशु स्वयं यूहना बपतिस्मा देनेवाले के पास इस उद्देश्य से आया था कि यूहन्ना उसे बपतिस्मा दे। पर क्यों?

यीशु ने यूहन्ना ३:१५ में, बपतिस्मा देनेवाले से कहा था, "कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" भजन–संहिता ११९:१७२ में दाउद ने कहा था, ". . . क्योंकि तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं।" यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिये बपतिस्मा लिया था। इसी बात पर बल देकर, यूहन्ना ६:३८ में, यीशु ने यूं कहा था, "क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, बरन अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।"

दूसरे, यीशु ने इसलिये भी बपतिस्मा लिया था ताकि वह अन्य सब लोगों के सामने एक उदाहरण रखें। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के बारे में कहा था कि वे ". . . वचन को मानकर

हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे।" (१थिस्सलुनीकियों १:६)। यदि वे प्रभु का अनुसरण कर रहे थे तो उन्होंने बपतिस्मा भी अवश्य ही लिया होगा। यीशु ने परमेश्वर पिता की आज्ञाओं को मानकर हमें सिखाया है कि परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को मानना हमारा कर्त्तव्य है। उसने, यूहन्ना ९:४ के अनुसार कहा था, कि,"जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है. . . ।"

यीशु ने इस बात का भी उदाहरण हमारे सामने रखा है कि जिन बातों को वह सिखाता था वह उन्हें स्वयं भी मानता था। यूहन्ना ३:५ में उसने कहा था कि "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" ऐसे ही, मरकुस १६:१६ में यीशु ने कहा था कि "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।"

यीशु ने अपने मसीह होने को सिद्ध करने के लिये भी बपतिस्मा लिया था। यूहन्ना १:३१ में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यूं कहा था,"और मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इसराएल पर प्रकट हो जाए।" और अपने पिता को प्रसन्न करने के लिये भी, यीशु ने बपतिस्मा लिया था। क्योंकि मत्ती ३:१७ में हम यूं पढ़ते हैं कि जैसे ही यीशु बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया तो यह आकाशवाणी हुई "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।" क्या कभी आपने इस पर गम्भीरता से सोचा है कि क्यों बपतिस्मा लेने के बाद ही परमेश्वर ने यीशु को अपना पुत्र घोषित किया था? इस बात में अवश्य ही कोई विशेषता होनी चाहिए।

"मसीह का बपतिस्मा"
(२)

इस संबंध में हमने इससे पहले देखा था कि यीशु स्वयं चलकर यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के पास आया था और अपनी इच्छा से उस से बपतिस्मा लिया था। हमने ऐसे चारों कारणों पर भी विचार किया था जिनके लिये यीशु ने बपतिस्मा लिया था, और वे कारण थे : परमेश्वर की धार्मिकता को पूरा करने के लिये, सब लोगों के सामने एक उदाहरण रखने के लिये, अपने को मसीह सिद्ध करने के लिये और अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने के लिये।

अब, यीशु के बपतिस्मे के ही बारे में इस पाठ में हम कुछ और बातों पर विचार करेंगे। सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि जो बपतिस्मा यूहन्ना क्रूस पर यीशु की मृत्यु से पहले देता था, उसे लेने से पहले मसीह पर विश्वास लाने को कहा जाता था। हम पढ़ते हैं प्रेरितों १९:४ में कि यूहन्ना ने यह कहकर मनफिराव का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना। ऐसे ही आज भी जब हम यीशु का बपतिस्मा लेते हैं तो बपतिस्मा लेने से पहले यीशु पर विश्वास करना आवश्यक है। क्योंकि मरकुस १६:१६ में लिखा है कि "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।"

दूसरी बात यूहन्ना के बपतिस्मे के सम्बन्ध में हमें यह मिलती है कि बपतिस्मा लेने से पहले मन फिराना ज़रुरी था। मत्ती ३:८ में लिखा है, कि जब यूहन्ना ने लोगों को अपने पास बपतिस्मा लेने को आते देखा था उस ने उन से कहा था कि "मन फिराव के योग्य फल लाओ।" आज भी बपतिस्मा लेने से पहले लोगों को मन फिराने की आवश्यकता है। जैसे कि पतरस ने प्रेरितों २:३८ में लोगों से कहा था, कि "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से

बपतिस्मा ले तो तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे।"

तीसरे स्थान पर, यूहन्ना के बपतिस्मे के सम्बन्ध में हम यह देखते हैं कि बपतिस्मा लेने से पहले अंगिकार किया जाता था। मत्ती ३:६ में लिखा है, "और अपने-अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया।" अब, आज भी जब लोग मसीह का बपतिस्मा लेते हैं तो उन्हें बपतिस्मा लेने से पहले अंगीकार करना पड़ता है। यद्यपि अपने पापों का नहीं पर इस बात का कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है, "कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" खोजे के मन परिवर्तन के सम्बन्ध में हम पढ़ते हैं कि "मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है। फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है। उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है. . . और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े और उस ने उसे बपतिस्मा दिया।" (प्रेरितों ८:३६-३८)।

चौथी बात हम यह देखते हैं, कि यूहन्ना का बपतिस्मा पापों की क्षमा के लिये था। मरकुस १:४ में लिखा है,"यूहन्ना आया, जो जंगल में बपतिस्मा देता था और पापों की क्षमा के लिये मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करता था।" आज क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद भी परमेश्वर की योजना में कोई परिवर्तन नहीं आया है। क्योंकि प्रेरितों २२:१६ में हम पढ़ते हैं कि हनन्याह ने शाऊल के पास जाकर उस से कहा था कि "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।"

अंत में, हम देखते हैं, कि जो बपतिस्मा यूहन्ना यीशु की मृत्यु से पहले देता था, और जो बपतिस्मा यीशु के चेले, उसकी मृत्यु के बाद देते थे उनमें क्या अंतर था। इस सम्बन्ध में हम

देखते हैं कि यूहन्ना का बपतिस्मा लेने से पवित्रात्मा का दान नहीं मिलाता था, किन्तु मसीह का बपतिस्मा लेने से वह प्राप्त होता है ।(प्रेरितों २:३८) । यूहन्ना का बपतिस्मा किसी भी नाम में नहीं दिया जाता था, किन्तु मसीह का बपतिस्मा दिया जाता है । (मत्ती २८:१६, प्रेरितों २:३८) । यूहना का बपतिस्मा इसलिये दिया जाता था कि लोग उसे लेकर आनेवाले राज्य में प्रवेश करने के लिये अपने आप को तैयार करें । यूहन्ना के बारे में लूका १:१७ में लिखा है कि ". . . प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे ।" पर मसीह की मृत्यु के बाद अब उसका बपतिस्मा लेकर लोग उसके राज्य अर्थात् उसकी कलीसिया में प्रवेश करते हैं । (यूहन्ना ३:५; प्रेरितों २:३८, ४१, ४७, १ कुरिन्थियों १२:१३; गलतियों ३:२७) ।

"बपतिस्मा और यीशु का लोहू"

मसीह की कलीसियाएं क्योंकि बपतिस्मा लेने के बारे में लोगों को शिक्षा देती हैं, इसलिये कई बार लोग मसीह की कलीसिया पर आरोप लगाकर कहते हैं कि वे लोग पानी से उद्धार पाने की शिक्षा देते हैं । मसीह की कलीसियाएं जल को कुछ भी महत्व नहीं देती हैं, क्योंकि जल पापों को नहीं धो सकता, उसमें कोई शक्ति नहीं है । परं मसीह की कलीसियाएं यह विश्वास करती हैं कि मसीह यीशु का लोहू शक्तिशालि है और परमेश्वर ने उसे आत्माओं को पापों से धोकर शुद्ध करने के लिये ठहराया है । सो प्रश्न यह है, कि मनुष्य का सम्बन्ध मसीह के लोहू के साथ कब और कैसे स्थापित होता है?

देखें, कि इस विषय में बाइबल क्या कहती है । मत्ती २६:२८ में यीशु ने कहा था,"क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है ।" इससे हम सीखते हैं कि पापों को धोने के लिए मसीह का लोहू आवश्यक है । फिर, पतरस ने प्रेरितों २:३८ में कहा था,"मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह

के नाम से बपतिस्मा ले. . . .'' यहां से हम सीखते हैं कि हमें पापों की क्षमा कब मिलती है । इब्रानियों ९:१४ में लेखक यूं कहता है, ''तो मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो ।'' यहां से भी हम सीखते हैं कि हमारे विवेक को क्या शुद्ध करता है ।

किन्तु हमारा विवेक कब शुद्ध होता है? १ पतरस ३:२१ पर ध्यान दें: ''और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा अब तुम्हें बचाता है (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है) ।'' इस बात पर ध्यान दें : लेखक कहता है, कि बपतिस्मा ले लेने के बाद ही मनुष्य का विवेक शुद्ध होता है क्योंकि बपतिस्मा लेने पर ही मनुष्य का सम्बन्ध मसीह के लोहू के साथ स्थापित होता है ।

फिर प्रकाशितवाक्य १:५ पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है जहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि ''. . . .जो हम से प्रेम रखता है और जिसने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है ।'' यहां से हम देखते हैं कि कौन सी वस्तु हमें पाप से आज़ाद करती है । प्रेरितों २२:१६ में पौलुस से हनन्याह ने कहा था कि,''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल ।'' इससे हमें शिक्षा मिलती है कि हमारे पाप कब धुलते हैं । रोमियों ६:३ को पढ़कर बड़ी ही स्पष्टता से हम यह देख सकते हैं कि मसीह के लोहू के साथ मनुष्य का सम्पर्क तभी स्थापित होता है जब मनुष्य मसीह की आज्ञानुसार बपतिस्मा लेता है । वहां पौलुस इस प्रकार कहता है,''क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?'' मसीह ने अपना लोहू अपनी मृत्यु में बहाया था और जब हम बपतिस्मा लेते हैं, सो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लेने से हम उसके लोहू के सम्पर्क में आ जाते हैं । क्या आप ने उसके लोहू के साथ अपना सम्पर्क बना लिया है?

"खोजे का मन परिवर्तन"

अपने पुनरुत्थान के बाद स्वर्ग में वापस उठा लिये जाने से पहले प्रभु यीशु ने एक विशाल आज्ञा देकर अपने चेलों से कहा था, कि वे सब लोगों को जाकर बताएं कि उन्हें मसीही बनने के लिये क्या करना ज़रुरी है। इस विशाल आज्ञा के बारे में हमें मत्ती २८:१८–२०; मरकुस १६:१५,१६ तथा लूका २४:४६ में मिलता है। मत्ती के अनुसार, प्रभु ने कहा था, कि लोगों को बपतिस्मा दो और उन्हें सिखाओ। मरकुस के अनुसार उद्धार पाने के लिये सबको विश्वास करना और बपतिस्मा लेना आवश्यक है। और लूका के अनुसार मन फिराव और पापों की क्षमा का प्रचार एक साथ किया जाएगा।

इन सब बातों को एक जगह पर देखने के लिये हम बाइबल में वर्णित मन–परिवर्तन की एक घटना पर विचार करेंगे। यह घटना हम सबके लिये एक उदाहरण है जिससे हमें शिक्षा मिलती है कि एक मसीही बनने के लिये मनुष्य को क्या–क्या करने की आवश्यकता है। परमेश्वर जानता है कि एक उदाहरण में शक्ति होती है और इसीलिये उसने हमें बाइबल में प्रेरितों के कामों नाम की पुस्तक दी है जिसमें हमें मसीही बनने के सम्बन्ध में दस उदाहरण मिलते हैं। किन्तु इस समय हम प्रेरितों ८:२६–२६ से खोजे के उदाहरण पर विचार करेंगे। सबसे पहिले इस घटना मं हम एक स्वर्गदूत के बारे में पढ़ते हैं। प्रेरितों ८:२६ में लिखा है कि,"फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरुशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है।"

अब स्वर्गदूत स्वयं क्यों नहीं खोजे के पास गया? यह घटना उस समय घटी थी जबकि आश्चर्यकर्म किए जाते थे। पर इस मनुष्य का उद्धार आश्चर्यकर्म के द्वारा नहीं हुआ था। उस स्वर्गदूत ने केवल फिलिप्पुस से बात की थी और केवल इसलिये कि वह

फिलिप्पुस को खोजे के पास ले आए ।

परमेश्वर अपने सुसमाचार को मनुष्यों के द्वारा लोगों तक पहुंचाना चाहता है । १ कुरिन्थियों १:२१ के अनुसर,"परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे ।" आज सुसमाचार के प्रचार के द्वारा परमेश्वर लोगों का उद्धार करता है न कि किसी आश्चर्यकर्म या चिन्ह के द्वारा। आरम्भ में किए गए आश्चर्यकर्मो का उद्देश्य मरकुस १६:२० में लिखे इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है, "... और प्रभु उनके साथ काम करता रहा और उन चिन्हों के द्वारा जो साथ–साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा ।" पौलुस ने, २ कुरिन्थियों ५:७ में कहा था,"क्योंकि हम रुप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं ।" दूसरे, खोजे की घटना में पवित्रात्मा के काम पर ध्यान करके हम देखते हैं, कि आत्मा ने केवल फिलिप्पुस को खोजे के पास तक जाने में सहायता दी, उसने खोजे से बात नहीं की । प्रेरितों ८:२८ में लिखा है,"तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले ।" आत्मा ने केवल इतना ही काम किया था कि उस ने फिलिप्पुस और खोजे को एक जगह पर मिला दिया था । आत्मा ने फिलिप्पुस को यह नहीं बताया कि उसे क्या कहना है । उसने यह बात फिलिप्पुस पर ही छोड़ दी थी ।

अब इसमें कोई दो राय नहीं हैं, कि पवित्र आत्मा मनुष्य के उद्धार के कार्य में अवश्य काम करता है । यीशु ने यूहन्ना ३:५ में कहा था कि "जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्में तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता ।" परन्तु प्रश्न यह है कि पवित्रात्मा किस प्रकार मनुष्य के उद्धार में काम करता है? इस प्रश्न का उत्तर हमें खोजे के उद्धार की घटना में स्पष्ट रुप में मिलता है । आत्मा वचन के प्रचार के द्वारा अपना काम करता है । याकूब १:२१ में लेखक कहता है कि "उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है ।" तीसरे स्थान पर इस बात पर ध्यान करके देखें कि खोजे के उद्धार की घटना में प्रचारक ने क्या किया था । प्रेरितों ८:३५ के अनुसार,"तब फिलिप्पुस

ने अपना मुंह खोला और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया ।" फिलिप्पुस ने उसे कहानियां किस्से नहीं सुनाए, और राजनीति की बातें नहीं की, उसने उसे कोई और सुसमाचार या मनुष्यों के उपदेश नहीं सुनाए पर उस ने खोजे को मसीह का सुसमाचार सुनाया । उसके उपदेश का विषय "यीशु मसीह" था ।

प्रेरितों ८:१२ से हम कुछ ऐसी बातों को देखते हैं जिनका उल्लेख यीशु के प्रचार में शामिल है । अब चौथी बात इस पाठ में हमें यह मिलती है, कि खोजे ने अपने पापों से उद्धार पाकर एक मसीही बनने के लिये क्या किया था । सबसे पहले, ३५ पद के अनुसार, उसने यीशु का सुसमाचार सुना था । रोमियों १०:१७ में पौलुस ने कहा था कि, "विश्वास सुनने से, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है ।" दूसरे, उसने एक सवाल पूछा था, ३६ पद में लिखा है कि उसने कहा था, "देख, यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?" लिखा है, कि फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है उस ने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है ।" फिर यद्यपि यहां यह लिखा नहीं गया है कि खोजे को मन फिराने को कहा गया था, परन्तु यह प्रत्यक्ष ही है कि उसने निश्चय ही अपना मन फिराया था । उसके जीवन में एक परिवर्तन आया था उस ने अब विश्वास किया था कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह अब उस की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहता था । उसका मन अब बदल गया था । पौलुस ने प्रेरितों १७:३० में कहा था कि "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से अनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है ।" और ऐसा ही खोजे ने भी किया था । और जैसा कि रोमियों १०:१० तथा मत्ती १०:३२–३३ और १ तीमुथियुस ६:१२ में हम पढ़ते हैं, खोजे ने मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानकर उसका अंगीकार किया था । और, लिखा है "तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उस ने उसे बपतिस्मा दिया ।" (प्रेरितों २:३८) । जैसे ही वे पानी की जगह आए, खोजे ने तुरन्त बपतिस्मा लिया ।

किन्तु क्यों? यदि बपतिस्मा लेना उद्धार पाने के लिये आवश्यक नहीं है, जैसे कि कुछ लोगों का मत है, तो फिर खोजे ने बपतिस्मा लेने में इतनी जल्दी क्यों की? क्योंकि प्रभु यीशु ने मरकुस १६:१६ में यूं कहा था, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा . . . " ऐसे ही प्रेरितों १६:३३ में हम जेल के एक दारोगा के बारे में यूं पढ़ते हैं, "और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उन के घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।" पर यदि बपतिस्मा उद्धार के लिये आवश्यक नहीं है, तो फिर इतनी जल्दी किस लिये? और खोजे के सम्बन्ध में, प्रेरितों ८:३६ में, अन्त में हम यूं पढ़ते हैं कि "वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।" यानि बपतिस्मा लेकर जल में से बाहर निकल आने के बाद। मन परिवर्तन तथा मसीही बनने की इस घटना के बारे में लूका ने पवित्रात्मा की प्रेरणा के द्वारा बाइबल में लिखा था। क्या आप एक मसीही हैं? क्या आप इसी प्रकार से एक मसीही बने थे?

पौलुस का मसीही बनना

पौलुस जब एक मसीही बना था तो उसका एक वर्णन हमें प्रेरितों २२:१–१६ में मिलता है। उसी विवरण को ध्यान में रखकर हम इस सम्बन्ध में यहां कुछ बातों को देखने जा रहे हैं। कुछ ऐसी ख़ास बातें हैं जिन्हें हम इस पाठ से सीख सकते हैं। सबसे पहली बात इस विवरण से हम यह सीखते हैं, कि आत्मिक बातों से सम्बन्धित धार्मिक निर्णय एक व्यक्तिगत निर्णय होना चाहिए। पौलुस प्रेरितों २२:३ में कहता है कि "मैं तो यहूदी मनुष्य हूँ जो किलकिया के तरसुस में जन्मा था" फिर रोमियों २:११ में उसने कहा था कि "परमेश्वर किसी कर पक्ष नहीं करता है" अर्थात अपने माता–पिता के विश्वास या आज्ञा मानने से किसी को उद्धार नहीं मिलता। पौलुस का सारा परिवार यहूदी था, किन्तु फिर भी वह स्वयं एक मसीही बन गया था। दूसरी बात हमें इस विवरण

में यह मिलती है कि किसी बड़े विद्वान या शिक्षक के द्वारा शिक्षा पाने से मनुष्य का उद्धार नहीं होता। प्रेरितों २२:३ में ही पौलुस आगे कहता है,"परन्तु इस नगर में गमलीएल के पावों के पास बैठकर पढ़ाया गया और बाप दादों की व्यवस्था की ठीक रीति पर सिखाया गया. . .. " परमेश्वर की व्यवस्था की बातों को उसे सही ढंग से सिखाया गया था।, पर तौभी इससे उसका उद्धार नहीं हुआ था। तीसरे स्थान पर हम यहां से यह देखते हैं कि बड़े ही विश्वास के साथ किसी धर्म को मानने से और उसमें पूरी आस्था रखने से भी किसी का उद्धार नहीं हो जाता। क्योंकि प्रेरितों २२:३ में ही पौलुस फिर कहता है कि मैं "परमेश्वर के लिये ऐसी धुन लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो।" पौलुस गलतियों १:१३,१४ में इस प्रकार कहता है, ". . . .कि मैं परमेश्वर की कलीसिया को बहुत ही सताता और नाश करता था। और अपने बहुत से जातिवालों से जो मेरी अवस्था के थे यहूदी मत में बढ़ता जाता था और अपने बाप–दादों के व्यवहारों में बहुत ही उत्तेजित था।" यहां देखने की बात यह है, कि पौलुस जिन बातों को पहले सही और सच समझता था उसका ऐसे समझने से वे बातें वास्तव में सच नहीं बन गई। यद्यपि वह अपने आप में ईमानदार था, एक अच्छा विश्वासी था, और अच्छा विवेक रखता था किन्तु तौभी वह पाप में खोया हुआ था। और जब वह दमिश्क की ओर जा रहा था और प्रभु ने उसे अंधा कर दिया था तो प्रेरितों २२:१० में लिखा है कि उसने पूछा कि,"हे प्रभु मैं क्या करुं?" अब यहां हम देखते हैं कि पौलुस प्रभु में विश्वास ले आया था। पर अभी भी उसे कुछ और करना था। और हम पढ़ते हैं, प्रेरितों २२:१० में कि प्रभु ने उससे कहा कि "उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहां तुझ से सब कह दिया जाएगा।" पौलुस अब यीशु में विश्वास ले आया था और प्रेरितों ६:६ के अनुसार तीन दिन तक वह बिना खाए पीए दमिश्क में रहा था, अर्थात अपने पापों के प्रति उसे शोक था। परन्तु इन सब बातों के बाद भी प्रेरितों २२:१६में लिखा है, कि प्रभु की आज्ञा पाकर हनन्याह नाम का एक प्रचारक पौलुस के पास आया और उसने उस से यूं कहा कि "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले और उसका नाम लेकर अपने पापों

को धो डाल ।"

क्या आप ने भी अपने पापों से उद्धार पाने के लिये ऐसा ही किया है जैसा कि पौलुस ने किया था? प्रभु की योजना सबके लिये केवल एक ही है ।

"आपने सुना होगा" (१)

आपने सुना होगा कि अकसर यह कहा जाता है, कि बपतिस्मा कैसे भी ले लिया जाए इससे कुछ अंतर नहीं पड़ता । जल की बूंदें छिड़ककर या जल उन्डेलकर या फिर जल में डूबकर कैसे भी बपतिस्मा लिया जा सकता है । क्या यह सच है? इस सम्बन्ध में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि "बपतिस्मा" शब्द हिन्दी भाषा का शब्द नहीं है । यूनानी भाषा के "बैपटिज़ो" शब्द को हिन्दी में बपतिस्मा कहकर सम्बोधित किया गया है । यूनानी भाषा में "बैपटिज़ो" शब्द का अर्थ है "डुबोना, भीतर गाड़ना, दफ़न करना ।" यूनानी भाषा की बाइबल में, जबकि "डुबोने" के लिये "बैपटिज़ो" शब्द इस्तेमाल में लाया गया है, "छिड़कने" के लिये "रहानटिज़ो" और "उडेलने" के लिय "चिओ" शब्द का उपयोग हुआ है । मसीहीयत की स्थापना से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व यूनानी में लिखी गई पुराने नियम की पुस्तक में, जिसे "सेप्टुआजिन्ट" कहा जाता है, लैव्यव्यवस्था १४:१५–१६ के विवरण में इन तीनों शब्दों का उल्लेख मिलता है, और बड़े ही स्पष्ट रुप में यहां से देखा जा सकता है कि इन तीनों शब्दों को किस प्रकार अलग–अलग ढंग से इस्तेमाल किया गया है । वहां पहले लिखा है, कि याजक तेल डाले या उंडेले(चिओ), फिर उंगली को डुबोए (बैपटिज़ो), और फिर छिड़के (रहानटिज़ो) । इस विवरण को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि "बैपटिज़ो" शब्द को डुबोने के लिये इस्तेमाल किया जाता था । इस विषय में बाइबल की शिक्षा बिलकुल साफ़ है कि बपतिस्मा केवल डूबकर या गाड़े जाकर ही

लिया जा सकता है ।

रोमियों ६:४–५ को पढ़कर हम सीखते हैं,"सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें । क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे ।" और अब रोमियों ६:१७–१८ पर भी ध्यान दें, जहां यूं लिखा है, "परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढ़ाले गए थे । और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए ।"

कहने का तातपर्य्य इस बात से है, कि बपतिस्मा के द्वारा गाड़े जाना एक उपदेश था जिसका प्रचार रोम में किया गया था और जिसे मानकर वहां बहुतेरे लोग अपने पापों से मुक्त हो गए थे । रोमियों ६:६ में लिखा है,"क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें ।" यहां यह शिक्षा हमें मिलती है, कि बपतिस्मा लेने के द्वारा ही पुराना मनुष्यत्वं पानी की कब्र के भीतर एक मुर्दे की तरह गाड़ा जाता है और उस कब्र में से बाहर निकलकर मनुष्य एक नया इन्सान बन जाता है । कुलुस्सियों २:१२ तथा १ कुरिन्थियों १०:१–३ से भी हमें यही शिक्षा मिलती है कि बपतिस्मा केवल गाड़े जाकर ही लिया जा सकता है । केवल बाइबल को पढ़ने से ही हमें सच्चाई मालूम हो सकती है । यीशु ने कहा था कि,"सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा ।"(यूहन्ना ८:३२) ।

"आपने सुना होगा"
(२)

यीशु ने यूहन्ना ४:२३,२४ में इस प्रकार कहा था: "परन्तु वह

समय आता है, बरन अब भी है जिसमें सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे। क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करनेवालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।" यीशु के कहे इन शब्दों से हम यह सीखते हैं कि प्रभु को सच्ची उपासना ही स्वीकार होती है। अर्थात् परमेश्वर की उपासना सच्चाई के साथ की जानी चाहिए। यही कारण है कि परमेश्वर की उपासना में हमें बाजे बजाकर उसकी उपासना नहीं करनी चाहिए। वह हमारी, जिन्हें उसने बनाया है, उपासना चाहता है, न कि उन बाजों की जिन्हें मनुष्यों ने अपनी बुद्धि और हाथों से बनाया है।

बाइबल बड़ी ही स्पष्टता से हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर हमारे हृदयों और गलों से निकली आवाजों की उपासना चाहता है। इफिसियों ५:१६ के अनुसार, लिखा है, "गीत गाया करो।" यह काम गला कर सकता है, बाजा नहीं ।हमें आत्मा से गाना चाहिए। (१ कुरिन्थियों १४:१५)। गला यह काम कर सकता है, एक बाजा नहीं। हमें भजन गाने चाहिए। (इब्रानियों २:१२)। गले से गया जा सकता है, बाजे से नहीं। इब्रानियों १३:१५ के अनुसार, हम उसके द्वारा स्तुतिरुपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया.. करें। ऐसा गले के द्वारा किया जा सकता है, बाजों के द्वारा नहीं।

हमें यूहन्ना प्रेरित के उन शिक्षाप्रद शब्दों को सदैव याद रखना चाहिए जिनका वर्णन हमें २ यूहन्ना ६ में इस प्रकार मिलता है,"जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी।" यदि हम परमेश्वर की उपासना में उस यंत्र के अतिरिक्त, जिसे उसने हमें दिया है, किसी और यंत्र का इस्तेमाल करें तो क्या ऐसा करके हम मसीह की शिक्षा में बने रह सकते हैं?

"आपने सुना होगा"
(३)

आपने सुना होगा, कि कहा जाता है कि हमें ईस्टर मनाना चाहिए। ईस्टर का जन्म अन्य जाति तथा यहूदी मतों के विचारों और मसीहीयत की कुछ शिक्षाओं से मिलकर हुआ था। ईस्टर शब्द बाइबल में कहीं पर भी नहीं मिलता। ईस्टर शब्द को ईस्टरे नाम की एक देवी से लिया गया है जिसे इन्गलैन्ड में कुछ लोग पूजते थे और अप्रैल के महीने में उसके आगे चढ़ावे चढ़ाते थे। अंग्रेज़ी भाषा में बाइबल का जो अनुवाद सबसे पहले राजा जेम्स ने करवाया था उसमें एक जगह, प्रेरितों १२:४ में, अनुवादकों ने फसह शब्द को गलती से ईस्टर अनुवाद कर दिया था। यूनानी भाषा में यह शब्द था "पस्का।" बाइबल में यह शब्द अट्ठाईस बार आया है और सभी अन्य जगह पर इसका अनुवाद "फसह" किया गया है। प्रेरितों १२:१–४ में हम पढ़ते हैं कि हैरोदेस ने फसह को ध्यान में रखकर ही यह फैसला किया था कि पतरस को वह फ़सह के बाद ही लोगों के सामने लाएगा। हेरोदेस मसीहीयत के विरुद्ध था, परन्तु वह यहूदियों को प्रसन्न करना चाहता था। इसीलिये उसने यहूदियों की फ़सह का ध्यान रखा था। पर यदि वह कोई एक मसीही त्योहार होता तो उस से उसे कोई अन्तर नहीं पड़ता। प्रेरितों की मृत्यु के बाद जो लोग यहूदी मत को छोड़कर मसीही बने थे वे फ़सह को मनाते थे परन्तु मसीह की शिक्षानुसार नहीं, पर यहूदी मत से प्रभावित रहकर वे ऐसा किया करते थे। जबकि यहूदी मत से निकले मसीही "पस्का" अर्थात फ़सह को मनाते रहे, दूसरी ओर अन्य जाति के लोग ईस्टर देवी का दिन मनाते थे, किन्तु ये दोनों ही एक दूसरे से भिन्न थे। किन्तु समय के व्यतीत होने के साथ–साथ ईस्टर मसीहीयत में जोड़ दिया गया और लोग उसे मसीह के जी उठने के दिन के रुप में मनाने लगे!

प्रभु यीशु ने सिखाया था कि उसके लोग परमेश्वर की आराधना आत्मा और सच्चाई के साथ करेंगे। (यूहन्ना ४:२४)। सो क्योंकि बाइबल में "ईस्टर" शब्द का कहीं पर भी कोई उल्लेख नहीं है, इसलिए हम यदि परमेश्वर की उपासना सच्चाई के साथ करना चाहते हैं तो हम ईस्टर नहीं मना सकते। "ईस्टर" परमेश्वर की शिक्षा नहीं है पर मनुष्यों का बनया धर्मोपदेश है। जो लोग मसीही हैं वे मसीह के मुर्दों में से जी उठने की याद को, प्रत्येक प्रभु के दिन, प्रभु–भोज में भाग लेकर मनाते हैं। (मत्ती २६:२६–२८; प्रेरितों २०:७ ; १ कुरिन्थियों ११:२३–२६)।

इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति यीशु की आज्ञा को मानकर जल के भीतर जाकर उसमें से बाहर आता है तो उस से भी हमें मसीह के पुनरुत्थान की घटना याद हो आती है। (रोमियों ६:३–६)। फिर याद रखें कि २ यूहन्ना ९ में लिखा है कि "जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी।" यह बात ध्यान में रखकर, क्या हम मसीह में बने रह सकते हैं, यदि हम ईस्टर जैसी मनुष्यों की शिक्षाओं को मानें?

"आपने सुना होगा" (४)

कुछ लोगों का विचार है कि मसीह की कलीसिया भी एक सम्प्रदाय है। समप्रदाय का अर्थ है, एक हिस्सा या किसी वस्तु का एक टुकड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से एक सम्प्रदाय वह है जो किसी संगठन से अलग होकर अपने कुछ निजि विचारों तथा सिद्धांतों को मानता है। सो एक सम्प्रदाय सम्पूर्ण कलीसिया को नहीं कहा जा सकता। किन्तु सम्प्रदाय एक गुट या एक समुदाय है, जो किसी मंडली में से निकलकर अलग हुआ है। मत्ती १६:१८ में प्रभु यीशु ने कहा था कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।"

यहां कलीसिया को एक विश्वव्यापी संगठन कहकर सम्बोधित किया गया है। कलीसिया केवल एक ही है, यद्यपि उसी एक कलीसिया की अनेकों स्थानीय मंडलियां विभिन्न स्थानों पर पाई जा सकती हैं। कलीसिया केवल एक है, और वह कोई सम्प्रदाय नहीं है।

कुछ समय पूर्व जब एक फ़िरौन की कब्र को खोदा गया था, तो उसके भीतर कुछ गेहूं के दाने मिले थे। वे दाने अभी भी उपजाऊ थे। सो जब उन्हें बोया गया तो दो हज़ार साल पुराने उन बीजों से गेहूं की फसल ही उत्पन्न हुई। इसी प्रकार परमेश्वर के राज्य का बीज, अर्थात परमेश्वर का वचन, (लूका ८:११) यदि आज भी लोगों के मनों में बोया जाए, बिना किसी प्रकार की मिलावट के, तो आज भी उससे केवल मसीही और केवल मसीह की कलीसियाएं (प्रेरितों ११:२६; रोमियों १६:१६) ही उत्पन्न होंगे, जैसे कि पहिली शताब्दी में हुआ था। केवल परमेश्वर का वचन ही लोगों के मनों में बोने से एक भी सम्प्रदाय पैदा नहीं हो सकता। यदि लोग आज भी केवल वैसे ही मसीहीयत को मानें जैसे कि आरम्भ में होता था, तो सारे संसार में केवल मसीह की कलीसियाएं ही विद्यमान होंगी। साम्प्रदायिक कलीसियाएं आज इसलिये विद्यमान है क्योंकि बाइबल के अतिरिक्त बहुत सी अन्य बातों को, जो कि मनुष्यों की शिक्षाएं हैं, माना और सिखाया जाता है।

वर्षों से लोगों को यह सिखाया जा रहा है, कि यूहन्ना १५:१–६ के अनुसार कलीसिया अनेकों डालियों में बंटी हुई है, जबकि वहां डालियां यीशु ने अपने चेलों को कहकर समबोधित किया था, कलीसिया को नहीं। वास्त्व में बाइबल बड़ी ही स्पष्टता से कहती है, कि कलीसिया केवल एक ही है। पौलुस ने इफिसियों ४:४–५ में कहा था, कि "एक ही देह है, और . . . एक ही विश्वास. . " "देह" बाइबल में कलीसिया को कहा गया है। कुलुस्सियों १:१८ के अनुसार, "और वही (मसीह) देह, अर्थात कलीसिया का सिर है. . . " मैं आपसे निवेदन करके यह कहना चाहता हूं, कि आप बाइबल में से पढ़कर स्वयं इस बात को मालूम करें कि परमेश्वर कलीसिया के बारे में क्या कहता है। यीशु ने कहा था कि, "तुम

सच्चाई को जानोगे, और सच्चाई तुम्हें स्वतंत्र करेगी ।"

"आपने सुना होगा"
(५)

आपने सुना होगा कि बहुतेरे लोग आज मसीही एकता की बात करते हैं । एकता का होना ज़रुरी और सही भी है । परन्तु साम्प्रदायिक कलीसियाएं एकता नहीं पर विभिन्न कलीसियाओं का संगठन चाहती हैं । पहली शताब्दी की मसीहीयत मे एकता थी । उन सबका एक ही विश्वास और एक ही उद्देश्य था । एक भी सम्प्रदाय, प्रोटेस्टैन्ट या कैथलिक, उस समय विद्यमान नहीं था । उस समय मसीहीयत बिना किसी सम्प्रदाय की मौजूदगी के वर्तमान थी और आज भी ऐसा ही हो सकता है । प्रभु यीशु ने यूहन्ना १७:२०–२१ में प्रार्थना करके यूं कहा था कि "मैं केवल इन्हीं के लिये, (प्रेरितों के लिए) बिनती नहीं करता परन्तु उनके लिये भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों । जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे प्रतीति करें, कि तू ही ने मुझे भेजा है ।" यीशु की इस प्रार्थना में जिस एकता का वर्णन मिलता है, वैसी ही एकता की आवश्यकता आज मसीहीयत में है । कुरिन्थुस में मसीही भाईयों को लिखकर १ कुरिन्थियों १:१० में, पौलुस ने यूं कहा था,"हे भाइयों, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो ।" परमेश्वर नहीं चाहता कि उसके लोगों के बीच में धार्मिक फूट विद्यमान हो । इफिसियों ४:४–६ में पौलुस धार्मिक एकता के लिये हमें एक सिद्धांत बताता है, और कहता है, कि "एक ही देह है (अर्थात कलीसिया–कुलुस्सियों १:१८), और एक ही आत्मा, जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है । एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास (अनेकों नहीं, जैसा कि आज कहा जाता

है), और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है।" अब यदि आज परमेश्वर की इस योजना का पालन सब जगह पर किया जाए तो कहीं पर भी न तो धार्मिक फूट पाई जाएगी और न ही कहीं पर कोइ सम्प्रदायिक कलीसिया होगी। रोमियों १६ :१७ में पौलुस ने कहा था,"अब हे भाइयों, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है। फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो, और उन से दूर रहो।" ध्यान दें यहां इस बात पर कि फूट अर्थात साम्प्रदायिक विभाजन बाइबल की शिक्षा के विरुद्ध है।

"आपने सुना होगा"
(६)

आपने अवश्य ही सुना होगा कि कहा जाता है, कि बाइबल से कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है। क्या यह बात सच है?

वास्तव में ऐसा कहना, परमेश्वर की निन्दा करना है। क्योंकि यदि यह बात सही है, तो फिर सच्चाई का स्थान क्या है? सच्चाई स्वयं अपना विरोध नहीं कर सकती। यीशु ने परमेश्वर से कहा था कि "तेरा वचन सत्य है।" (यूहन्ना १७:१७)। इस गलत बात का मूलाधार आज की प्रचलित धार्मिक गलतियों और भ्रांतियों में पाया जाता है। कई बार लोग बाइबल में लिखी कुछ बातों को लेकर उन्हें इस प्रकार तोड़–मरोड़कर इस्तेमाल करते हैं जिससे वे अपनी गलत शिक्षाओं को बाइबल से प्रमाणित करना चाहते हैं। पतरस बाइबल में पौलुस द्वारा लिखी बातों को सम्बोधित करके एक जगह इस प्रकार कहता है "... .जिनमें कितनी बातें ऐसी हैं, जिनक समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थो को भी पवित्रशास्त्र की और बातों की नाई खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनते हैं।"

जब एक बात पर दो धार्मिक विचारों के लोग टकराते हैं और अलग–अलग शिक्षा देते हैं तो इसमें बाइबल का दोष नहीं होता है पर उन लोगों का होता है जो परमेश्वर के वचन की पुस्तक में लिखी हुई बातें तोड़ते मरोड़ते हैं। सो मनुष्यों की गलतियों के लिये परमेश्वर को दोषी मत ठहराएं। पौलुस ने १ कुरिन्थियों १४:३३ में कहा था कि "परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शान्ति का कर्त्ता है. . . " अर्थात् आज जो विभिन्न धार्मिक विचार, शिक्षाएं और विश्वास संसार में पाए जाते हैं वे सब परमेश्वर की इच्छा से नहीं है। इस गड़बड़ी को मनुष्यों ने जन्म दिया है।

सच्चाई यह है, कि परमेश्वर ने हमें केवल एक ही सच्ची शिक्षा दी है, वह साधारण और सरल है, उसके अतिरिक्त प्रत्येक बात गलत और निराधार है । पौलुस गलतियों १:७–८ में कहता है, "परन्तु वह दूसरा सुसमाचार हे ही नहीं: पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं जो तुम्हें घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम्हें सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो श्रापित हो।"

आज यदि हम परमेश्वर की सच्चाई पर ही चलना चाहते हैं तो हमें आज भी उसी शिक्षा को सिखाना और मानना चाहिए जिसे पहली शताब्दि में सिखाया और माना जाता था। पतरस की वह बात जिसका वर्णन हमें २ पतरस १:२० में मिलता है हमें अवश्य याद रखनी चाहिए, उसने कहा था,"कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।"

हमें बाइबल की शिक्षाओं को बाइबल में ही लिखी बातों से मिलाकर सीखना चाहिए। मनुष्यों की शिक्षाओं और धर्मोपदेशों से हमें परे रहना चाहिए। बाइबल स्वयं ज्ञान और भक्ति का भंडार है। यदि इन बातों को ध्यान में रखा जाए, तो हम कभी यह नहीं कहेंगे कि बाइबल से कुछ भी प्रमाणित किया जा सकता है।

"आपने सुना होगा"
(७)

धार्मिक फूट और विभाजन का एक मूल कारण आज यह है, कि लोग इस बात पर सहमत नहीं हैं कि धार्मिक बातों में अधिकार किसका है, या किसके अधिकार से हमें धार्मिक बातों को मानना चाहिए। आपने सुना होगा, कि कहा जाता है, कि यह अधिकार चर्च अर्थात कलीसिया के पास है। तौभी पतरस, मसीहीयों को सम्बोधित करके, १ पतरस २:५ में कहता है कि, "तुम भी आप जीवते पत्थरों की नाई आत्मिक घर बनते जाते हो।" यहां मसीही लोगों को, स्त्रियों–पुरुषों को, परमेश्वर का आत्मिक घर अर्थात् उसकी कलीसिया कहा गया है। क्या मनुष्य जो कभी भी गलती कर सकता है, धार्मिक अधिकार के योग्य हो सकता है? फिर, आपने यह भी सुना होगा कि कहा जाता है, कि रीति–रिवाजों को मानना ही धार्मिकता है। पर यीशु ने मत्ती १५:६ में कहा था कि "तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया।" लोग आज बड़ा दिन और ईस्टर मनाते हैं, इसका अधिकार परमेश्वर ने नहीं दिया है, पर मनुष्यों ने इन बतों को बनाया और सिखाया है। फिर यह भी कहा जाता है कि कुछ लोग जो "विद्वान" हैं वे अपनी सभाओं या "कौंसिल" में चर्च (कलीसिया) के नियमों को बनाते हैं और बदलते हैं और यह अधिकार उनके पास है। पर मत्ती १५:८ में यीशु ने यूं कहा था, कि "ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" ऐसे ही,कुछ लोगों का विचार है, कि जैसा जिसको अच्छा लगता है या जैसा भी विश्वास किसी का है वेसा ही वह चले और यही ठीक है। पौलुस भी एक मसीही बनने से पहले ऐसा ही सोचता था। पर एक मसीही बनने के बाद उसने प्रेरितों २६:९ में यूं कहा था, "मैं ने समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बुहत कुछ करना चाहिए।" किसी बात पर

विश्वास करके उसे सही समझ बैठना उचित नहीं है। बहुतेरे लोग सोचते हैं कि यदि ईमानदारी और विश्वास के साथ वे किसी "धर्म" में हैं या किसी "कलीसिया" में हैं, और कुछ धार्मिक बातों पर विश्वास करते हैं और उन्हें मानते हैं तो यही ठीक है। पर यह उनकी अपनी दृष्टि में ठीक हो सकता है, परमेश्वर की दृष्टि में यह गलत है।

धार्मिक बातों में सारा अधिकार आज केवल प्रभु यीशु मसीह के ही पास है। मत्ती २८:१८ में प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था: "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।" मत्ती १७:५ में परमेश्वर ने यीशु के बारे में कहा था, "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इस की सुनो।" पौलुस ने इफिसियों १:२२,२३ में कहा था कि परमेश्वर ने, "सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया, यह उसकी देह है, और उसकी परिपूर्णता है जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।" और फिर, कुलुस्सियों १:१८ में वह कहता है, "और वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है।" अपनी इच्छा और वचन को यीशु ने हम सब के लिये आज अपने उन प्रेरितों और चेलों के द्वारा प्रकट किया है जिन्हें उसने चुना था, जिन्होंने उसके नए नियम में उसकी पूरी इच्छा को लिखकर हमें दिया है। यीशु ने अपने उन चेलों के विषय में कहा था, मत्ती १०:४० में कि "जो तुम्हें ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है।" सो प्रेरितों द्वारा लिखी बातें, जिन्हें आज हम बाइबल के नए नियम में पढ़ते है, वास्तव में मसीह के अधिकार से लिखी गई बातें हैं। सो धार्मिक विषयों पर केवल परमेश्वर के वचन को ही हमें एकमात्र अधिकार मानना चाहिए। और यदि लोग आज वास्तव में ऐसा ही करेंगे तो आज भी वही मसीहीयत इस पृथ्वी पर कायम हो सकती है जैसे कि पहली सदी में थी – असम्प्रदायिक सच्ची और प्रेरितों के समय की मसीहीयत।

"आपने सुना होगा"
(८)

आपने कुछ लोगों को यह कहते भी सुना होगा कि हमें आज भी पुराने नियम की उन दस आज्ञाओं को मानना चाहिए । पुराना निमय, अनेक साम्प्रदायिक कलीसियाओं के मतानुसार, आज भी हमारे लिये परमेश्वर की इच्छा है । तौभी इब्रानियों ७:१२ से हमें यह शिक्षा मिलती है: "क्योंकि जब याजक का पद बदला जाता तो व्यवस्था का भी बदलाव अवश्य है ।" सो यदि मसीह आज हमारा महायाजक है जैसे कि बाइबल शिक्षा देती है, तो मूसा की व्यवस्था की बातें हम पर आज लागू नहीं हो सकतीं । कुछ लोगों का कहना है, कि मूसा की व्यवस्था के संस्कार, जैसे बलिदान चढ़ाना और धूप इत्यादि जलाना तो आज समाप्त हो गए हैं पर उसमें लिखी अन्य आज्ञाएं आज भी हमारे ऊपर लागू होती हैं । परन्तु बाइबल में इस प्रकार की कोई बात हमें नहीं मिलती जहां व्यवस्था में लिखी बातों को दो भागों में बांटा गया हो । लूका २:२१–२४ में जहां "शुद्ध होने की बलि चढ़ाने का वर्णन मिलता है" व्यवस्था को परमेश्वर की व्यवस्था तथा मूसा की व्यवस्था कहकर सम्बोधित किया गया है । रोमियों ७:४ में लेखक ने कहा था, "सो हे मेरे भाइयो, तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए ।" गलतियों २:२१ में पौलुस ने कहा था, "मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता ।" गलतियों ३:२४ के अनुसार व्यवस्था एक शिक्षक की तरह थी जिसका काम लोगों को मसीह के पास तक लाना था, और अब मसीह के आने के बाद, व्यवस्था की आवश्यकता लोगों को नहीं रही । अब हम यीशु के आधीन हैं । (यूहन्ना १२:४८) । अब हम मूसा की व्यवस्था की आधीनता में नहीं हैं । अब हम "मसीह की व्यवस्था" अर्थात उसके नए नियम की शिक्षाओं के आधीन

हैं। (गलतियों ६:२) व्यवस्थाविवरण ५:३ में लिखे इन शब्दों को याद रखिए, जहां लेखक ने यहूदियों को स्मरण कराके कहा था कि "इस वाचा को यहोवा ने हमारे पितरों से नहीं,हम ही से बांधा जो यहां आज के दिन जीवित हैं।" पुरानी व्यवस्था या वाचा को परमेश्वर ने उन यहूदियों के लिये दिया था जिनसे उस समय मूसा बातें कर रहा था। जिस प्रकार दो व्यक्तियों के बीच में की गई प्रतिज्ञा उन्हीं दो व्यक्तियों पर लागू होती है अर्थात् अन्य लोग उस में शामिल नहीं होते, वैसे ही उस वाचा में हम भागीदार नहीं हो सकते जिसे परमेश्वर ने उस समय उन यहूदियों के साथ बांधा था जिन्हें वह मिश्र देश के दासत्व से निकालकर लाया था। रोमियों २:१६ के अनुसार पौलुस ने कहा था,"जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।"सो हमारा न्याय पुराने नियम में लिखी बातों से या दस आज्ञाओं से नहीं होगा, पर मसीह के सुसमाचार के अनुसार होगा।

"आपने सुना होगा"
(६)

आपने कुछ लोगों को कहते सुना होगा, कि मसीह की कलीसिया के लोग पुराने नियम पर विश्वास नहीं करते। किन्तु यह बात सच नहीं है। पुराने नियम के प्रति व्यवहार के विषय में दो प्रकार के मत हैं। कुछ लोगों का विचार है कि बाइबल का पुराना नियम और नया नियम दोनों ही एक समान माने जाने चाहिए। उनका मत है कि दोनों की बातों को मानकर ही मनुष्य को उद्धार मिलेगा। जो लोग इस मत के हैं, उनके विचार में मसीह की कलीसियाएं पुराने नियम का आदर नहीं करती हैं। दूसरा मत यह है कि आज हमें पुराने नियम की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। वे सोचते हैं कि पुराने नियम को पढ़ने की भी कोई आवश्यकता आज नहीं है। क्योंकि, वे कहते हैं कि

पुराना नियम अब समाप्त हो चुका है और अब हम नए नियम में रहते हैं, सो पुराने नियम को क्यों पढ़ा जाए? इस विषय में अब हम परमेश्वर की इच्छा को देखेंगे।

सबसे पहले हम यह देखते हैं, कि पुराने नियम की व्यवस्था को परमेश्वर ने समाप्त कर दिया है। रोमियों ७:४ में इस सम्बन्ध में हम यह पढ़ते हैं कि "तुम भी मसीह की देह के द्वारा व्यवस्था के लिये मरे हुए बन गए. . . " फिर, पौलुस ने गलतियों ३:१८ में यूं कहा था: "तब फिर व्यवस्था क्या रही ? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई, कि उस वंश के आने तक रहे, जिसकी प्रतिज्ञा दी गई थी. . .. " वह वंश, गलतियों ३:१६ के अनुसार मसीह था। और अब गलतियों ३:२४-२५ पर ध्यान करें, जहां हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारी शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो अब हम शिक्षक के आधीन न रहे।" फिर इफिसियों २:१५ में यूं लिखा है: "और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिसकी आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया. . ." और कुलुस्सियों २:१४ में लिखा है कि "विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है।" इसी अध्याय के १६ पद में लेखक यूं कहता है, "इसलिये खाने-पीने या पर्ब्ब या नए चांद या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे।" और अगले पद में वह आगे यूं कहता है "क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया है।" और गलतियां ५:४ में पौलुस यूं कहता है कि "तुम जो व्यवस्था, के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।" नए नियम की इब्रानियों नाम की पत्री विशेष रुप से इसी तथ्य को प्रमाणित करने के लिये लिखी गई थी, कि अब पुराने नियम की व्यवस्था का लोगों पर कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि मसीह के क्रूस पर मरने के बाद अब उसका नया नियम लागू हो चुका है। पुराना नियम परमेश्वर की व्यवस्था थी, किन्तु नया नियम आज मसीह की व्यवस्था है।

"आपने सुना होगा"
(१०)

आपने सुना होगा कि कुछ लोगों का कहना है कि पहली शताब्दि के मसीही लोगों की तरह आज भी लोग अन्य–अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं। जो लोग ऐसा विश्वास रखते हैं, वे अपनी बात को सिद्ध करने के लिये मरकुस १६:१७–१८ का हवाला देते हैं। वे १८ पद में लिखे इन शब्दों पर ज़ोर देते हैं जहां लिखा है कि वे "नई–नई भाषा बोलेंगे।" पर उसी जगह पर कुछ अन्य चिन्हों का वर्णन भी हमें मिलता है, जो विश्वासियों में, अन्य–अन्य भाषाओं के बोलने के साथ–साथ पाए जाते थे। क्या वे लोग उन चिन्हों को भी मानते हैं? क्या वे दुष्टात्माओं को निकाल सकते हैं? क्या वे सांपों को उठा सकते हैं? क्या वे ज़हर या कोई अन्य नाशक वस्तु पी सकते हैं? क्या वे बीमारों पर हाथ रखकर उन्हें चंगा कर सकते हैं? यदि वे मरकुस १६:१७,१८ में लिखे एक चिन्ह को कर सकते हैं, तो फिर वे अन्य सभी चिन्हों को भी अवश्य ही प्रमाणित कर सकते हैं!

प्रेरितों के कामों की पुस्तक के दूसरे, आठवें, दसवें, और उन्नीसवें अध्यायों में हम कुछ ऐसी घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं जिनमें लोगों ने अन्य–अन्य भाषाओं में बोला था। उन्हें यह सामर्थ स्वयं परमेश्वर ने दी थी, और प्रेरितों द्वारा उनके ऊपर हाथ रखे जाने से उन्हें अन्य–अन्य भाषाएं बोलने की सामर्थ प्राप्त हुई थी। किन्तु इन सभी घटनाओं में हम यह पाते हैं कि उन सभी लोगों को सामुहिक रुप से अन्य–अन्य भाषाएं बोलने की सामर्थ दी गई थी, व्यक्तिगत रुप से एक–एक को नहीं, जैसे कि आज कहा जाता है। ऐसे ही यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि उन सभी घटनाओं में उन लोगों को अन्य–अन्य भाषाएं बोलने का दान स्वयं परमेश्वर अपनी इच्छा से लोगों को देता था। कहीं पर भी बाइबल में हम यह नहीं पढ़ते की इस दान को प्राप्त करने के

लिये लोगों ने प्रर्थना की थी ।

"आपने सुना होगा"
(११)

कुछ लोगों को आपने यह कहते भी सुना होगा कि लोगों का उद्धार केवल तभी होता है जब पवित्रात्मा उनके मन में कुछ विशेष काम करता है । यह तो ठीक है,कि पवित्रात्मा की सामर्थ के बिना किसी भी मनुष्य का उद्धार नहीं हो सकता । पर बात देखने की यह है, कि मनुष्य के उद्धार में पवित्र आत्मा किस प्रकार से कार्य करता है ।

कुछ लोगों का ऐसा मत है कि प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही पापी है,. इसलिये वह स्वयं अपने उद्धार के लिये कुछ भी नहीं कर सकता, पर आश्चर्यजनक रुप से प्रेरमेश्वर का आत्मा जिस व्यक्ति के भीतर काम करता है, केवल वही व्यक्ति उद्धार पाएगा । दूसरी ओर, बाइबल हमें यह सिखाती है कि परमेश्वर के वचन के प्रचार के द्वारा लोग बचाए जाते हैं । जब लोग परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर विश्वास लाकर परमेश्वर के वचन की बातें मानते हैं केवल तभी उनका उद्धार होता है । याकूब १:१८ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं "उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया. . . " परमेश्वर का सत्य वचन ही वह बीज है जो मनुष्यों के मनों में बोया जाता है, और जिसके द्वारा मनुष्य का आत्मिक जन्म होता है । इसी अध्याय की इक्कीसवीं आयत में याकूब कहता है कि "उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है ।" अब यह वचन हृदयों में किस प्रकार बोया जाता है? पौलुस कहता है, १ कुरिन्थियों १:२१ में कि ". . .परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करनेवालों को उद्धार दे ।" सो वचन का प्रचार करके वचन को हृदयों में बोया जाता है । यही बात हम

कुरनेलियुस,जिस पर पवित्र आत्मा उतरा था, की घटना में भी देखते हैं । प्रेरितों ११:१४ के अनुसार, परमेश्वर ने कुरनेलियुस से कहा था कि वह पतरस को अपने यहां बुलवा ले क्योंकि ,"वह तुम से ऐसी बातें कहेगा, जिन के द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा ।"

अब यदि वचन का प्रचार किए बिना, पवित्र आत्मा स्वयं ही लोगों के मनों में कार्य करके उनका उद्धार करता है, तो फिर कुरनेलियुस को वचन को सुनने की कोई आवश्यकता नहीं थी, और यदि ऐसा वास्तव में होता तो फिर परमेश्वर तो पक्षपाती बन जाता तथा जिस पर चाहता उस पर पवित्रात्मा भेजकर उसका उद्धार कर देता और बाकी लोगों को छोड़ देता । और फिर यदि ऐसा होता तो परमेश्वर के वचन के द्वारा हम सब का न्याय किस प्रकार होगा ? यदि परमेश्वर का पवित्र आत्मा ही मनुष्य में आकर स्वयं उनका उद्धार करता है, तो फिर वचन का प्रचार ही क्यों किया जाए ? रोमियों १:१६ में पौलुस ने कहा था कि "मैं सुसमाचार (को प्रचार करने) से नहीं ले जाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये . . . .उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है ।"

"आपने सुना होगा"
(१२)

कुछ लोगों का कहना है कि जिस प्रकार कलीसिया के आरम्भ में लोग अन्य-अन्य भाषाएं बोलते थे, उसी प्रकार आज भी लोग बोलते हैं । किन्तु बाइबल इस विषय में क्या कहती है? सबसे पहले, इस सम्बन्ध में, हम बाइबल के उन पदों पर ध्यान दें जिन में आत्मिक बरदानों की चर्चा की गई है और देखें कि वहां अन्य-अन्य भाषाएं बोलने के सम्बन्ध में क्या कहा गया है । १ कुरिन्थियों १२:२८-३० में हम देखते हैं, कि भाषाएं बोलने के बरदान को सबसे अन्त में दिया गया है । जबकि रोमियों १२:६-८

तथा इफिसियों ४:११–१२ में इस बरदान की चर्चा तक भी नहीं की गई है। १ कुरिन्थियों १४:६ के अनुसार पौलुस की दृष्टि में उपदेश देना अन्यान्य भाषा बोलने से अधिक ज़रुरी था। इसी अध्याय की १४–१९ आयतों में लिखा है, कि हमारी आराधना में प्रत्येक बात समझ के साथ की जाए – अर्थात जिसे समझा जा सके। फिर २०–२५ पदों में पौलुस उन से कहता है कि उनमें से जो लोग अन्यान्य भाषा बोलने पर अधिक बल दे रहे थे वे आत्मिक रुप से छोटे बालकों के समान थे। १ कुरिन्थियों १२:३१ में लेखक कहता है कि जिन आत्मिक बरदानों की धुन में वे लोग थे उन से भी अधिक उत्तम एक और वस्तु है और १३ अध्याय की पहली आयत में उस उत्तम वस्तु का वर्णन करके वह कहता है, कि वह सबसे उत्तम वस्तु है : प्रेम।

कुछ लोगों का कहना है कि जो व्यक्ति आज अन्यान्य भाषा बोलता है उस से यह प्रमाणित होता है कि उस व्यक्ति को पवित्रात्मा का बपतिस्मा मिला है। परन्तु यदि यह सच है, तो फिर इसका अर्थ यह है कि हमारे आत्मिक होने का प्रमाण एक शारीरिक चिन्ह से मिलता है। किन्तु बाइबल स्पष्ट रुप से यह बताती है कि जिस व्यक्ति में आत्मिक परिवर्तन होता है उस में आत्मिक बातें वर्तमान होती हैं। यदि हम ने पवित्रात्मा पाया है, तो उसके फल भी हम में अवश्य ही वर्तमान होंगे जैसे कि हम गलतियों ५:२२–२३ में पढ़ते हैं।

एक अन्य बात इस सम्बन्ध में यह भी कही जा सकती है, कि जो लोग अन्यान्य भाषा बोलने पर या आश्चर्यकर्मो पर अधिक बल देते हैं वे स्वयं पवित्रात्मा से भी अधिक उन वस्तुओं को महिमान्वित करते हैं। जबकि हमें मसीह को जो हमारे पापों के लिये क्रूस पर चढ़ाया गया था सबसे अधिक महिमान्वित करना चाहिए, उस पर और उसकी शिक्षाओं पर बल देना चाहिए।

"आपने सुना होगा"
(१३)

आपने यह भी कहते कुछ लोगों को सुना होगा कि मनुष्य के उद्धार से कलीसिया का कुछ सम्बन्ध नहीं है। यह सच है कि मनुष्य का उद्धार कलीसिया नहीं परन्तु परमेश्वर ही करेगा। किन्तु प्रश्न इस बात का है, कि क्या परमेश्वर उन लोगों का भी उद्धार करेगा जो उसकी कलीसिया में नहीं हैं जिसे मसीह ने बनाया था? बाइबल इस विषय में क्या कहती है?

अपनी कलीसिया के साथ मसीह का सम्बन्ध इस बात का सबूत है कि उसकी कलीसिया बड़ी ही महत्वपूर्ण है। पौलुस इफिसियों ५:२५ में लिखकर कहता है, "हे पतियो, अपनी–अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके उसके लिये अपने आप को दे दिया।" ऐसे ही प्रेरितों २०:२८ में हम यूं पढ़ते हैं कि,"परमेश्वर की कलीसिया. . . .जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।" अब फिलिप्पियों २:५ में लिखी इस बात को भी स्मरण रखें कि,"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।" हमे कलीसिया से वैसा ही प्रेम रखना चाहिए जैसा की मसीह का था। यदि कलीसिया को मोल लेने के लिये मसीह ने अपने आप को दे दिया, तो फिर इसका अर्थ यह है कि उद्धार पाने के लिये हम सब को उसकी कलीसिया में होना चाहिए।

इसी प्रकार हम यह भी देखते हैं, कि जो व्यक्ति मसीह की कलीसिया में नहीं है वह मसीह में भी नहीं है। कलीसिया मसीह की देह है और वह उसका सिर है। पौलुस कुलुस्सियों १:१८ में कहता है कि "वही देह अर्थात कलीसिया का सिर है।" उसी देह के सब मसीही अंग हैं। १ कुरिन्थियों १२:२७ में लेखक कहता है, "इसी प्रकार तुम सब मिलकर मसीह की देह हो, और अलग–अलग उसके अंग हो।" जिसका सम्बन्ध देह के साथ नहीं है उसका

सम्बन्ध सिर के साथ भी नहीं हो सकता । सो मसीह में आने के लिये मनुष्य को क्या करना चाहिए? गलतियों ३:२७ में पौलुस कहता है, "तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहन लिया है।" मसीह में आने के लिये बपतिस्मा लिया जाता है । इफिसियों १:३ में कही गई इस बात पर भी ध्यान दें, जहां लिखा है,"कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है । सब प्रकार की आशीष मसीह में है और मसीह में होने का अभिप्राय मसीह की देह अर्थात उसकी कलीसिया में होने से है ।

"आपने सुना होगा"
(१४)

शायद आपने सुना होगा कि कुछ लोग कहते हैं कि जो लोग मसीह की कलीसिया में हैं वे समझते हैं कि केवल वही सही हैं और बाकी सब गलत हैं । ऐसा वे लोग कहते हैं जो अपनी गलतियों को मानना नहीं चाहते और उन लोगों का उपहास करते हैं जो आज इस बीसवीं सदी में पहली शताब्दि की मसीहयत को पुनस्थापित करना चाहते हैं । किन्तु जो लोग गलती में हैं उन्हें चाहिए कि वे अपनी गलती को मानें और सही रास्ते पर आ जाएं । रोमियों १४:२३ में पौलुस ने कहा था कि "जो कुछ विश्वास से नहीं है वह पाप है।" इस का अर्थ यह है कि यदि आप धार्मिक दृष्टिकोण से किसी बात को मान रहे हैं और जानते भी हैं कि वह बात सही नहीं है, तो फिर आप पाप में हैं । जो लोग मसीह की कलीसियाओं में हैं वे सब मनुष्य ही हैं और उन से गलतियां हो सकती हैं । पर हम एक बात अवश्य मानते हैं, और वह यह कि केवल बाइबल में लिखी बातें ही सही हैं और जो लोग उस में लिखी बातों पर नहीं चलते हैं वे सब गलत हैं । यदि दो व्यक्ति अलग-अलग शिक्षाएं देते हैं तो या तो उन में से एक गलत होता है या फिर दोनों ही गलत होते हैं । पृथ्वी या तो गोल है या फिर

गोल नहीं है । बपतिस्मा लेना या तो आवश्यक है या फिर आवश्यक नहीं है । कैसे हम जान सकते हैं कि कोई बात सही है या नहीं? मनुष्य के मतानुसार नहीं । यिर्मयाह १०:२३ में लिखा है: "हे यहोवा मैं जान गया हूँ कि मनुष्य का मार्ग उसके वश में नहीं है, मनुष्य चलता तो है, परन्तु उसके डग उसके अधीन नहीं हैं। केवल बाइबल से ही हम यह जान सकते हैं कि सही क्या है। पौलुस ने २ तीमुथियुस ३:१६,१७ में लिखकर कहा था, "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है , और उपदेश, और समझाने और सुधारने,और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है । ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए । " हकीकत यह है,कि अधिकांश लोग स्वयं बाइबल को न पढ़कर अपने प्रचारकों की बातों पर विश्वास करते हैं । वे इस बात पर कभी विचार नहीं करके देखते कि क्या जिस प्रकार की धार्मिक बातों पर वे चल रहे हैं और जिन कलीसियाओं के वे सदस्य हैं, क्या उन के विषय में बाइबल में लिखा है या नहीं ? मैं आप से आग्रह करता हूँ कि आप अपनी बाइबल को पढ़िए, और यदि आप ऐसा करेंगे तो आप यह अनुभव करेंगे कि साम्प्रदायीक मसीहीयत बाइबल की शिक्षा के विरूद्ध है ।

"आपने सुना होगा"
(१५)

आपने यह भी कहते सुना होगा कि मसीह की कलीसिया भी एक सम्प्रदाय है । इस विषय में हमने पहले भी देखा है, कि मसीह की कलीसिया असामप्रदायिक है । न तो उसका कोई साम्प्रदायीक नाम है और न ही वह किसी सामप्रदायिक धर्मसार को मानती है । मसीह की कलीसिया की आराधना भी बिल्कुल बाइबल के नए नियमानुसार है । हम प्रभु के दिन उपासना के लिये एकत्रित होते हैं । जैसा कि प्रेरितों २०:७ में हम पढ़ते हैं, "सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने (प्रभु भोज में भाग

लेने) के लिए इकट्ठे हुए . . ." १ कुरिन्थियों १६:१–२ तथा प्रकाशितवाक्य १:१० को भी देखें । ऐसे ही हम प्रार्थना करते हैं, जैसे कि प्रेरितों २:४२; १ थिस्सलुनीकियों ५:१७ तथा १ कुरिन्थियों १४:१५ में पढ़ते हैं । हम गीत और भजन गाते हैं पर साथ में बाजे नहीं बजाते । क्यों? क्योंकि नए नियम में इसकी न तो कोई आज्ञा है और न ही कोई ऐसा उदाहरण है । देखिए: १ कुरिन्थियों १४:१५; इफिसियों ५:१६; कुलुस्सियों ३:१७; इब्रानियों २:१२ तथा १३:१५ । हम प्रत्येक सप्ताह के पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेते हैं । क्यों? जैसा कि ऊपर प्रेरितों २०:७ से हमने देखा है कि आरम्भ में मसीही लोग इसी उद्देश्य से एकत्रित होते थे । १ कुरिन्थियों ११:२० में लिखा है,"सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो **यह** प्रभु–भोज खाने के लिये नहीं ।" यद्यपि यहां पौलुस उन्हें डांट लगाकर कह रहा था कि वे प्रभु–भोज को अनुचित रीति से ले रहे थे, पर इससे यह बात प्रत्यक्ष होती है कि जब वे इकट्ठे होते थे तो वे प्रभु–भोज लेते थे । इसी प्रकार सप्ताह के पहले दिन जब हम उपासना के लिये एकत्रित होते हैं तो हम अपना–अपना चंदा भी देते हैं जैसा कि १ कुरिन्थियों १६:१–२ में लिखा है । ऐसे ही हम एकत्रित होकर बाइबल की बातों को सुनते हैं, जैसे कि प्रेरितों २:४२ तथा २तीमुथियुस ४:२ से विदित है ।

मसीह की कलीसियाओं का संगठन भी असाम्प्रदायिक है । मसीह की कलीसियाओं का कोई विश्व–संगठन या हेड–क्वार्टर नहीं है । कलीसिया में न कोई पोप है और न ही कार्डिनल या आर्चबिशप या कौंसिल है । मसीह की कलीसिया में क्लेरजी, सायनाड, फ़ादर और "बिशप साहब" जैसी चीज़ें नहीं हैं । मसीह की सारी कलीसियाएं स्वाधीन हैं–वे सब बाइबल की शिक्षानुसार चलती हैं । प्रत्येक कलीसिया में उसके अपने बुर्ज़ुग और सेवक होते हैं (प्रेरितों २०:१७; १ तीमुथियुस ३:१–७; तीतुस १:५; १ तीमुथियुस ३:८–१३) । बुज़ुर्गों को ही बाइबल में रखवाले, चरवाहे और प्राचीन भी कहा गया है । इन बातों के बारे में अपनी बाइबल में से पढ़कर अवश्य देखें, क्योंकि इनका सम्बन्ध हमारी आत्माओं से है ।

"आपने सुना होगा"
(१६)

जैसा कि कहा गया है, कि आपने सुना होगा कि कुछ लोग मसीह की कलीसिया को भी एक सम्प्रदाय ही कहते हैं। रोमियों १६:१६,१७ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं,"तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार। अब हे भाईयो, मैं तुम से बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उन से दूर रहो।" यहां "मसीह की कलीसियाओं" का तात्पर्य अनेक साम्प्रदायीक कलीसियाओं से नहीं है, पर उस एक कलीसिया की अनेक मन्डलियों से है जो मसीह के नाम से कहलाती हैं और एक ही विश्वास और एक ही मत की हैं। सो मसीह की कलीसिया एक सम्प्रदाय कदापी नहीं है।

मसीह की कलीसिया के सारे सदस्य केवल मसीही नाम से कहलाते हैं। १ पतरस ४:१६ में लिखा है,"पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" मसीही लोगों को बाइबल में पवित्र लोग, भाई, और याजक कहकर भी सम्बोधित किया गया है। ऐसे ही, मसीह की कलीसिया को कलीसिया (इफिसियों ३:१०), परमेश्वर की कलीसिया (१कुरिन्थियों १:२), और पहलौठे की कलीसिया (इब्रानियों १२:२३) कहा गया है। मसीह की कलीसिया के असाम्प्रदायिक होने का एक प्रमाण यह भी है कि उसके पास बाइबल के अतिरिक्त धर्मसार के रुप में दुआ–ए आम, इन्तिखाबी सबक, या कैटेकिज़म जैसी कोई अन्य पुस्तक नहीं है। केवल मसीह और उसका नया नियम ही उसकी कलीसिया का धर्मसार है। हम सब बातें केवल बाइबल के अनुसार ही करते हैं। जैसे कि लिखा है कि ,"हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म

की शिक्षा के लिये लाभदायक है ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (२ तीमुथियुस ३:१६,१७)। २ पतरस १:३ में लिखा है, "क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है।" प्रकाशितवाक्य ३:८ में यीशु ने फिलेदिलफिया में कलीसिया की प्रशंसा करके यूं कहा था, "मैं तेरे कामों को जानता हूं . . . और तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया।" आज भी प्रभु यीशु को ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है जो उसके नाम को और उसके वचन को मानते हैं।

"आपने सुना होगा"
(१७)

आपने यह कहते सुना होगा कि उद्धार पाने के लिये बपतिस्मा लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। कहा जाता है कि बपतिस्मा तो केवल एक निशान मात्र है। हो सकता है कि आपने स्वयं भी किसी प्रचारक से बपतिस्मा लिया हो जिसने यह कहकर आपको बपतिस्मा दिया हो कि आप बपतिस्मा इसलिये ले रहे हैं, "क्योंकि परमेश्वर ने मसीह के कारण आपके पापों को क्षमा कर दिया है।" लेकिन ऐसी शिक्षा बाइबल की नहीं है। बाइबल की शिक्षानुसार, बपतिस्मा किस लिये लिया जाना चाहिए? यीशु ने मरकुस १६:१६ में कहा था,"जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" पतरस ने, प्रेरितों २:३८ में, लोगों से कहा था कि मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। पतरस ने यह बात पवित्रात्मा की प्रेरणा से कही थी। फिर हम बाइबल में पढ़ते हैं कि जब शाऊल (पौलुस) दमिश्क में था तो हनन्याह ने उसके पास आकर उससे कहा था कि "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और

उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल ।" (प्रेरितों २२:१६) । अब इससे अधिक स्पष्ट और क्या बात कही जा सकती है? यहां हमें बताया गया है कि हमारे पाप कब धुलते हैं । फिर, प्रकाशितवाक्य १:५ में यूहन्ना हमें बताता है कि मनुष्य के पाप किस प्रकार धुलते हैं, लिखा है, ". . . .जिस ने अपने लोहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है ।" पानी से हमारे पाप नहीं धुल सकते । १ पतरस ३:२१ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "और उसी पानी का दृष्टान्त भी अर्थात बपतिस्मा यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा तुम्हें बचाता है (उस से शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है ।)" केवल बपतिस्मा ही ले लेने से किसी भी व्यक्ति का उद्धार नहीं हो सकता । परन्तु बपतिस्मा लेने से पहले विश्वास करना, और मन फिराना और मसीह को परमेश्वर का पुत्र मानना भी आवश्यक है ऐसा करके बपतिस्मा लेने से मनुष्य का सम्बन्ध मसीह और उसके लोहू के साथ हो जाता है और इस प्रकार मसीह का लोहू उसके पापों को धो डालता है । यदि आप ने सही उद्देश्य के लिये अभी तक भी बपतिस्मा नहीं लिया है तो देरी न करें परमेश्वर के वचन के साथ आनाकानी करना सही नहीं है । मनुष्यों की शिक्षाओं पर चलकर आपका उद्धार नहीं हो सकता ।

"आपने सुना होगा"
(१८)

आपने अकसर यह कहते सुना होगा कि जो डाकू यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था उसका बपतिस्मा नहीं हुआ था, तौभी उसको उद्धार मिला था, इसलिये उद्धार पाने के लिये आज हमें भी बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है । इस सम्बन्ध में, सबसे पहली बात तो हम यह कह सकते हैं, कि यह कैसे कहा जा सकता है कि उसका बपतिस्मा हुआ ही नहीं था? उसे बहुत

सी बातों का पता था। उसके मन में यीशु के प्रति आदर था। उसे यीशु के राज्य के बारे में मालूम था और उस ने दूसरे डाकू को, यीशु का निरादर करते देख डांटा था। इस से पहले, लूका ७:२९–३० में हम पढ़ते हैं कि सब तरह के लोगों ने फरीसियों और व्यवस्थापकों को छोड़कर यूहन्ना के पास आकर उससे बपतिस्मा लिया था।

दूसरी बात इस सम्बन्ध में यह कही जा सकती है कि जब यीशु स्वयं पृथ्वी पर था तो उसे पाप क्षमा करने का अधिकार था। इस सम्बन्ध में मत्ती ९:६ को देखें। पर जब यीशु क्रूस के ऊपर मरा था और उसने वहां अपने लोहू को बहाया था तो वहां से उसके नए नियम में लिखी बातें लागू हो गई थीं। इब्रानियों ९:१४,१५ से हम यूं पढ़ते हैं,"तो मसीह का लोहू जिसने अपने आप को सनातन आत्मा के द्वारा परमेश्वर के सामने निर्दोष चढ़ाया तुम्हारे विवेक को मरे हुए कामों से क्यों न शुद्ध करेगा, ताकि तुम जीवते परमेश्वर की सेवा करो। और इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है।" और फिर, १६ पद में लेखक आगे इस प्रकार कहता है,"क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धनेवाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती।" इन पदों से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि जिस समय यीशु और उस डाकू की मृत्यु हुई थी उस समय मूसा की पुरानी वाचा कायम थी। किन्तु आज हम सब, यीशु की मृत्यु के बाद उसके नए नियम की वाचा के आधीन हैं। वह वाचा जो उसकी मृत्यु के बाद कायम हुई थी यदि इब्रानियों की पत्री को आप पढ़ेंगे तो आप निश्चय ही यह जान लेंगे कि आज आप को मूसा की व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। आज हमें यीशु के नये नियम को मानना चाहिए। जैसे उसमें लिखा है वैसे ही हमें उपासना करनी चाहिए और उद्धार पाने के लिये जिन आज्ञाओं को मानने के लिये उस में कहा गया है उन्हीं आज्ञाओं को आज हमें मानना चाहिए।

"आपने सुना होगा"
(१६)

आपने सुना होगा, कि कहा जाता है कि परमेश्वर की स्तुति में, उसकी उपासना में गाते समय यदि बाजों को बजाया जाए तो उस से कुछ अंतर नहीं पड़ता। किन्तु क्या यह सही है, क्या बाइबल की यही शिक्षा है? प्रभु यीशु के नए नियम में हम कई जगह पर पढ़ते हैं कि यीशु के अनुयायीयों ने गीत और भजन गाकर उसकी प्रशंसा की थी, पर एक भी स्थान पर हम ऐसा नहीं पढ़ते कि उन्होंने किसी भी प्रकार के बाजों का कभी इस्तेमाल किया हो। बाइबल के नए नियम में जितनी भी आयतें हमें मिलती हैं जिनमें गीत गाने का वर्णन हुआ है उन सभी को यहां हम प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन से यह स्पष्ट देखा जा सकता है, कि परमेश्वर को हमारे साज़ों ओर बाजों की उपासना नहीं परन्तु हमारी उपासना की इच्छा है। "फिर वे भजन गाकर ज़ैतून पहाड़ पर गए।" (मत्ती २६:३०) । "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुये परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बन्धुए उनकी सुन रहे थे" (प्रेरितों १६:२५) "इसलिये मैं जाति–जाति में तेरा धन्यवाद करुंगा और तेरे नाम के भजन गाऊंगा।" (रोमियों १५:६) ". . . मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा।" (१ कुरिन्थियों १४:१५)। "और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने–अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्त्तन करते रहो।" (इफिसियों ५:१६) "मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ और अपने–अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिये भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।" (कुलुस्सियों ३:१६)। "सभा के बीच में मैं तेरा भजन गाऊंगा।" (इब्रानियों २:१२)। "यदि तुम में कोई दुखी हो तो वह प्रार्थना करे: यदि आनन्दित हो तों वह स्तुति के

भजन गाए ।" (याकूब ५:१३) । "और वे यह नया गीत गाने लगे. . . .एक नया गीत गा रहे थे. . . और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत, और मेम्ने का गीत गा–गाकर कहते थे. . . " (प्रकाशितवाक्य ५:६, १४:३, १५:३) । नए नियम में गाने के विषय में जो कुछ भी मिलता है उस सब का वर्णन हमें उपरोक्त पदों में मिलता है, और इन से हम यह देखते हैं कि मसीही लोग आरम्भ में गीत गाते थे और उसके साथ कुछ बजाते नहीं थे ।

किन्तु, क्या इस बात का कुछ विशेष महत्व है? जब हम बाइबल में कैन, और नादाब और अबीहू की आराधना के प्रति परमेश्वर के व्यवहार को देखते हैं, तो हम यह सीखते हैं कि परमेश्वर हम से एक ऐसी उपासना की इच्छा रखता है जिसकी आज्ञा उसने स्वयं दी है या जिसे उसने स्वयं हम पर प्रकट किया है । यूहन्ना ४:२४ में प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था,"परमेश्वर आत्मा है और अवश्य है कि उसके भजन करनेवाले आत्मा और सच्चाई से भजन करे ।" हमें इस सम्बन्ध में कि परमेश्वर आज हम से किस प्रकार की आराधना की इच्छा रखता है, सीखने की आवश्यकता है । परमेश्वर केवल वही आराधना स्वीकार करता है जो उसकी इच्छानुसार होती है ।

"आपने सुना होगा"
(२०)

"प्रभु की स्तुति में गाते समय यदि साथ में बाजों को बजाया जाए, तो इस से कुछ अंतर नहीं पड़ता" शायद ऐसा कहते लोगों को आपने सुना होगा । पिछले पाठ में हम ने इसी विषय पर बाइबल के नए नियम में मिलनेवाले प्रत्येक पद को देखा था और पाया था कि वहां हर जगह गाने के लिये कहा गया है, बजाने के लिये नहीं ।

जहां तक बाजों को बजाने की बात का प्रश्न है, उसके लिये केवल पुराने नियम में ही पढ़ा जा सकता है । किन्तु पुराने नियम

के बारे में पौलुस गलतियों ५:४ में इस प्रकार कहता है,"तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।" यहां मसीही लोगों से पौलुस यह कह रहा था, कि यदि धार्मिक बातों के सम्बन्ध में वे मूसा की व्यवस्था को मानना चाहते हैं तो फिर वे मसीह से अलग हैं और उसके अनुग्रह से गिर गए हैं। यदि यह बात उस समय सच थी, तो क्या आज भी उन लोगों के लिये, जो पुराने नियम की बातों पर चलना चाहते हैं, यह बात वैसे ही सच नहीं है? अनेकों लोग आज इस बात से परीचित नहीं हैं कि मसीही आज मूसा के पुराने नियम के आधीन नहीं हैं। कुलुस्सियों २:१४ में पौलुस ने कहा था, "और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर, और हमारे विरोध में था मिटा डाला और उसको क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया।" यहां उसके कहने का अभिप्राय इस बात से है, कि जब यीशु क्रूस के ऊपर मरा था तो मूसा की व्यवस्था का उस समय अंत हो गया था। इब्रानियों ८:६ में लिखा है, "क्योंकि वह और भी उत्तम वाचा का मध्यस्थ ठहरा, जो और उत्तम प्रतिज्ञाओं के सहारे बान्धी गई है।" किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें आज पुराने नियम की कोई आवश्यकता नहीं है। पुराने नियम का अपना एक विशेष महत्व है, जिसके विषय में हमें रोमियों १५:४ में मिलता है। किन्तु आज यदि कोई परमेश्वर की स्तुति में बाजों का उपयोग इसलिये करना चाहता है क्योंकि दाऊद ने पुराने नियम में किया था, तो फिर उसे पशुओं के बलिदान भी करने चाहिए, पुराने नियम के त्योहारों को भी मानना चाहिए, शनिवार को उपासना का दिन मानना चाहिए और धूप इत्यादि जलानी चाहिए। क्योंकि यदि एक चीज़ को वहां से लिया जा सकता है तो फिर अन्य बातों को भी मानना चाहिए पर यदि आज कोई बाजों का इस्तेमाल इसलिये करना चाहता है क्योंकि वह सोचता है कि स्वर्ग में उनका इस्तेमाल किया जाएगा, तो फिर उसे ब्याह – शादी की रस्म से इन्कार करना होगा, क्योंकि बाइबल में लिखा है कि स्वर्ग में ब्याह– शादी नहीं होगी बात वास्तव में यह है, कि यदि हम केवल परमेश्वर को ही प्रसन्न करना चाहते हैं अपने जीवन और अपनी उपासना से, तो हमें उसके वचन पर बिना कुछ जोड़ और बिना उसमें से कुछ घटाए,

उसकी इच्छानुसार चलना चाहिए ।

"आपने सुना होगा"
(२१)

आपने सुना होगा, कि कहा जाता है कि मनुष्यों के पास यह अधिकार है कि धार्मिक दृष्टिकोण से वे कुछ भी मान सकते हैं । यह शैतान की एक युक्ति है । प्रत्येक मनुष्य के पास यह अधिकार है कि वह किसी भी धर्म को चुन सकता है । यह संविधान में लिखा है । परन्तु क्या हमारा न्याय संविधान के द्वारा होगा? नहीं । यीशु ने, यूहन्ना १२:४८ में कहा था कि,"जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसको दोषी ठहरानेवाला तो एक है अर्थात जो वचन मैंने कहा है वही उस दिन उसे दोषी ठहराएगा ।" यदि आपके पास यह अधिकार है कि आप धार्मिक दृष्टिकोण से गलत हो सकते हैं, तो किस बात के विषय में गलत होने का अधिकार आप के पास है? क्या परमेश्वर में विश्वास करने के बारे में गलत होने का अधिकार है आप के पास? नहीं । इब्रानियों ११:६ में लिखा है "क्योंकि विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है ।" फिर, क्या मसीह में विश्वास करने के विषय में गलत निर्णय करने का अधिकार आप के पास है? नहीं । यूहन्ना ८:२४ में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में करोगे ।" क्या आपके पास मसीह के सुसमाचार को न मानने का अधिकार है? नहीं । यीशु के बारे में इब्रानियों ५:८ में कहा गया है कि वह "अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदाकाल के उद्धार का कारण हो गया ।" क्या आप के पास मन न फिराने का अधिकार है? नहीं । प्रेरितों १७:३० में लिखा है, "परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है ।" क्या आपके पास मसीह यीशु को न मानने का अधिकार है? नहीं । क्योंकि, "उद्धार के लिये मुंह से अंगिकार किया जाता है," रोमियों

१०:१० में लिखा है। क्या आपके पास अधिकार है कि आप बपतिस्मा न लें। नहीं। प्रेरितों २:३८ में हमें यह आज्ञा मिलती है, कि "तुम में से हर एक अपने–अपने पापों कि क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले।" प्रेरितों २२:१६ में हनन्याह ने पौलुस से कहा था, कि "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" क्या कलीसिया के बारे में गलत होने का अधिकार आप को दिया गया है? नहीं। इफिसियों ४:४ में लिखा है कि "एक ही देह है।" पौलुस हमें कुलुस्सियों १:१८ में बताता है कि देह क्या है जहां वह कहता है कि "वही देह,अर्थात कलीसिया का सिर है।" अंत में, यूहन्ना के इन शब्दों को याद रखें जिन्हें उसने २ यूहन्ना ९ में यूं कहा था : "जो काई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं, जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी है।"

"आपने सुना होगा"
(२२)

आपने सुना होगा, कहा जाता है, कि परमेश्वर के अनुग्रह से गिरना या अलग होना असम्भव बात है। क्या यह शिक्षा सही है? इस विषय में इब्रानियों की पत्री से हम देखते हैं, कि लेखक यूं कहता है,"इस कारण चाहिए कि हम उन बातों पर जो हम ने सुनी हैं, और भी मन लगाएं, ऐसा न हो कि बहककर उन से दूर चले जाएं।" (इब्रानियों २:१) तीसरी आयत में लेखक कहता है कि हम लोग "ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर क्योंकर बच सकते हैं?" यदि हम बाइबल और मसीह से बहक कर दूर जा सकते हैं तो हम परमेश्वर के अनुग्रह से दूर हो सकते हैं। अब, इब्रानियों ३:१२ पर ध्यान दें: "हे भाइयों चौकस रहो कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी न मन हो, जो जीवते परमेश्वर से दूर

हट जाए।" ये बातें मसीही लोगों को लिखी गई थीं और बताती हैं कि अविश्वास के कारण वे परमेश्वर से दूर हो सकते हैं। क्या यह शिक्षा स्पष्ट नहीं है? इसी जगह अगले पद में यूं लिखा है, "बरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।" मसीही लोगों को चाहिए कि वे पाप के छल से खबरदार रहें। क्योंकि क्या कोई ऐसा सोच सकता है कि जिस व्यक्ति का हृदय कठोर है, उसका उद्धार होगा? फिर इब्रानियों ४:११ में लिखा है,"सो हम उस विश्राम में प्रवेश करने का यत्न करें, ऐसा न हो, कि कोई जन उन की नाई आज्ञा न मानकर गिर पड़े।" यहाँ लेखक के कहने का अर्थ यह है, कि जिस प्रकार आज्ञा न मानने के कारण इस्राईली कनान देश में प्रवेश न कर सके थे, ऐसे ही मसीही लोग भी उनकी तरह चलकर स्वर्ग से वंचित रह सकते हैं। और इब्रानियों १२:१५ में लिखा है, कि "ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो, कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए।" इस से स्पष्ट और कुछ नहीं कहा जा सकता। अंत में, हम गलतियों ५:४ से यह देखते हैं, कि "तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।" सो हम सीखते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह से मनुष्य गिर सकता है, और अपने उद्धार से वंचित हो सकता है।

"आपने सुना होगा"
(२३)

आपने सुना होगा इस विषय में कि कुछ लोग अन्यान्य भाषाओं में बोलते और आश्चर्यकर्म करते हैं। बाइबल इस सम्बन्ध में क्या कहती है? इस विषय में हम इफिसियों ४:७–१४ पर विचार करके देखते हैं कि इन पदों में निम्नलिखित बातों पर प्रकाश डाला गया है। ८ पद में यह बताया गया है कि आत्मिक बरदान कब दिये

गए थे । १२वें पद में दिखाया गया है कि किन लोगों को ये दान मिले थे । फिर ये बरदान क्यों दिये गए थे इस विषय में १२वें पद में मिलता है । और तेरहवें पद में दिखाया गया है कि उन्हें कब तक के लिये दिया गया था । यहां इन शब्दों,"जब तक", पर ध्यान देना आवश्यक है । तीन ऐसी बातों का वर्णन यहां हमें मिलता है, जिनसे हम यह देखते हैं कि कब तक के लिये इन बरदानों को दिया गया था, अर्थात, जब तक कि सब विश्वास में एक न हो जाएं, और जब तक परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और जब तक एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं । क्या इसका अभिप्राय इस बात से नहीं है कि आत्मिक बरदानों को उस समय तक के लिये दिया गया था जब तक कि कलीसिया को परमेश्वर का वचन लिखित रुप में पूर्ण रुप से न मिल जाए और जब तक कि कलीसिया आत्मिक दृष्टिकोण से सिद्ध न हो जाए?

जब न्यायालय में कोई मुकदमा चलता है, तो एक अपराध को सिद्ध करने के लिये कुछ गवाहों को पेश किया जाता है । उन्हीं गवाहियों के आधार पर मुकदमें का फैसला सुनाया जाता है । ऐसे ही मसीहीयत को भी कुछ गवाहों के आधार पर सिद्ध किया जा चुका है । जो प्रचार आरम्भ में प्रेरितों ने किया था उसे आश्चर्यकर्मों के द्वारा सिद्ध और दृढ़ किया गया था, उन्हीं बातों को बाद में परमेश्वर की पुस्तक, नए नियम, में लिख दिया गया था । इस कारण अब उन्हीं बातों को फिर आश्चर्यकर्मों के द्वारा सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है । पौलुस २ कुरिन्थियों ५:७ में कहता है कि,"हम रुप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं ।" यहां से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हम आज आश्चर्यकर्मों को देखकर नहीं चलते हैं पर उस विश्वास से चलते हैं जो परमेश्वर के वचन को सुनने से या पढ़ने से आता है । (रोमियों १०:१७) ।

"आपने सुना होगा"
(२४)

आपने यह भी सुना होगा, कि धार्मिक रुप से कोई किसी भी मार्ग पर चले, इससे कुछ अंतर नहीं पड़ता। और अन्त में तो सब एक ही जगह पर पहुंचेगे चाहे हमारे मार्ग क्यों न अलग–अलग हों। यह बात सुनने में तो ज़रुर अच्छी लगती है, पर बाइबल से इस बात की पुष्टि नहीं की जा सकती। पौलुस ने १ थिस्सलुनीकियों ५:२१ में कहा था कि "सब बातों को परखो।" क्या उपरोक्त शिक्षा या मत को बाइबल की बातों से परखकर सही पाया जा सकता है? जहां तक बाइबल की शिक्षा की बात है, बाइबल में केवल एक ही मार्ग को प्रकट किया गया है। बाइबल कहती है, कि उद्धार पाने का केवल एक ही मार्ग है।

हम देखते हैं कि जो लोग मसीह के पीछे चल रहे थे उन्हें एक मार्ग पर चलनेवाले कहकर सम्बोधित किया गया है। शाऊल के बारे में लिखा है कि उसने इस अभिप्राय की चिट्ठियां मांगीं "कि क्या पुरूष और क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बांधकर यरुशलेम में ले आए।" (प्रेरितों ९:२)।

प्रेरितों २२:४ में पौलुस अपने पिछले जीवन का हवाला देकर कहता है कि उसने "इस पंथ को यहां तक सताया कि उन्हें मरवा भी डाला।" फिर प्रेरितों २४:१४ में वह इस प्रकार कहता है "कि जिस पंथ को वे कुपन्थ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने बाप–दादों की सेवा करता हूं।"

आरम्भ में मसीहीयत को एक मार्ग के रुप में प्रस्तुत किया जाता था। इब्रानियों १०:१९ में लिखा है,"सो हे भाइयो जबकि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।" स्वयं यीशु ने कहा था कि "मार्ग मैं हूं" (यूहन्ना १४:६)। मैं यहां आप को यह दिखाने

का प्रयत्न कर रहा हूं कि मसीहीयत को एक मार्ग की तरह बाइबल में पेश किया गया है। मसीहीयत की यह धारणा आज की आधुनिक मसीहीयत से बहुत भिन्न है। इफिसियों ४:५ में पौलुस कहता है कि "एक ही विश्वास है।" यहूदा की पत्री के तीसरे पद में लिखा है कि "उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।" जैसा कि आज अलग-अलग प्रकार के विश्वासों की बात होती है, बाइबल में इसकी चर्चा नहीं मिलती। यहूदा कहता है, कि विश्वास हमेशा के लिये सौंपा गया था। अर्थात उसमें कोई जोड़ या घटाव न किया जाए। जैसा कि गलतियों १:८ में लिखा है कि "यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुम्हें सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए तो श्रापित हो।"

परमेश्वर का केवल एक ही मार्ग है। मेरा मार्ग और आपका मार्ग गलत हो सकते हैं। पर वह मार्ग जिसे हम सबको परमेश्वर ने दिया है गलत नहीं हो सकता, और यदि हम उद्धार पाकर परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं, तो हमें चाहिए कि हम उस मार्ग पर ही चलें जिसे परमेश्वर ने स्वयं हमें दिया है।

"आपने सुना होगा"
(२५)

अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कई जगह लोगों का ध्यान कुछ ऐसी बातों पर दिलाया था जिन्हें उन्होंने पहले सुना था, पर फिर यीशु ने उनका ध्यान अपनी ओर दिलाकर उनसे कहा था,"परन्तु मैं तुमसे कहता हूं।" आज हम बहुत सी ऐसी बातों के बारे में सुनते हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे बाइबल की शिक्षाएं हैं, परन्तु बहुत ही थोड़े लोग उन शिक्षाओं को बाइबल में लिखी बातों से परखकर देखने का प्रयत्न करते हैं। किसी भी शिक्षा को मान लेने से पहले हमें इस बात को देख लेना चाहिए कि क्या उसके बारे में बाइबल सिखाती है? पौलुस १

थिस्सलुनीकियों ५:२१ में कहता है कि "सब बातों को परखकर देखो।" और यही आज हमें करने की आवश्यकता है।

कितनी ही बार हमने इस बात को लोगों को कहते सुना है, कि यदि हमारे मन साफ़ हैं तो सब कुछ ठीक है और इससे कुछ फ़र्क नहीं पड़ता कि हम क्या मानते और क्या विश्वास करते हैं। यदि यह बात सच है, तो फिर यीशु ने यह क्यों कहा था कि "ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।" (मत्ती १५:६)। या फिर यूहन्ना ने १ यूहन्ना ४:२ में यह क्यों कहा था,"हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं, क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता जगत में निकल खड़े हुए।" फिर यूहन्ना, २ यूहन्ना ६ में यह क्यों कहता है, "जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नही रहता , उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी।"

यदि उपरोक्त शिक्षा सही है, तो क्या कोई शिक्षा गलत या झूठी हो सकती है? यदि ऐसा होता तो फिर क्या कोई भी शिक्षा धार्मिक दृष्टिकोण से गलत होती? इस बात से वास्तव में बड़ा अंतर पड़ता है कि हम क्या मानते और क्या विश्वास करते हैं। पौलुस ने २ तीमुथियुस ४:२,३ में इस प्रकार कहा था, "कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, और डांट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे"

प्रेरित पौलुस एक मसीही बनने से पहले मूसा की पुरानी व्यवस्था पर पूरा भरोसा रखता था, किन्तु, प्रेरितों के कामों की पुस्तक में, एक मसीही बनने के बाद, वह स्वयं कहता है, कि वह मसीह के बिना अपने पापों में खोया हुआ था। ऐसे ही कुरनेलियुस भी एक बड़ा ही धार्मिक और भक्त जन था, पर वह एक गलत रास्ते पर था। देखिए प्रेरितों १० तथा ११ अध्याय। मनुष्य को अपने पापों से उद्धार पाने के लिये केवल धार्मिक होना ही पर्याप्त नहीं है, पर उसे यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि परमेश्वर

की इच्छा क्या है, और फिर, जो परमेश्वर चाहता है उसे वह करना चाहिए।

घमन्ड का पाप

घमन्ड तथा आत्म–सम्मान में अंतर है, घमन्ड जबकि पाप है, आत्म–सम्मान आवश्यक है। आत्म–सम्मान की शिक्षा हमें बाइबल से भी मिलती है। प्रेरित पौलुस कहता है, इफिसियों ५:२६ में, कि किसी ने कभी भी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, बरन हर एक व्यक्ति उसका पालन–पोषन करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।" हमें अपने शरीर का ध्यान रखना चाहिए। मसीहीयत देह तथा आत्मा दोनों का धर्म है। १ तीमुथियुस ४:१२ में पौलुस ने कहा था, "कोई तेरी जवानी को तुच्छ न समझने पाए।" हम चाहे जवान हों या बूढ़े, हमें अपना आदर करना चाहिए।

परन्तु हमें घमन्ड से बचना चाहिए। कई प्रकार से लोग घमन्ड करते हैं। कुछ लोगों को अपनी जाति या गोत्र पर घमन्ड होता है। वे अपने आप को अन्य लोगों से ऊंचा या बड़ा समझते हैं। किन्तु पतरस ने कहा था, प्रेरितों १०:३४,३५ में, "कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, बरन हर जाति में जो उस से डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।" फिर कुछ लोग अपने आप को बड़ा बुद्धिमान समझकर घमन्ड करते हैं। किन्तु यिर्मयाह ९:२३ में लिखा है कि,"बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमन्ड न करे।" दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो यह कहकर घमन्ड करते हैं कि हम अधिक पढ़े लिखे तो नहीं हैं किन्तु फिर भी हम ने यह या वह काम किया है। अनेक ऐसे हैं जिन्हें अपने धन पर घमन्ड होता है। परन्तु व्यवस्थाविवरण ८:१८ में हम यूं पढ़ते हैं: "परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने का सामर्थ्य देता है।" इसके विपरीत आचर्यपूर्ण बात यह भी है कि कुछ लोगों को अपने

निर्धन होने का अभिमान होता है! वे प्रत्येक अमीर आदमी की निन्दा करते हैं और सोचते हैं कि हर एक धनी मनुष्य बुरा इन्सान है ।

ऐसे ही यह भी देखने में आता है, कि कुछ लोग अपनी धार्मिकता पर घमन्ड करते हैं । वे उस फरीसी की तरह सोचते हैं, जिसके बारे में हम लूका १८:११ में पढ़कर देखते हैं कि वह कहता था,"कि हे परमेवर मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि मैं और मनुष्य की तरह नहीं हूं ।" यहां गलती इस बात में है कि वह व्यक्ति अपनी अच्छाई की तुलना अन्य लोगों की अच्छाईयों के साथ कर रहा था:, जबकि हमें अपनी तुलना मसीह के जीवन के साथ करके देखनी चाहिए ।

किन्तु, घमन्ड का परिणाम अच्छा नहीं निकलता है । घमन्ड के कारण मनुष्य को असफलता का सामना करना पड़ता है । नीतिवचन १६:१८ में लिखा है कि "विनाश से पहले गर्व, और ठोकर खाने से पहले घमन्ड होता है ।" अहंकार से, नीतिवचन १३:१० में लिखा है, लड़ाई–झगड़े ही होते हैं । और इसी प्रकार नीतिवचन ११:२ में लेखक कहता है कि "जब अभिमान होता है, तब अपमान भी होता है ।"

यदि हम अपने जीवन का आदर्श यीशु मसीह को बना लें तो हम घमन्ड के पाप से छुटकारा पा सकते हैं । जैसा कि फिलिप्पियों २:५–८ में हम पढ़ते हैं ।

झूठ का पाप

किसी न किसी कारणवश, ऐसा प्रतीत होता है, लोगों ने अनेक पापों को दो हिस्सों में बांट रखा है – बड़े पाप तथा छोटे पाप । बड़े पाप जैसे हत्या, व्याभिचार, मदिरापान और निन्दा । किन्तु, झूठ बोलना एक छोटा सा पाप समझा जाता है । नीतिवचन ६:१६–१९ में सात ऐसी वस्तुओं का वर्णन मिलता है जिनसे परमेश्वर घृणा करता है । वहां १७वीं आयत में लिखा है, कि परमेश्वर "झूठ

बोलनेवाली जीभ" से भी घृणा करता है। सो जबकि परमेश्वर को झूठ से घृणा है, तो इस से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि झूठ बोलनेवालों को भी नरक का सामना करना पड़ेगा। इसलिये, झूठ बोलना कोई छोटा पाप नहीं है।

झूठी बातों को गढ़ना पाप है। झूठ बोलनेवालों की गिनती शैतान के साथ की जाती है। यूहन्ना ८:४४ में शैतान को "झूठ का पिता" कहकर सम्बोधित किया गया है। हमें कभी भी झूठ का साहरा नहीं लेना चाहिए। आधा सच भी एक प्रकार का झूठ है। कई लोग झूठ बोलने के ऐसे आदी हो चुके हैं कि उनकी बात पर कभी भी भरोसा नहीं किया जा सकता।

जैसे झूठ का गढ़ना पाप है, वैसे ही झूठ पर विश्वास करना भी पाप है। मरकुस ४:२४ में यीशु ने कहा था, कि "चौकस रहो, कि क्या सुनते हो।" क्या हम ध्यान से सुनते हैं और परखकर देखते हैं कि जिसे हम सुनते हैं? हम झूठी बात सुन सकते हैं। लैव्यव्यवस्था १९:१६ में लिखा है कि "लुतरा बनके अपने लोगों में न फिरा करना।" फिर यीशु ने, मत्ती १२:३६, ३७ में इस प्रकार कहा था: "कि जो–जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी ही बातों के कारण दोषी ठहराया जाएगा।" ये शब्द वास्त्व में बड़े ही विचारणीय हैं।

फिर हम गलतियों ६:७ में पढ़ते हैं, कि पौलुस कहता है,"क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।" हम हनन्याह और सफ़ीरा के विषय में, प्रेरितों ५ अध्याय में से पढ़ते हैं कि झूठ बोलने के कारण वे दोनों तत्काल मर गए थे। इससे हम यह सीखते हैं कि परमश्‍ेवर झूठ को किस प्रकार देखता है। एक झूठे व्यक्ति को अंत में क्या मिलेगा इसके विषय में हम यूं पढ़ते हैं, "और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है।"

क्या आप झूठी बातें गढ़ते हैं, या झूठी बातों को मानते हैं या झूठी बातें फैलाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर देते समय अपने आप से और परमश्‍ेवर से झूठ बोलने का प्रयत्न न करें। क्योंकि परमेश्वर झूठ बोलनेवाली जीभ से घृणा करता है।

व्यभिचार का पाप

व्यभिचार का अर्थ है, बिना विवाह के स्त्री और पुरुष के बीच ऐसा सम्बन्ध होना जो एक वैवाहिक पुरुष और स्त्री के बीच में होता है । यह परमेश्वर ने ठहराया है कि एक पुरुष और एक स्त्री विवाह के बन्धन में एक होकर एक साथ रहें और आपस में एक दूसरे के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखें । परन्तु परमेश्वर के इस नियम के विरुद्ध आज अनेकों लोग, विशेषकर नौजवान, बिना विवाह किए एक दूसरे के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखते हैं । यही व्यभिचार है ।

प्रत्येक पाप की तरह व्यभिचार का पाप भी सबसे पहले मनुष्य के मन में पैदा होता है । पवित्र बाइबल में लिखा है, "धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे ।" (मत्ती ५:८) । १ कुरिन्थियों ६:१३ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "परन्तु देह व्यभिचार के लिये नहीं पर परमेश्वर के लिये है ।" इसके आगे वहां अठाहरवें पद में लिखा है, कि "व्यभिचार से बचे रहो ।" गलतियों ५:१९ में पौलुस ने इस प्रकार कहा था, "शरीर के काम तो प्रकट हैं अर्थात व्यभिचार गन्दे काम लुचपन. . . " और फिर आगे वह कहता है कि, "ऐसे–ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ।" इसी प्रकार इफिसियों ५:५ में वह कहता है,"क्योंकि तुम जानते हो कि किसी व्यभिचारी या अशुद्ध जन या लोभी मनुष्य की . . . परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं ।" १ थिस्सलुनीकियों ५:२२ में यूं लिखा है: "सब प्रकार की बुराई से बचे रहो ।" इब्रानियों १३:४ में हम यह पढ़ते हैं, "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे, क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा ।"

इस प्रकार की बातों से बचने के लिये यह आवश्यक है कि हम इस बात का ध्यान रखें कि हम किस प्रकार के मनोरंजन के साधनों को अपनाते हैं, कैसा सहित्य पढ़ते हैं, किस प्रकार की

फ़िल्में देखते हैं और हमारी संगति किस तरह के लोगों के साथ है। क्योंकि बाइबल में एक जगह पर यूं लिखा है: "धोखा न खाना बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।" (१ कुरिन्थियों १५:३३)।

चरित्रनाशक पहनावा

प्रत्येक स्थान पर आज स्त्रियों के प्रति अपराधों की संख्या में बढ़ौतरी हो रही है। छेड़–छाड़ और बलात्कार जैसे अपराध आज हर एक जगह पर बहुतायत से हो रहे हैं। मेरे विचार में ऐसे अपराधों का विशेष कारण आज स्त्रियों का पहनावा है। स्त्रियां कदाचित इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं देती हैं कि उनके ऐसे पहनावे से जिससे शरीर के अंगों का प्रदर्शन होता है, पुरूषों और विशेषकर नौजवानों में गन्दी भावनाएं पैदा होती हैं। नौजवान लड़कियां इस बात से शायद परिचित नहीं है कि उनके गलत पहनावे का कैसा बुरा प्रभाव नवयुवकों पर पड़ता है और उन्हें गलत कामों के लिये प्रेरित करता है। अब मैं आप का ध्यान इस सम्बन्ध में कुछ ऐसी बातों पर दिलाना चाहता हूं जिनका वर्णन हमें बाइबल में मिलता है, और यदि हम नरक में जाने से बचना चाहते हैं तो अवश्य ही इन बातों को हम सारी गम्भीरता से लेंगे।

प्रभु यीशु मसीह ने मत्ती ५:२७,२८ में इस प्रकार कहा था कि, "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, व्यभिचार न करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका।" यहां से हमें यह शिक्षा मिलती है, कि हम अपने मनों में भी व्यभिचार कर सकते हैं। और मैं यहां से यह भी सीखता हूं कि वह स्त्री जिसके उत्तेजक पहनावे ने किसी को उस के साथ व्यभिचार करने को उकसाया हो, वह भी उतनी ही दोषी होती है व्यभिचार की जितना कि वह व्यक्ति जो उसके साथ व्यभिचार करता है।

जो लोग गन्दा, शरीरों के अंगों का प्रदर्शन करनेवाला,

भड़कानेवाला पहनावा पहनते हैं उन्हें ये शब्द ध्यान से सुनने चाहिए, प्रभु यीशु ने लूका १७:१,२ में इस प्रकार कहा था,"हो नहीं सकता कि ठोकरें न लगें, परन्तु हाय उस मनुष्य पर जिसके कारण वे आती हैं. . . .उसके लिये यह भला होता कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वह समुद्र में डाल दिया जाता ।" क्या हम अपने व्यवहार से, और विशेषकर अपने पहनावे से किसी के लिये ठोकर का कारण बनते हैं?

सच्चाई यह है, कि जिन स्त्रियों के साथ अपराध और बलात्कार की घटनाएं होती हैं, उनमें से अनेकों ऐसी हैं जो उन बातों के लिये स्वयं ज़िम्मेदार हैं । उन्होंने वही काटा है, जो उन्होंने स्वयं बोया था । पौलुस ने १ तीमुथियुस २:९ में इस प्रकार कहा था, "वैसे ही स्त्रियां भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारें ।" जिस प्रकार स्त्रियों को अपने पहनावे का ध्यान रखना चाहिए, वैसे ही माता–पिता को भी चाहिए कि वे अपने बच्चों के पहनावे का ध्यान रखें कि वह सांसारिक न हो, परन्तु ऐसा हो जैसा कि परमेश्वर के लोगों को सोहता है ।

विनाशकारी स्वार्थ

स्वार्थ का अर्थ है, केवल अपनी ही चिन्ता करना, दूसरों के हित की परवाह न करना और जीवन केवल अपने ही लिये निर्वाह करना । स्वार्थीपन एक पाप है जिसके प्रति हम सबको सावधान रहना चाहिए । प्रेरित पौलुस ने २ तीमुथियुस ३:१,२ में कहा था कि "यह जान लो कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे, क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी . . . .होंगे ।" क्या हम आज ऐसे ही दिनों में नहीं रह रहे हैं?

स्वार्थी होना बड़ा ही ख़तरनाक है, क्योंकि इससे अनेक अन्य पापों का सम्बन्ध होता है । १ राजा २१ अध्याय में हम अहाब के विषय में पढ़ते हैं कि उसने किस प्रकार नाबोत की दाख की बारी प्राप्त करनी चाहीए और फिर किस प्रकार उसकी पत्नी ने

अहाब की स्वार्थपूर्ण इच्छा को पूरा करने के लिये नाबोत की हत्या करवा दी थी। सो किसी स्वार्थ को पूरा करने के लिये मनुष्य कभी–कभी हत्या करने से भी नहीं चूकता है। स्वार्थ अभिमान को भी जन्म देता है। यूहन्ना की तीसरी पत्री के ९ पद में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "मैं ने मन्डली को कुछ लिखा था पर दियुत्रिफेस जो उन में बड़ा बनना चाहता है हमें ग्रहण नहीं करता।" यहां हम एक ऐसे व्यक्ति के बारे में देख रहे हैं जो अपने को बड़ा समझता था। वह इतना स्वार्थी था कि उसे अपने से अच्छा और बड़ा कोई दूसर नज़र ही नहीं अता था। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं? स्वार्थीपन का सम्बन्ध परमेश्वर की कलीसिया की सभाओं में न आने से भी है। जबकि इब्रानियों १०:२५ में यूं लिखा है कि "एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है. . . ." कुछ मसीही लोगों का व्यवहार रविवार के दिन ऐसा होता है कि वे कहते हैं कि "सुबह मेरी नींद नहीं खुलती" "छुट्टी का एक ही तो दिन होता है और काम भी तो करने होते हैं!" इत्यादि।

स्वार्थ के साथ लोभ का भी सम्बन्ध है। एक बार एक नवयुवक यीशु के पास यह जानने के लिये आया था कि अनन्त जीवन पाने के लिये मैं क्या करुं? लिखा है, मत्ती १९:२१ में कि "यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा अपना माल बेचकर कंगालों को दे और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा और तू आकर मेरे पीछे हो ले।" और अगले पद में लिखा है, कि यह सुनकर वह जवान उदास होकर वहां से चला गया, क्योंकि वह बड़ा धनी था। ऐसे ही, स्वार्थीपन का सम्बन्ध अनेक अन्य बुरी बातों से भी है। जैसे, "मैं शराब पीता हूं, क्योंकि यह मुझे अच्छी लगती है।" या "मैं सिगरेट पीता हूं क्योंकि उसमें मुझे मज़ा आता है।" पर क्या ऐसी चीज़ों से दूसरों का नुकसान नहीं होता है? पौलुस ने रोमियों ६:१२ में इस प्रकार कहा था "इसलिये पाप तुम्हारे मरनहार शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो।" स्वार्थ से बचिए। यह एक ऐसी वस्तु है जो न केवल मनुष्य को शारीरिक रुप से ही हानी पहुंचाती है, पर आत्मा को भी नाश करती है।

शराब और विनाश

यूं तो कोई भी नशा करना हानिकारक तथा विनाशकारी होता है, पर शराब का नशा करना बड़ा ही आम और सर्वव्यापि है। जो लोग शराब पीते हैं, वे यह कहकर उसे सही ठहराने का प्रयत्न करते हैं, कि बाइबल में कहा गया है कि पियक्कड़ मत बनो, और क्योंकि कभी–कभार पीने से कोई पियक्कड़ नहीं कहलाता इसलिये कभी–कभी पी लेना कोई बुरी बात नहीं है।

कुछ और बढ़कर शराब पीनेवाले लोग यहां तक भी कहते हैं कि यीशु ने स्वयं भी शराब बनाई थी एक विवाह के अवसर पर, जिसके लिये वे यूहन्ना दो अध्याय की घटना का उदाहरण देते हैं। परन्तु क्या यह सच है? यूहन्ना २ अध्याय में लिखा है कि यीशु ने दाखरस बनाया था – दाख, यानि अंगूर का रस। यदि आप सेब का या अनार का रस निकालकर पी लें तो क्या आप शराब पी लेंगे? और फिर यदि यीशु ने वास्तव में पहले से भी अच्छी शराब बनाई होती, जैसे कि लिखा है कि उसने पहले से भी अच्छा दाखरस बनाया था, तो उस विवाह में लोगों का क्या हाल हुआ होता! क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? क्या आप यीशु को एक महा–नशीली शराब बनाने के लिये दोषी ठहराना चाहते हैं?

फिर, कुछ लोग, शराब का नशा सही ठहराने के लिये बाइबल के एक और हवाले को देकर कहते हैं, कि पौलुस ने तीमुथियुस को एक जगह लिखकर यूं कहा था कि,"भविष्य में केवल जल ही का पीनेवाला न रह, पर अपने पेट के और अपने बार–बार बीमार होने के कारण थोड़ा–थोड़ा दाखरस भी काम में लाया कर।" (१ तीमुथियुस ५:२३)। अब यहां हम क्या देखते हैं? यहां एक विशेष परिस्थिति है। पेट की बीमारी और बार–बार बीमार पड़ना। तीमुथियुस प्रचार करने को बाहर निकला था, पानी ख़राब था, जिसके कारण वह बार–बार बीमार पड़ जाता था। जब हम

बीमार पड़ते हैं तो दवाई लेते हैं, और कोई–कोई दवाई पर "पोइज़न" अर्थात "विष" लिखा होता है। क्या जब हम अच्छे होते हैं तब भी दवाईयां लेते रहते हैं? और फिर दाखरस का अर्थ शराब तो नहीं होता। दाख–रस को शराब में परिवर्तित किया जा सकता है, पर दाखरस यदि ताज़ा हो तो उसे शराब नहीं कहा जा सकता।

यदि कोई शराब पीकर गाड़ी चलाता है और पकड़ा जाता है और अगर उसके खून में ०.०५% भी दारु पाई जाती है तो संसार के कई देशों में उस व्यक्ति का चालान किया जाता है। शराब से दिमाग खुलता नहीं है, पर बन्द हो जाता है। यदि १% से भी कम दारु शरीर में चली जाए तो वह भी प्रभाव–रहित नहीं रहती। सो यदि १% से भी कम दारु इन्सान के दिमाग को नुकसान पहुंचाती है – तो फिर नशा कब चढ़ता है? कितने बाल उगने पर आप दाढ़ी को दाढ़ी बोलेंगे? नशा है, चाहे वह कितनी भी मात्रा में क्यों न हो। आज पृथ्वी पर दानियेल जैसे लोगों की आवश्यकता है जिस के विषय में हम यूं पढ़ते हैं, दानियेल १:८ में कि उसने अपने मन में ठान लिया था, कि वह राजा का भोजन खाकर, और उसके पीने का दाखमधु पीकर अपने आप को अपवित्र नहीं करेगा।

विनाशकारी आलस

आलस को बाइबल में सुस्ती और निकम्मापन कहकर भी सम्बोधित किया गया है। आलसी लोग सुस्त होते हैं। देर से सोकर उठते हैं, बारह बजे काम करना आरम्भ करते हैं, और एक बजे खाने की छुट्टी लेना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में वे कुछ करना ही नहीं चाहते।

आरम्भ में जब परमेश्वर ने आदम को बनाया था, तो लिखा है कि "परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की बाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे।" (उत्पत्ति

२:१५) । पौलुस २ थिस्सलुनीकियों ३:१० में कहता है "कि यदि कोई काम करना न चाहे, तो खाने भी न पाए ।" बाइबल में इस प्रकार के लोगों की कड़ी निन्दा की गई है जो काम नहीं करते और अपना और अपने परिवार का खर्चा नहीं उठाते । इसी संदर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि अनेकों लोग आत्मिक रुप से भी आलसी हैं ।

बहुत से ऐसे मसीही हैं जो कुछ काम नहीं करना चाहते । वे गाने तो गाते हैं कि "काम कर रात जल्दी आती ..." पर स्वयं कुछ नहीं करते हैं । मत्ती ९:३७ में लिखा है, कि यीशु ने अपने चेलों से कहा था, कि "पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं ।" मजदूर थोड़े हैं क्योंकि लोग काम करना नहीं चाहते । कुछ लोग व्यस्त तो रहते हैं, पर काम के बिना । वे अपना कीमती समय व्यर्थ की बातों में लगाते हैं । गप्पे मारने में, टी.वी. देखने में, रेडियो सुनने में, जासूसी तथा अन्य नौवलें पढ़ने में, इधर–उधर घूमने फिरने में । शारीरिक कामों को करने के लिये उनके पास समय है, पर आत्मिक कामों के लिये उनके पास समय ही नहीं हैं ! वे कहते हैं,"टाईम नहीं है ।" वे शारीरिक रुप से तो स्वस्थ हो सकते हैं, पर आत्मिक रुप से बीमार और मरे हुए हैं ।

आलसी लोग अपने जीवन को व्यर्थ में गवाँ रहे हैं । मत्ती के २५ अध्याय में हम एक आलसी दास की कहानी पढ़ते हैं । उसे कुछ दिया गया था, जिसका उसने इस्तेमाल नहीं किया था, और इस कारण उसके स्वामी ने उस से कहा था "कि हे दुष्ट और आलसी दास ।" और फिर उसने कहा था, कि "इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहाँ रोना और दांत पीसना होगा ।" (मत्ती २५:३०) ।

आलसी लोग एक व्यर्थ का बोझ हैं अपने परिवार के ऊपर, अपने समाज के ऊपर, और अपने देश के ऊपर । प्रभु यीशु ने एक जगह अपने चेलों से यूँ कहा था कि,"अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो, कि वे कटनी के लिये पक चुके हैं । और काटनेवाला मजदूरी पाता, और अनन्त जीवन के लिये फल बटोरता है ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर आनन्द करें ।" (यूहन्ना ४:३५,३६) । परमेश्वर ने आपको यह जीवन दिया है और

आपको इस पृथ्वी पर रहने का अवसर दिया है, वह चाहता है कि आप ऐसे–ऐसे काम करें जिनसे इस पृथ्वी पर के लोगों के बीच में उसकी महिमा हो । आप अपने जीवन और समय का क्या उपयोग कर रहे हैं ?

गन्दा साहित्य

आज जबकि अधिक से अधिक लोग पढ़ना लिखना सीख रहे हैं, और यह एक बड़ी ही अच्छी बात है । दूसरी ओर हम देखते हैं, कि आज इस प्रकार का साहित्य बहुत ही अधिक छापा जा रहा है जो लोगों के मनों पर, और विशेषकर नौजवानों पर बड़ा ही बुरा प्रभाव डाल रहा है । दुकानों पर ही नहीं, लेकिन आम–तौर पर सड़कों पर भी इस प्रकार का गन्दा साहित्य बेचा जा रहा है, जिसको पढ़ने से मनुष्य के मन में बुरी शारीरिक भावनाएं पैदा होने लगती है । कई बार इस प्रकार का साहित्य तस्वीरों के साथ छापा जाता है । इस प्रकार का साहित्य वास्तव में बड़ा ही हानिकारक है । इसको पढ़कर नौजवान लोग अकसर ऐसे–ऐसे शारीरकि गन्दे और घिनौने काम करने लगते हैं जो न केवल उनके शरीर और चरित्र को ही हानि पहुंचाते हैं पर उन्हें आत्मिक रुप से भी विनाश की ओर ले जाते हैं । गलतियों ५:१६ में बाइबल का लेखक इस प्रकार कहता है, "शरीर के काम तो प्रकट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन. . . डाह ,मतवालापन, लीलाक्रीड़ा और इनके जैसे और–और काम हैं, इनके विषय में मैं तुमको पहले से कह देता हूं, जैसे पहले कह भी चुका हूं कि ऐसे–ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे ।" पौलुस ने जैसे तिमुथियुस को लिखकर १ तीमुथियुस ५:२२ में, कहा था,"अपने आप को पवित्र बनाए रख," आज भी ये शब्द नौजवानों के लिये आवश्यक और ध्यान देने योग्य हैं ।

यीशु ने मत्ती ५:८ में कहा था,"धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे ।" नीतिवचन ४:२३ में लिखा है

"सबसे अधिक अपने मन की रक्षा कर क्योंकि जीवन का मूलस्त्रोत वही है।" यदि हमारे मन शुद्ध होंगे तो हमारे जीवन भी शुद्ध होंगे। परन्तु यदि हमारे मन गन्दे होंगे तो निश्चय ही हमारे जीवन भी गन्दे होंगे। गन्दा साहित्य मनुष्य के मन को गन्दा करता है। १ पतरस २:११ में लिखा है, कि "सांसारिक अभिलाषाओं से जो आत्मा से युद्ध करती हैं बचे रहो।" १ कुरिन्थियों ६:१३ में लिखा है,"परन्तु देह व्यभिचार के लिये नहीं, बरन प्रभु के लिये है।" और १८ पद में वह इस प्रकार कहता है, "व्यभिचार से बचे रहो जितने और पाप मनुष्य करता है वे देह के बाहर हैं, परन्तु व्यभिचार करने वाला अपनी ही देह के विरुद्ध पाप करता है।"

आज कलीसियाओं को चाहिए, कि वे अपने नौजवानों को इस विषय में शिक्षा दें। माता–पिता को चाहिए, कि वे इस बात के प्रति सतर्क रहें कि उनके घर के भीतर इस प्रकार का कोई साहित्य न आने पाए जो उनके बच्चों के मनों पर बुरा प्रभाव छोड़ सकता है।

मदिरापान

संसार में सबसे अधिक दुर्घटनाओं में मरनेवालों की संख्या में वे लोग होते हैं जो प्रतिदिन ऐसी दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं जिनका सम्बन्ध मदिरापान से होता है। अनेकों लोग आज केवल इसलिये गरीब और निर्धन हैं क्योंकि वे शराब पीना नहीं छोड़ सकते। शराब पीने के लिए लोग चोरीयां भी करते हैं। और शराब एक ऐसी चीज़ है जो इन्सान को अनेकों अन्य पाप करने को प्रेरित करती है। बड़ी–बड़ी दुर्घटनाएं, बीमारीयां, आफ़तें लोगों पर केवल शराब के ही कारण आती हैं। वह जान–लेवा तो है ही, पर प्राण अर्थात आत्मा का भी विनाश करती है। देखें कि बाइबल इसके बारे में क्या कहती है?

बाइबल में नीतिवचन २०:१ में इस प्रकार लिखा है,"दाखमधु ठट्ठा करनेवाला और मदिरा हल्ला मचानेवाली है, जो कोई उसके

कारण चूक करता है, वह बुद्धिमान नहीं ।" लेखक आगे नीतिवचन २३:३१,३२ में फिर यूं कहता है, "जब दाखमधु लाल दिखाई देती है और कटोरे में उसका सुंदर रंग होता है और जब वह धार के साथ उन्डेली जाती है तब उसको न देखना । क्योंकि अंत में वह सर्प की नाई डसती है, और करैत के समान काटती है ।" हबक्कूक २:१५ का लेखक कहता है, "हाय उस पर जो अपने पड़ोसी को मदिरा पिलाता है ।" यशायाह २८:७ में लिखा है ,"ये भी दाखमधु के कारण डगमगाते और मदिरा से लड़खड़ाते हैं, याजक और नबी भी मदिरा के कारण डगमगाते हैं, दाखमधु ने उनको भुला दिया है, वे मदिरा के कारण लड़खड़ाते हैं और दर्शन पाते हुए भटक जाते हैं, और न्याय में भूल करते हैं ।" लूका २१:३४ में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "इसलिये सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएं और वह दिन तुम पर फन्दे की नाई अचानक आ पड़े ।" पौलुस इफिसियों ५:१८ में इस प्रकार कहता है, "और दाखरस से मतवाले न बनो क्योंकि इससे लुचपन होता है पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ ।

शराब मनुष्य के मन और मस्तिष्क पर बुरा असर छोड़ती है । चरित्र को बिगाड़ती है । और देह तथा आत्मा दोनों को हानि पहुंचाती है । बाइबल में गलतियों ६:७,८ में यूं लिखा है,"धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा । क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है , वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा और जो आत्मा के लिये बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा ।" परमश्वेर के ठहराए नियमों का उल्लंघन करके हम उस से नहीं बच सकते ।

जुआ और विनाश

"जुआ" का अर्थ है "पैसे के साथ खेलना, कुछ भी दांव पर

लगाना, किसी दूसरे की चीज़ को अपने लिये जीतना ।" "जुआ" शब्द बाइबल में कहीं पर नहीं लिखा है । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जुआ खेलना सही है । ऐसे अनेकों शब्द और भी हैं जैसे आत्म–हत्या, बलात्कार और तस्करी, जिन्हें बाइबल में नहीं पाया जाता, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि ये काम सही हैं । क्योंकि बाइबल में कुछे ऐसे सिद्धातों का वर्णन हमें मिलता है जो ऐसे–ऐसे कामों की कड़ी निन्दा करते हैं ।

जहां तक जुआ खेलने का प्रश्न है, यह एक ऐसा खेल है जो सदियो से किसी न किसी रुप में खेला जा रहा है और हर एक प्रकार की वस्तुएं जुआ खेलने के लिये इस्तेमाल में लाई जाती हैं, जैसे कांच, पत्थर, कौड़िएं और ताश । रोम के लोग घोड़ों की दोड़ लगवाकर जुआ खेलते थे । ऐसे ही अन्य पशु–पक्षियों को भी विभिन्न रुप से जुआ खेलने के लिये उपयोग में लाया जाता रहा है ।

जब यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था तो रोमी सिपाही क्रूस के पास उसके कपड़ों को पाने के लिये जुआ खेल रहे थे । मत्ती २७:३५ में हम इस प्रकार पढ़ते है: "तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया और चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिये ।" आज संसार भर में करोड़ों रुपए प्रतिदिन जुआ खेलने में लगा दिये जाते हैं । बाइबल इस सम्बन्ध में क्या कहती है?

सबसे पहले, हम देखते हैं, कि जुआ लोभ से प्रेरित होकर खेला जाता है । लोभ की बाइबल में एक पाप कहकर निन्दा की गई है । लोभ का अभिप्राय है किसी दूसरे की वस्तु को लालच करके, उसके लिये कुछ भी करके अपने लिये प्राप्त करने की इच्छा रखना । लूका १२:१५ में प्रभु यीशु ने इस प्रकार कहा था, "चौकस रहो और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो: क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पति की बहुतायत से नहीं होता ।" और इफिसियों ५:५ में लिखा है कि "लोभी मनुष्य की मसीह और परमेश्वर के राज्य में मीरास नहीं ।"

फिर, जुआ खेलनेवाले बिना कुछ करके किसी वस्तु को प्राप्त करना चाहते हैं? जबकि बाइबल हमें यह शिक्षा देती है, " कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए ।" (२

थिस्सलुनीकियों ३:१०) । और १ तीमुथियुस ५:८ में लिखा है, "पर यदि कोई अपनों की और निज करके अपने घराने की चिन्ता न करे, तो वह विश्वास से मुकर गया है और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है ।" जो लोग जुआ खेलते हैं वे अकसर काम–धन्धा छोड़कर अधिक ध्यान जुए पर देते हैं– क्योंकि वे सोचते हैं कि उस से वे आसानी से बिना परिश्रम किए, कमाई कर लेंगे । कितने ही लोगों के जीवन, घर, परिवार और भविष्य जुआ खेलते–खेलते बरबाद हो चुके हैं । यह एक बुरी आदत है । और इससे भी भयानक बात यह है, कि अनेक लोग आज अपनी आत्माओं के साथ भी जुआ खेल रहे हैं । वे उसे भी दांव पर लगा रहे हैं, केवल कुछ एक सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये !

ईर्ष्या का पाप

इर्ष्या करने का अर्थ है, दूसरों को देखकर जलना या कुढ़ना, विशेषकर उस समय जबकि अन्य लोग खुशहाल हों । या उस समय प्रसन्नता का अनुभव करना जबकि अन्य लोगों के ऊपर किसी प्रकार का कष्ट आ जाए । अन्य बुराईयों की तरह, यह पाप भी मनुष्य के मन में ही उत्पन्न होता है । प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी रुप में इस भयानक पाप का शिकार है । इस सम्बन्ध में बाइबल क्या शिक्षा देती है? आईए, देखें ।

अनेकों बार मसीही लोग भी अधर्मियों को फलता–फूलता देखकर ईर्ष्या करते हैं । कितनी ही बार उन्हें यंह कहता सुना गया है, कि जबकि हम ग़रीबी और तंगहाली में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, दूसरी ओर जो लोग परमेश्वर से दूर हैं, जो हमारी तरह उसके भक्त नहीं है और जो अधर्म पर चल रहे हैं, उनके पास सब कुछ है, और वे संतुष्ट दिखाई पड़ते हैं । दाऊद ने भजन ७३:१,२ में इस प्रकार कहा था, "मेरे डग तो उखड़ना चाहते थे, मेरे डग फिसलने पर ही थे । क्योंकि जब मैं दुष्टों को

कुशल देखता था, तब उन घमन्डियों के विषय डाह करता था ।" आज भी लोग दाऊद की तरह सोचते हैं । किन्तु तौभी यदि सच्चाई बयान की जाए तो हकीकत यह है कि अधर्मियों के ठाट–बाट ऊपर से तो भले ही बड़े अच्छे दीख पड़ते हैं पर भीतर से उनके जीवन खाली और निराशापूर्ण हैं । उनके जीवन भीतर से सूखे पत्तों की तरह हैं । उनके पास इस जीवन के बाद के लिये कोई आशा नहीं है । उनकी सम्पत्ति की शक्ति केवल पृथ्वी तक ही सीमित हैं । जब वे इस जगत से जाएंगे तो उनके पास कुछ भी नहीं होगा ।

परमेश्वर के लोग होते हुए भी यदि हम प्रत्येक परिस्थिति में संतुष्ट न रहकर ईष्या करने लगें तो क्या हम परमेश्वर पर संदेह करते हैं? रोमियों ८:२८ में लिखा है,"कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है, अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए गए हैं ।" नीतिवचन २३:१७ में लिखा है,"तू पापियों के विषय मन में डाह न करना ।" जब लोग यीशु को पीलातुस के सामने लाए थे तो लिखा है कि "वह जानता था कि महायाजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था ।" डाह करना सर्वव्यापि है । न केवल राजनीति तथा व्यापार में बल्कि कलीसिया में भी डाह पाई जाती है !

याकूब ३:१६ में लिखा है,"इसलिये कि जहां डाह और विरोध होता है, वहां बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म भी होता है ।" रोमियों १२:१५ में लिखा है,"आनन्द करनेवालों के साथ आनन्द करो ।" किन्तु जो लोग दूसरों के प्रति अपने मन में डाह तथा ईष्या रखते हैं वे ऐसा नहीं कर सकते ।

मनुष्य की ईर्ष्या के कारण अनेकों निरापराध लोगों को कष्ट उठाने पड़ते हैं । जिस प्रकार हम युसुफ और उसके भाईयों के बारे में पढ़ते हैं कि उन्होंने डाह करके अपने भाई को बेच दिया था । (उत्पति ३७:११) । और कैन ने ईर्ष्या करके अपने भाई की हत्या कर दी थी । (उत्पत्ति ४:१–८) । नीतिवचन १४:३० में लिखा है कि "मन के जलने से हड्डियां भी जल जाती हैं । गलतियों ५:१९–२१ के अनुसार जो लोग ईर्ष्या तथा डाह करते हैं वे परमेश्वर

के राज्य में कदापि प्रवेश नहीं करेंगे ।

क्या इस पुस्तक को पढ़कर आपके मन में कोई परिवर्तन आया है ? क्या आप अपना जीवन परमेश्वर की इच्छानुसार चलकर व्यतीत करने का निश्चय कर चुके हैं ? हमें जानकर प्रसन्नता होगी ।

CHURCH OF CHRIST
POST BOX 3815
NEW DELHI–110049